शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मनेन्द्रगढ़, जिला : एम.सी.बी.

विवेकसुधा

प्राचार्य, संरक्षक एवं प्रधान संपादक

प्रो. श्राबनी चक्रवर्ती

परामर्श/सलाहकार समिति

डॉ. सरोजबाला श्याग बिश्नोई

डॉ. रश्मि तिवारी

संपादक

डॉ. सुशील कुमार तिवारी

संपादन सहयोग

डॉ. अरूणिमा दत्ता

डॉ. नसीमा बेगम अंसारी

श्रीमती स्मृति अग्रवाल

तकनीकी सहयोग

श्री थनेन्द्र कश्यप

श्री अभिषेक सिंह

वार्ड क्र. 14, झगराखंड रोड, मनेन्द्रगढ़
जिला - एम.सी.बी., पिनकोड - 497442

www.vnpgc.in

vnpgcin@gmail.com

रमेन डेका
Ramen Deka

राजभवन, रायपुर
Rajbhavan, Raipur

राज्यपाल, छत्तीसगढ़
Governor, Chhattisgarh

क्र./127/पीआरओ/रास/2025
रायपुर, दिनांक 08 सितम्बर 2025

—: संदेश :—



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंन्द्रगढ़–चिरमिरी–भरतपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका **''विवेक सुधा''** का प्रकाशन किया जा रहा है।

स्वामी विवेकानंद जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि जीवन को पूर्ण और चरित्रवान बनाना है। मुझे आशा है कि इस विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए महाविद्यालय की यह पत्रिका विद्यार्थियों में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा, विचारों में नवीनता और जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण का संचार करेगी।

वार्षिक पत्रिका ''विवेक सुधा'' के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

रमेन डेका

(रमेन डेका)

विष्णु देव साय
मुख्यमंत्री

Vishnu Deo Sai
CHIEF MINISTER

मंत्रालय, महानदी भवन, नया रायपुर
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोन : +91 (771) 2221000, 2221001

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Nava Raipur Atal Nagar,
Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
Do.No. 2120.. Date 14.09.2025

-: संदेश :-



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेंद्रगढ़ द्वारा वार्षिक पत्रिका 'विवेक सुधा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका संस्थान की शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा रचनात्मक गतिविधियों, उपलब्धियों और भावी योजनाओं का दर्पण होती है। इस वार्षिक प्रतियोगिता से प्राध्यापकों और विद्यार्थियों की रचनाधर्मिता को नया आयाम मिलेगा।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए विचारों की अभिव्यक्ति और ज्ञान कौशल को प्रदर्शित करने का जरिया बनेगी, साथ ही जिज्ञासु पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और उपयोगी साबित होगी।

महाविद्यालय की निरंतर प्रगति और वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(विष्णु देव साय)

टंक राम वर्मा
TANK RAM VERMA

मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन,
पुनर्वास, उच्च शिक्षा विभाग
Minister of
Revenue and Disaster Management,
Rehabilitation, Higher Education Department
Govt. of Chhattisgarh

अर्द्धशास. पत्र क्र. 233/20.25 दिनांक 31.10.25

—: शुभकामना संदेश :—



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि, **शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़, जिला—मनेन्द्रगढ़—चिरमिरी—भरतपुर (छ.ग.)** की वार्षिक पत्रिका **विवेक सुधा** का प्रकाशन किया जा रहा है। निरंतर पत्रिकाओं का प्रकाशन विद्यार्थियों में लेखन एवं पठन—पाठन के प्रति रूचि को बढ़ाता है।

यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सांस्कृतिक, साहित्य रूचियों की अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में विकसित होगा। महाविद्यालय में पत्रिका का प्रकाशन स्वागत योग्य कदम है।

विवेक सुधा के प्रकाशन से महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी एवं इसके माध्यम से ज्ञान—अर्जन, साहित्य रूचि एवं सकारात्मक विचारों से छात्र/छात्राएं लाभान्वित होंगें।

वार्षिक पत्रिका विवेक सुधा के प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूं।

मंगलकामनाएं ....

(टंक राम वर्मा)

निवास-बी-5/10, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.) पिन कोड-492001, दूरभाष- 0771-2991022
कार्यालय-कक्ष क्र. एम-1/17, मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर, अटल नगर (छ.ग.) 492002, दूरभाष- 0771-2510527, 0771-2221221

श्याम बिहारी जायसवाल
Shyam Bihari Jaiswal
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
Minister
Government of Chhattisgarh

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,
चिकित्सा शिक्षा, पिछड़ा वर्ग एवं
अल्पसंख्यक विकास एवं
बीस सूत्रीय कार्यान्वयन विभाग
Department of Public Health and
Family Welfare, Medical Education,
Backward Class and Minority
Development and Twenty Point
Program Implementation

अर्द्ध. शास. पत्र क्र. 8202
दिनांक 13/10/25



—: शुभकामना संदेश :—

मुझे जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेंद्रगढ़ द्वारा वार्षिक पत्रिका 'विवेक–सुधा' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच है, बल्कि संस्थान की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का सजीव दस्तावेज भी है।

इस प्रकार की प्रकाशन गतिविधियां विद्यार्थियों में साहित्य, कला एवं शोध के प्रति अभिरूचि विकसित करती हैं और उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि 'विवेक–सुधा' का यह अंक महाविद्यालय की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाएगा और सभी को उत्कृष्टता की दिशा में प्रेरित करेगा।

मैं पत्रिका से जुड़ें सभी प्राध्यापकों, विद्यार्थियों एवं संपादकीय समिति को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं तथा इस प्रयास की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

(श्याम बिहारी जायसवाल)

निवास– ग्राम–रतनपुर, पोस्ट–तामडांड, तह.–खड़गवां जिला–एमसीबी, (छ.ग.) पिन कोड–497449
Office- M-02/11, Mantralaya, Mahanadi Bhawan, Naya Raipur (C.G.) Telephone-0771-2221109
Res.- C-2, Shankar Nagar, Canal Linking Road, Raipur (C.G.) and M-9 Naya Raipur, Telephone-0771-2436555,
Email- shyambihari.jaiswal@cg.gov.in

प्रो. प्रेम प्रकाश सिंह
पीएचडी (भारत), पोस्ट डॉक (अमेरिका)
कुलपति
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा
अम्बिकापुर (छ.ग.) पिन- 497001, भारत
ईमेल: drppsingh1962@gmail.com
मोबाइल:+91-9399125951

Prof. Prem Prakash Singh
PhD (Bharat), Post Doc (USA)
Vice-Chancellor
Sant Gahira Guru Vishwavidyalaya Sarguja
Ambikapur (C.G.) Pin- 497001, Bharat
Email: drppsingh1962@gmail.com
Mobile:+91-9399125951

शुभकामना संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ जिला–एमसीबी (छ.ग.) अपनी वार्षिक पत्रिका "विवेक–सुधा" का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि प्राणीशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरूणिमा दत्ता ने यूनिवर्सिटी ऑफ पुत्रा, कुआलालंपुर, मलेशिया में आयोजित अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी BICOHAS-25 में भाग लेकर शोधपत्र प्रस्तुत किया एवं महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक श्री सुशील कुमार तिवारी एवं रसायनशास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक श्रीमती प्रभा राज ने पी.एचडी. की उपाधि हासिल किये। महाविद्यालय के शिक्षकों का शोध की दिशा में सक्रीयता से उन्मुख रहना महाविद्यालय का सशक्तिकरण है।

महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं का खेल स्पर्धाओं में विश्वविद्यालय एवं राज्य स्तर पर विजय हासिल करना भी एक गौरवशाली उपलब्धि है। महाविद्यालय का छात्र नेवल सिंह का उत्तर प्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय स्तर कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेना महाविद्यालय की उपलब्धि है।

मुझे आशा है वार्षिक पत्रिका "विवेक–सुधा" महाविद्यालय परिवार में निहित रचनात्मक विशिष्टता को सामने लाते हुये उन्हें वैचारिक और भावनात्मक सृजन प्रक्रिया से जोड़ कर महाविद्यालय समुदाय में गौरव और अपनेपन को बढ़ावा देने में सहायक बनेगा। महाविद्यालय के अकादमिक सक्रियता, शोध, सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों सहित नवाचार भरे कार्यकलापों को प्रसारित एवं प्रचारित करने में "विवेक–सुधा" एक महत्वपूर्ण आधार बनेगा एवं पत्रिका में उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री के समावेश से महाविद्यालय परिवार एवं समाज लाभान्वित होगा।

वार्षिक पत्रिका "विवेक–सुधा" के सफल प्रकाशन हेतु शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय परिवार को मैं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से बहुत–बहुत शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ।

प्रेम प्रकाश सिंह

(प्रो. प्रेम प्रकाश सिंह)
कुलपति

डॉ. एस.पी. त्रिपाठी
कुलसचिव
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा
अम्बिकापुर (छ.ग.) पिन- 497001 (भारत)
ईमेल: shardaptripathi010565@gmail.com
मोबाइल:+91-7000528577, फोन: 07774-222790/91

Dr. S.P. Tripathi
Registrar
Sant Gahira Guru Vishwavidyalaya, Sarguja
Ambikapur (C.G.) Pin- 497001 (india)
Email: shardaptripathi010565@gmail.com
Mobile:+91-7000528577,Phone:07774-222790/91



शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ (जिला–मनेन्द्रगढ़–चिरमिरी–भरतपुर) की महाविद्यालय के वार्षिक पत्रिका **"विवेक सुधा"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका, छात्रों की सृजानात्मकता और विचारों की प्रतिबिंब होती है। इस पत्रिका के माध्यम से उभरती हुई साहित्यिक प्रतिभा को एक मंच मिले और यह सभी पाठकों के लिये प्रेरणादायक साबित हो साथ ही छात्रों के उज्जवल भविष्य और उनकी लेखनी को नई उड़ान मिले। यही मेरी हार्दिक शुभकामनाएं है।

मैं महाविद्यालय परिवार के समस्त छात्र–छात्राओं, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को वार्षिक पत्रिका **"विवेक सुधा"** के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

कुलसचिव
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा
अम्बिकापुर (छ.ग.)

भारतीय जनता पार्टी

वीरेन्द्र सिंह राणा

अध्यक्ष

नगर पंचायत नई लेदरी, मनेन्द्रगढ़, जिला-एम.सी.बी.



-: शुभकामना संदेश :-

प्रिय विद्यार्थियों एवं आदरणीय आचार्य प्रवरगण

शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़, जिला-एम.सी.बी. की वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं । यह पत्रिका केवल पन्नों का संकलन नहीं, बल्कि हमारे संस्थान की शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सृजनात्मक उपलब्धियों का दर्पण है। इसमें निहित प्रत्येक शब्द, प्रत्येक विचार और हर रचना विद्यार्थियों के परिश्रम, कल्पनाशक्ति और उनकी जीवंत सोच का प्रमाण है।

आज के युग में ज्ञान और कौशल दोनों ही सफलता की चाबियां हैं। यह पत्रिका विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने, अभिव्यक्ति को निखारने तथा साहित्य, कला एवं सामाजिक संवेदना के प्रति रूचि विकसित करने का एक मूल्यवान मंच प्रदान करती है। मुझे हर्ष है कि हमारे विद्यार्थी न केवल शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं वरन् विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान स्थापित कर समाज का गौरव बढ़ा रहे हैं ।

इस पत्रिका के माध्यम से मैं सभी विद्यार्थियों से आग्रह करता हूं कि वे अपने सपनों की उड़ान जारी रखें, चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करें और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ निरंतर आगे बढ़ते रहें । परिश्रम, अनुशासन, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति समर्पण ही सफलता के मूल मंत्र है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी भविष्य में उज्जवल विचारों, नेतृत्व क्षमता और मानवता के मूल्यों से समाज का मार्गदर्शन करेंगें।

अंत में, पत्रिका की संपादकीय टीम, लेखकों, कलाकारों तथा सहयोगियों का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने अथक परिश्रम और समर्पण द्वारा इस पत्रिका को उत्कृष्ट रूप प्रदान किया। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप सभी का भविष्य उज्जवल हो और हमारे महाविद्यालय का नाम यूं ही ऊंचाईयों पर पहुंचता रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

वीरेन्द्र सिंह राणा

प्राचार्य की कलम से....





'जहाँ चाह, वहाँ राह'- यह केवल एक प्रेरणादायक कहावत नहीं, बल्कि जीवन का गूढ़ सत्य है। जब मन में अटूट संकल्प, लक्ष्य के प्रति समर्पण और निरंतर प्रयास का भाव होता है, तो कोई भी मार्ग कठिन नहीं लगता। यह सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि सामूहिक प्रयासों और संस्थागत विकास के लिए भी उतना ही सार्थक और प्रभावशाली है। शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ इसका जीवंत उदाहरण है। सुदूर कोयलांचल एवं ग्रामीण अंचल में स्थित यह शिक्षण संस्थान, सीमित संसाधनों में भी उत्कृष्टता की ऊँचाइयों को स्पर्श कर रहा है। यह महाविद्यालय वर्ष 1973 में एक छोटे से प्रयास के रूप में आरंभ हुआ था, परंतु आज यह शिक्षा के क्षेत्र में एक समर्पित, सशक्त और समृद्ध वटवृक्ष के रूप में विकसित हो चुका है। इसकी छांव में हजारों छात्र-छात्राएं शिक्षा, अनुशासन और संस्कार का पोषण प्राप्त कर रहे हैं।

वर्तमान में महाविद्यालय में कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं कंप्यूटर संकायों के अंतर्गत स्नातक स्तर पर बी.ए., बी.काम., बी.एससी. एवं बीसीए पाठ्यक्रम संचालित हैं। इसके साथ ही रसायनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य (एम.काम.) तथा पीजीडीसीए जैसे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के माध्यम से उच्च शिक्षा की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है। यह महाविद्यालय केवल पठन-पाठन तक सीमित नहीं है, बल्कि लाइब्रेरी, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, खेल मैदान, कम्प्यूटर लैब तथा बालक एवं बालिका छात्रावास जैसी व्यवस्थाएं विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करती हैं। यहां विद्यार्थियों को शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ संस्कार, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक चेतना के भी विविध अवसर प्रदान किए जाते हैं। महाविद्यालय के एनएसएस, रेडक्रास एवं रेडरिबन क्लब के माध्यम से सामाजिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की भागीदारी, वार्षिक खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक गतिविधियाँ ये सभी हमारे महाविद्यालय की जीवंतता के प्रमाण हैं।

प्रिय विद्यार्थियों, आप देश और समाज के भविष्य हैं। यदि आप लक्ष्य के प्रति सचेत होकर निरंतर अभ्यास करते रहें, तो कोई भी बाधा आपकी सफलता को रोक नहीं सकती। महाविद्यालय में जो सुविधाएं,

पुस्तकें, प्राध्यापकों का मार्गदर्शन तथा विविध गतिविधियों के मंच उपलब्ध हैं, वे आपको एक सशक्त, संवेदनशील एवं सक्षम नागरिक बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, आवश्यकता है तो केवल आपके संकल्प और अनुशासन की।

महाविद्यालय के प्राध्यापकगण एवं अतिथि व्याख्यातागण ज्ञान के वाहक हैं तथा उनके विचार, व्यवहार एवं शिक्षण की गुणवत्ता विद्यार्थियों के भविष्य की दिशा तय करती है। आज जब शिक्षा का परिदृश्य तकनीकी, मूल्यनिष्ठ और नवाचारों से युक्त हो रहा है तब ऐसे समय में प्राध्यापकों से अपेक्षा है कि आप सभी विद्यार्थियों के साथ संवाद करें, उन्हें प्रेरित करें और शिक्षण के साथ-साथ उनके जीवन मूल्य भी गढ़ें। आपकी उत्साहवर्धक भूमिका ही इस संस्थान को नई ऊँचाईयों पर ले जाएगी।

महाविद्यालय के कर्मचारीगण, इस संस्था के मेरुदंड हैं। आपकी कर्मठता, अनुशासन, सहयोग और समयबद्ध कार्यशैली ही संस्थागत प्रबंधन की नींव है। आपका प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग महाविद्यालय की हर गतिविधि में महत्वपूर्ण होता है। जब संस्थान का प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह विद्यार्थी हो, शिक्षक हो या कर्मचारी यह ठान ले कि मुझे आगे बढ़ना है और मुझे अपने संस्थान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाना है, तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं रह जाती। सच तो यह है कि जीवन में कोई भी परिस्थिति अंतिम नहीं होती। हर कठिनाई में एक अवसर छिपा होता है और हर रुकावट एक सीख देती है। आज आवश्यकता है कि हम सभी- विद्यार्थी, शिक्षक, अतिथि व्याख्याता एवं कर्मचारीगण मिलकर एक साझी प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ें, जहाँ हर प्रयास शिक्षा को एक नई ऊँचाई दे, हर सहयोग संस्था को सशक्त बनाए और हर विचार संस्थान को नूतन दिशा प्रदान करे।

वार्षिक पत्रिका 'विवेक-सुधा' हमारे विद्यार्थियों की प्रतिभा, सृजनात्मकता और विचारशीलता का एक सजीव दस्तावेज है। यह केवल लेखन, कला और अभिव्यक्ति का संकलन नहीं, बल्कि 'जहाँ चाह वहाँ राह' की भावना का जीवन्त प्रमाण है, जो विद्यार्थियों के सतत प्रयासों और उपलब्धियों के रूप में उभरकर सामने आता है। यह पत्रिका दर्शाती है कि जब लक्ष्य स्पष्ट हो और प्रयास ईमानदार हों, तो हर कठिनाई का समाधान संभव है। आइए, हम सभी सकारात्मक सोच, आपसी सहयोग और निरंतर प्रयासों के साथ इस महाविद्यालय को ज्ञान, चरित्र और उत्कृष्टता का आदर्श केंद्र बनाने के संकल्प को साकार करें और यही इस वार्षिक पत्रिका की मूल भावना का सच्चा सम्मान भी है।

प्रो. श्राबनी चक्रवर्ती
प्राचार्य,
शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़

संपादकीय





महाविद्यालयीन जीवन मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण की वह उपजाऊ भूमि है, जहाँ शिक्षा का बीज बोया जाता है और संस्कारों का सिंचन होता है। यहाँ अर्जित ज्ञान, अनुभव और मूल्य न केवल व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान में भी सहायक होते हैं। इसी क्रम में महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'विवेक सुधा' मात्र एक परंपरा नहीं बल्कि विचारों, आकांक्षाओं और सृजनात्मक ऊर्जा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। 'विवेक' अर्थात् चिंतनशीलता और 'सुधा' यानी ज्ञानामृत, दोनों का संगम जीवन को सार्थक बनाता है। यह पत्रिका विद्यार्थियों, शिक्षकों और सहयोगियों की बौद्धिक प्रतिभा, साहित्यिक संवेदना और रचनात्मकता का जीवंत दस्तावेज़ है। आज जब शिक्षा को केवल डिग्री या रोजगार का साधन मानने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, तब 'विवेक सुधा' शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य' विवेकशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीयता को पुनः स्मरण कराती है।

महाविद्यालयीन परिसर केवल अध्ययन का केंद्र नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य और परंपरा का संगम है। यहाँ आयोजित राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, व्याख्यानमाला, नुक्कड़ नाट्य मंचन, वाद-विवाद, निबंध प्रतियोगिता, लोकनृत्य, कला प्रदर्शनी, पुस्तक मेला, स्वदेशी उत्पाद एवं खादी वस्त्र मेला जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को उनकी जड़ों से जोड़ती हैं। ये कार्यक्रम केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और जीवन मूल्यों के वाहक हैं। जब विद्यार्थी रचनात्मक अभिव्यक्ति करते हैं, तो वे अपनी मिट्टी की गंध, भाषा की शक्ति और विचारों की स्वतंत्रता को आत्मसात करते हैं। वर्तमान युग ज्ञान-विस्फोट और तकनीकी प्रगति का युग है, ऐसे में परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना एक चुनौती है। 'विवेक सुधा' इस चुनौती का समाधान प्रस्तुत करती है और यह साहित्य, कला, विज्ञान, तकनीक और नवाचार को एक साथ स्थान देती है। विद्यार्थियों द्वारा किए गए 'परियोजना कार्य, शोध लेख और सामाजिक पहलें' यहाँ प्रकाशित होकर प्रेरणा का स्रोत बनती हैं। इससे एक ऐसा शैक्षिक वातावरण निर्मित होता है, जहाँ विद्यार्थी केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक बनते हैं।

महाविद्यालय सामाजिक चेतना का भी मुख्य केंद्र है। इसलिए 'विवेक सुधा' विद्यार्थियों को 'पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, स्वच्छता, डिजिटल साक्षरता, ग्रामीण विकास, राष्ट्रीय एकता और वैश्विक शांति' जैसे विषयों पर चिंतन और लेखन के लिए प्रेरित करती है। यह उन्हें संवेदनशील, जागरूक एवं उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर करती है। पत्रिका का प्रकाशन सामूहिक प्रयास का परिणाम है– संपादकीय समिति, प्राध्यापकगण, विद्यार्थी और मुद्रण सहयोगी सब मिलकर इसे साकार करते हैं। यह सहयोग उस सामाजिक एकता का प्रतीक है, जो राष्ट्र निर्माण की नींव है। आज जब दुनिया पर्यावरणीय संकट, नैतिक पतन और भौतिकता की दौड़ से जूझ रही है, तब शिक्षा और संस्कृति ही स्थायी समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। हमारा महाविद्यालय और 'विवेक सुधा' इन्हीं मूल्यों को संजोए हुए भविष्य की दिशा दिखा रहे हैं।

अंततः, 'विवेक सुधा' केवल एक वार्षिक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे महाविद्यालय की 'जीवंत आत्मकथा' है– जो विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, शिक्षकों के मार्गदर्शन और सामूहिक सृजन की भावना का प्रतीक है। आशा है यह अंक पाठकों एवं विद्यार्थियों में न केवल आनंद, बल्कि विचारों की नई चेतना भी जागृत करेगा।

संपादक
डॉ. सुशील कुमार तिवारी
सहायक प्राध्यापक हिंदी



अनुक्रमणिका

स.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्रमांक
1	महाविद्यालय एक परिचय....	-	1
2	Internal Quality Assurance Cell (IQAC)	Dr. Arunima Datta	2
3	Department of English : An Overview	Dr. Shrabani Chakravorty	5
4	प्रतिवेदन : हिन्दी विभाग	डॉ. सुशील कुमार तिवारी डॉ. रिंकी तिवारी	7
5	प्रतिवेदन : गृहविज्ञान विभाग - आयोजन एवं उपलब्धियां	डॉ. सरोजबाला श्याग विश्नोई	8
6	प्रतिवेदन : इतिहास विभाग	श्री कमलेश पटेल	9
7	प्रतिवेदन : संगीत विभाग	डॉ. रश्मि तिवारी	10
8	प्रतिवेदन : समाजशास्त्र विभाग	श्री सुशील कुमार छात्रे, श्री रामनिवास गुप्ता, श्री शिवकुमार	11
9	प्रतिवेदन : राजनीति विज्ञान विभाग	श्रीमती अनुपा तिग्गा, श्री पुष्पराज सिंह, श्री प्रकाश दास मानिकपुरी	12
10	प्रतिवेदन : अर्थशास्त्र विभाग	डॉ. नसीमा बेगम अंसारी	13
11	Department of Chemistry : An Overview	Dr. Prabha Raj, Dr. Renu Prajapati, Mr. Shivanand Saket	14
12	Department of Zoology : An Overview	Dr. Arunima Datta	15
13	Department of Botany	Ms. Alpana Rani Xalxo	17
14	प्रतिवेदन : भौतिक शास्त्र विभाग	श्री सुनील कुमार गुप्ता	18
15	प्रतिवेदन : गणित विभाग	श्री रंजीतमणी सतनामी	19
16	प्रतिवेदन : भू-विज्ञान विभाग	श्री भीमसेन भगत	19
17	प्रतिवेदन : वाणिज्य संकाय	श्रीमती स्मृति अग्रवाल, डॉ. रामजी गर्ग, श्री शुभम गोयल	21
18	प्रतिवेदन : कम्प्यूटर विभाग	श्री थनेन्द्र कश्यप, श्री अभिषेक सिंह	23
19	प्रतिवेदन : ग्रंथालय विभाग	श्री शरणजीत कुजूर	25
20	प्रतिवेदन : क्रीड़ा विभाग	श्री सुमित कुमार तिवारी, श्री भीमसेन भगत	26
21	प्रतिवेदन : राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)	श्री रंजीतमनी सतनामी	27
22	प्रतिवेदन : रेड रिबन क्लब	डॉ. सरोजबाला श्याग बिश्नोई	28
23	प्रतिवेदन : ईको क्लब	डॉ. सरोजबाला श्याग बिश्नोई	29
24	संस्कार और संस्कृति	डॉ. श्राबनी चक्रवर्ती	30
25	हिन्दी दिवस और मुख्य अतिथि गाथा	डॉ. सुशील कुमार तिवारी	31
26	शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत	डॉ. रश्मि तिवारी	33
27	योग, ध्यान, सुदर्शन क्रिया और सात्विक आहार : स्वस्थ ...	डॉ. सरोजबला श्याग बिश्नोई	35
28	महिला उत्पीड़न तथा यौन शोषण एवं जाति भेदभाव	डॉ. प्रभा राज	37
29	कविता	श्री भीमसेन भगत	38
30	राजनीति में युवाओं की भागीदारी : एक अहम भूमिका	श्रीमती अनुपा तिग्गा	39
31	पुस्तकालय के महत्व	श्री शरणजीत कुजूर	40
32	बेरोजगारी एवं आर्थिक विकास : एक संबंधपरक अध्ययन	डॉ. नसीमा बेगम अंसारी	41

33	'खुशियाँ : आत्मविकास की पहली सीढ़ी'	श्रीमती स्मृति अग्रवाल	42
34	भारतीय फिल्में और इतिहास	श्री कमलेश पटेल	43
35	कॉलेज के अकादमिक जगत में एआई (AI) का बढ़ता प्रभाव	श्री सुशील कुमार छात्रे	45
36	मनेन्द्रगढ़ की सुंदरता	श्री सुशील कुमार छात्रे	46
37	मानव और प्रकृति	श्री रामनिवास गुप्ता	47
38	सफलता की कुंजी	डॉ. रेनू प्रजापति	48
39	Quantum Computers : The Next Big Thing in Tech!	Mr. Sunil Kumar Gupta	48
40	भारत में साइबर अपराध और महिलाएं	श्री अभिषेक कुमार सिंह	49
41	समस्या का समाधान	डॉ. रामजी गर्ग	50
42	कोयला उत्पादक क्षेत्रों का जीवन पर प्रभाव	श्री शिवानन्द साकेत	51
43	WARRIOR	Prof. Shrabani Chakravorty	53
44	Rohan's Dream Trip	Ms. Smriti Agrawal	55
45	The Brave Teacher and the Pandemic Challenge	Mr. Abhishek Kumar Singh	55
46	ANTARAAGNI : THE FIRE WITHIN	Dr. Arunima Datta	56
47	The Joy of Giving] My Garden of Happiness	Prof. Shrabani Chakravorty	59
48	AI-Generated Beauty : The Risk of Generating …..	Mr. Thanendra Kashyap	60
49	Those Who Truly Understand Her, Find Their …..	Smita Tiwari	61
50	Veer Birsa Munda	Kumar Chandrashekhar	62
51	Life is so Unpredictable	Aditi Agrawal	63
52	सपने	ज्ञान नंदिनी	64
53	Ethics and Values in Education : Beyond Number….	Shreya Tiwari	65
54	जिम्मेदारियां	Isha devangan	65
55	The School Memories and College Lessons	Aditya Kumbhkar	66
56	I, YOU AND HE	Shivam Mishra	67
57	मूर्तिकार का अहंकार	खुशी परवीन	68
58	अंधकार से उजाला तक	अंकिता दाहिया	68
59	कलम से कर्म तक	रोहित राज गुप्ता	69
60	छत्तीसगढ़ में मिलेट्स उत्पादन के विकास संभावनाएँ	दिशा लकड़ा	70
61	माँ	अभिमन्यु कोल	70
62	सीखो, सपनों की उड़ान, मैं और मेरा सफर	अन्नू यादव	71
63	एम.सी.बी. जिले के अंतर्गत कृषि विकास की समस्याएं	पुष्पा सिंह	72
64	विज्ञान	छबिलाल	72
65	मन को मोहने वाले मनमोहन	स्नेहिता पाण्डेय	73
66	मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर की प्रकृति और वर्तमान	रजनी सिंह	74
67	मेरी सपनों की उड़ान	नीतू	74
68	बनास की बाहों में - रामदहा	रामप्रताप	75
69	दीपावली	सतीश पांडे	75
70	मेजर ध्यानचंद	जया शर्मा	76
71	हे माधव...	शिवम् डी.एन. मिश्रा	76
72	भारत की बेटी	मो. नजमूल अंसारी	77

महाविद्यालय एक परिचय....

छत्तीसगढ़ के कोयलांचल एवं सुदूर ग्रामीण अंचल में स्थित शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ शिक्षा का एक प्रखर दीपस्तंभ है, जो ज्ञान की ज्योति से हजारों युवाओं के जीवन को आलोकित कर रहा है। वर्ष 1973 में शिक्षा के प्रति समर्पित कुछ जागरूक एवं दूरदर्शी लोगों के प्रयास से इस महाविद्यालय की स्थापना एक छोटे बीज के रूप में हुई थी, जो आज एक विशाल वटवृक्ष बनकर शिक्षा, शोध और व्यक्तित्व निर्माण के क्षेत्र में अपनी छाया से असंख्य विद्यार्थियों को शीतलता प्रदान कर रहा है।

शैक्षणिक संरचना एवं उपलब्धियाँ - राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रात्यायन परिषद् (NAAC) से 'बी ग्रेड' मान्यता प्राप्त इस महाविद्यालय में वर्तमान में 1900 नियमित तथा 600 स्वाध्यायी छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। यह महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले का एक प्रमुख एवं अग्रणी उच्च शिक्षण संस्थान है, जहां स्नातक स्तर पर कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं कंप्यूटर संकायों में बी.ए., बी.एससी., बी.कॉम. तथा बी.सी.ए. की कक्षाएं नियमित रूप से संचालित की जाती हैं। स्नातकोत्तर स्तर पर रसायनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य (एम.कॉम.) और पीजीडीसीए जैसे महत्वपूर्ण विषयों की उच्च शिक्षा प्रदान की जा रही है। इन विषयों का पठन-पाठन अनुभवी एवं विद्वान प्राध्यापकों के सान्निध्य में संपन्न होता है, जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में विशेष योगदान देते हैं।

पुस्तकालय एवं अध्ययन संसाधन - महाविद्यालय में एक समृद्ध पुस्तकालय की व्यवस्था है, जहां सभी संकायों की पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ विविध संदर्भ ग्रंथ, शोध-पत्रिकाएं एवं प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित सामग्री भी उपलब्ध है। यहां अध्ययनरत छात्र-छात्राएं एवं प्राध्यापक दोनों ही पुस्तकालय की सेवाओं से लाभान्वित होते हैं।

शैक्षणेत्तर गतिविधियाँ - केवल पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा ही नहीं, अपितु व्यक्तित्व विकास एवं समाज सेवा के क्षेत्र में भी यह महाविद्यालय सक्रिय भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.), रेडक्रॉस, रेडरिबन क्लब आदि के माध्यम से छात्रों को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलता है। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, सामाजिक संवेदनशीलता तथा अनुशासन का विकास करती हैं।

आवासीय सुविधा - महाविद्यालय में छात्रावास सुविधा भी उपलब्ध है। जहां बालकों के लिए 24 सीटों वाला छात्रावास है, वहीं बालिकाओं के लिए 100 सीटों की क्षमता वाला आधुनिक छात्रावास संचालित है, जो उनके सुरक्षित और सुविधा-सम्पन्न निवास हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है।

शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ न केवल शिक्षा का एक प्रतिष्ठित केंद्र है, बल्कि यह क्षेत्रीय युवाओं के सपनों को आकार देने वाला एक सशक्त माध्यम भी है। यह महाविद्यालय अपने बुनियादी मूल्यों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समर्पित शैक्षिक वातावरण तथा नैतिकता आधारित शिक्षण प्रणाली के माध्यम से 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भावना को मूर्त रूप दे रहा है।

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

Dr. Arunima Datta
Coordinator IQAC

The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) of Govt. Vivekanand P.G. College, Manendragarh functions as the principal coordinating body for all quality-related initiatives and continuous improvement processes within the institution. Established in accordance with the guidelines of the National Assessment and Accreditation Council (NAAC) and the directives of the Department of Higher Education, Government of Chhattisgarh, the IQAC plays a crucial role in institutional planning, execution, and enhancement of academic and administrative quality.

The IQAC acts as a catalyst for quality assurance and sustenance, ensuring that every academic, administrative, and co-curricular activity aligns with the institution's vision of imparting holistic, inclusive, and value-based education. It strives to integrate contemporary educational practices, strengthen academic accountability, and enhance institutional efficiency through systematic quality management.

By fostering a culture of continuous improvement, the IQAC ensures that the college remains responsive to evolving educational paradigms, national policy frameworks, and community needs. The cell promotes innovation, participatory governance, and transparency across all institutional processes.

Key Areas of Significance

- **Academic Excellence:**

  The IQAC maintains academic rigor by establishing quality benchmarks in teaching, learning, and evaluation. It encourages curriculum enrichment, pedagogical innovation, and faculty development to ensure excellence in higher education.

- **Research and Professional Growth:**

  The cell nurtures a research-oriented environment by organizing seminars, workshops, and academic collaborations. It motivates faculty members and students to engage in research, publications, and interdisciplinary discourse.

- **Student-Centric Initiatives:**

  The IQAC ensures the effective implementation of student support mechanisms, including career counseling, placement drives, internships, and value-added programs. Initiatives such as free CUET-PG coaching and financial literacy seminars reflect the college's commitment to student empowerment and employability.

- **Environmental and Social Responsibility:**

  Under the guidance of the IQAC, the institution conducts green, energy, carbon, and environmental audits every session. Initiatives such as plantation drives, cleanliness campaigns, and awareness

programs under Beti Bachao Beti Padhao and SVEEP cultivate environmental stewardship and social awareness among students.

- **Collaborations and Skill Development:**

  The IQAC facilitates strategic linkages with industries and organizations to promote professional growth and experiential learning. The signing of a three-year MoU with the PRISM Group underscores the institution's commitment to integrating education with employability.

- **Quality Monitoring and Documentation:**

  The IQAC systematically documents academic and administrative activities, prepares the Annual Quality Assurance Report (AQAR), and ensures compliance with NAAC standards. This systematic approach reinforces transparency, accountability, and evidence-based decision-making.

Through its sustained efforts, the IQAC has significantly contributed to enhancing the academic reputation, operational efficiency, and community engagement of Govt. Vivekanand P.G. College, Manendragarh. It has nurtured a pervasive culture of quality consciousness and institutional excellence across all dimensions of institutional functioning.

The IQAC continues to guide the institution in realizing its vision of developing responsible citizens equipped with knowledge, skills, and ethical values—thereby contributing meaningfully to society and national development.

Major Initiatives under IQAC (Sessions 2024–2025 and 2025–2026)

1. Plantation Drive (16 November 2024): Under the initiative 'Ek Paudha Mahavidyalay Ke Naam', a plantation drive was organized to promote environmental consciousness and sustainable practices among students and staff.
2. Seminar on Financial Literacy (05 October 2024): A seminar in collaboration with SV Wealth Partners aimed to enhance students' financial awareness, covering topics such as financial planning, investment management, and responsible economic behavior.
3. Cleanliness Drive (2024–2025): The institution actively participated in the national campaign 'Cleanliness is Service' through regular cleanliness drives to instill values of hygiene, sanitation, and civic responsibility.
4. Veer Baal Diwas Celebration (26 December 2024): The college commemorated Veer Baal Diwas to honor the martyrdom of Baba Zorawar Singh and Baba Fateh Singh, promoting values of courage, integrity, and patriotism.
5. Free CUET-PG Coaching (Sessions 2024–2025 and 2025–2026): To ensure equitable access to higher education, the college offered free CUET-PG coaching classes for undergraduate students, fostering academic advancement and inclusivity.
6. Student Internship under PM Internship Program (Session 2024–2025): A student of M.Com was

selected for an internship at NTPC under the Prime Minister's Internship Program, exemplifying the institution's commitment to experiential learning.

7. One-Day National Seminar on Research Methodologies (04 April 2025): A national seminar titled 'Research Methodologies: Quantitative and Qualitative Approach' was organized to strengthen research competencies among faculty, scholars, and students.
8. Celebration of 25 Years of Chhattisgarh State Formation (2025): The institution celebrated 25 years of Chhattisgarh's formation through academic and cultural programs, highlighting the state's achievements and heritage.
9. Memorandum of Understanding (MoU) with PRISM Group (Session 2025): The college signed a three-year MoU with the PRISM Group to promote skill development, industry–academia collaboration, and student placement opportunities.
10. Placement Drive by PRISM Group (Session 2025): In continuation of the MoU, a placement drive was conducted to provide students with exposure to employment opportunities in reputed organizations.
11. SVEEP Action Plan Activities (08–13 October 2025): Under the Systematic Voters' Education and Electoral Participation (SVEEP) initiative, week-long activities such as group discussions, essay writing, street plays, and slogan competitions were conducted to encourage civic engagement and democratic participation.
12. Awareness Drive on HIV/AIDS (23 September 2025): As part of Beti Bachao Beti Padhao Yojana, an awareness drive on HIV/AIDS was organized to promote health education, gender sensitivity, and preventive healthcare awareness.
13. Institutional Audits (Each Academic Session): The college conducts annual Green, Energy, Carbon, and Environmental Audits to assess sustainability performance and reinforce eco-friendly practices on campus.

Through these sustained and strategic efforts, Govt. Vivekanand P.G. College, Manendragarh continues to uphold the values of academic integrity, environmental stewardship, and social commitment. The IQAC remains steadfast in its mission to foster a culture of excellence, innovation, and continuous improvement across all spheres of institutional functioning.

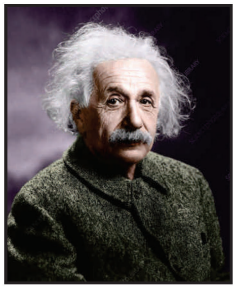

**"I have no special talent.
I am only passionately curious."**

- Albert Einstein

Department of English : An Overview

Dr. Shrabani Chakravorty
Professor & Head - Dept. of English

Vision

Fostering academic growth, personal development, and a life-long love of learning in students, creating a safe, engaging and supportive environment that promotes critical thinking, confidence, and resilience.

Established in the year 1973, Govt. Vivekanand P.G. College, Manendragarh is the only Govt. co-educational, post -graduate institute in the city. An institution known by the faculty and students it has. Department of English is privileged to have the Principal as their faculty who is committed to play a vital role in shaping the education, personality and behavior of the students through a holistic approach, to create an academic atmosphere through her writing skills like Poetry, short stories, Research Papers and speaking skills as a Resource Person, recitation and oratory.

Students' Strength: English Language Session 2025 -26

B.A. III year – 193	B.Sc. year -162	
B.Com.III year – 135	B.C.A. III year - 12	
AEC – English language –		
B. A.III Semester – 132	B.Sc. I Semester- 150	B.C.A. I Semester – 14
DSC / GE English Literature		
DSC I Semester - 04	G.E. I Semester – 07	

Activities in the Department

1. Organised One Day Poster Competition for the Students of English Language and Literature.
2. Organised Creative Writing Competition for The Students of DSC & GE English Literature.
3. Organised a One Day Lecture on "Role of Journalism and Mass Communication in Social, Economical and Cultural Scenario" on 03.01.25 by Mr. Shivam Mishra, working as a Producer in DD News Channel, New Delhi for the flagship show Voice of Global South.
4. Organised One Day Online National Symposium on Research Methodology: Quantitative and Qualitative Approach on 04.04.25
5. Organised One Day State Level Seminar on State Rajat Jayanti Samaroh on the topic : 25 Years of Chhattisgarh: Vikas Yatra aur Bhavish ki Sambhavnaye." on 10.09.25

Achievement of the Students –

1. **Shivam Mishra** – after graduation in English Literature qualified CUET exam and pursued P.G. Diploma in English Journalism from IIMS, Dhenkanal, Odisha. He has published several bylines for the newspaper The Hindu. Presently working as an Producer, Script Writer for DD News Channel, New Delhi for the flagship show Voice of Global South.

2. **Shreya Tiwari** – after graduation in English Literature she is pursuing L.L.B from Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur at, Disha College and working as an Intern at the District Court, Raipur, and Civil Court Manendragarh.
3. Many students of English Language and literature have contributed their creative writing for the eMagazine of the college.

Achievements of the Faculty –

Dr. Shrabani Chakravorty was a Research Supervisor from 2015 – 2023 from Atal Bihari Vajpayee University, Bilaspur with a teaching experience in UG & PG classes, M.Phil. for 37 years and 10 months in the various colleges of Chhattisgarh. She has published 42 Research Papers in various National and International Journals & 10 Chapters in edited ISBN Books, 68 poems & 06 Short stories in English, 145 poems & 04 short Stories and 08 Articles in Hindi, and 05 poems & 07 Articles in Bengali. She is a Subject Expert for the CBOS at Pt. Ravishankar Shukla University Raipur for NEP 2020 Curriculum for English Language. During the session 2024 – 2025 she has published 2 short stories in ISBN book 'Hriday Ke Darpan Se', a collection of short stories written by well known authors of India. Publication of Short story in English, in the ISBN Book "Short Stories on Humanity", a poem in the International Journal INNSAEI, presented and published 02 Research Paper in an International Conference on 18-19 January 2025 and on 'Language, Innovation, Culture and Education' and on 11 – 12th July 2025 on 'Changing Landscape of Literature from Ancient to Digital Age'. She was a Resource Person in an International Conference in January 2025 organized by SSMWA.

Awards and Felicitations

Dr. Shrabani Chakravorty Head Dept. of English has received the following Awards and felicitations-

1. Kavya Ratna Samman by Kavita Prabha National Literary Group, Bangalore on 08.03.24.
2. Felicitated with Sahitya Samman by Kavita Prabha National Literary Group 06 times .
3. Felicitated with Prashasti Patra for excellent presentation of "EK KAHANI EK KAVITA on 13.06.24 by Kavita Prabha National Literary Group, Bangalore.
4. Felicitated by hindibhasha.com – a Sahitya Academy awarded Forum with Dainik Shresth Shrijankarta Samman for 05 times for self composed poems and 5 short stories.
5. Awarded on International Women's Day 2025 with MAHILA SASHAKTIKARAN SAMMAN by The Association WE Club of India, Manendragarh on 11.03.25
6. Awarded with SARASWATI PRABHA SAMMAN 2025 on Teacher's Day 05.09.25 by Kavita Prabha National Literary Group Bangalore for continuous and exemplary work in the field of Education.

Future Plans:

1. To start an academic forum for the students of language and literature.
2. To organize a National Workshop on Soft Skills and Effective Communications.
3. To organize Personality Development training to enhance Employability.

प्रतिवेदन : हिन्दी विभाग

डॉ. सुशील कुमार तिवारी
विभागाध्यक्ष - हिन्दी
डॉ. रिंकी तिवारी
अतिथि प्राध्यापक

शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ का हिन्दी विभाग अपने शैक्षणिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक योगदान के लिए सुविख्यात रहा है। यह विभाग केवल भाषा-अध्ययन तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों में साहित्यिक संवेदनाओं, अभिव्यक्ति-कौशल और सांस्कृतिक चेतना के विकास हेतु निरंतर सक्रिय रहता है। विभाग का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति गहन रुचि उत्पन्न करना है, ताकि वे न केवल साहित्य की गहराइयों से परिचित हो सकें, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं की जड़ों से भी सशक्त रूप से जुड़ सकें।

हिन्दी विभाग सदैव ऐसे वातावरण के निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहा है, जहाँ विद्यार्थी अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को निखार सकें और साहित्य के माध्यम से जीवन-दृष्टि का विस्तार कर सकें। यह विभाग विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों, साहित्यिक गोष्ठियों तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करता है।

वर्तमान में विभाग में डॉ सुशील कुमार तिवारी सहायक प्राध्यापक हिन्दी के रूप में अपनी विद्वता और मार्गदर्शन से विद्यार्थियों को आलोकित कर रहे हैं। साथ ही, डॉ. रिंकी तिवारी अतिथि व्याख्याता हिन्दी के रूप में अपनी सृजनशीलता और शैक्षणिक अनुभव से विभाग की गतिविधियों को और अधिक समृद्ध बना रही हैं। इन दोनों शिक्षकों के मार्गदर्शन में हिन्दी विभाग निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है और विद्यार्थियों को साहित्य तथा संस्कृति के साथ आत्मीय रूप से जोड़ने में सफल हो रहा है।

हिन्दी विभाग सदैव यह प्रयास करता है कि विद्यार्थी केवल परीक्षा की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि जीवन के व्यावहारिक और नैतिक मूल्यों को भी आत्मसात करें। इसी दिशा में विभाग द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य में निहित मानवीय संवेदनाओं, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक किया जाता है। अतः इस सत्र में विभाग द्वारा नियमित शिक्षण, अध्यापन कार्य के साथ-साथ अनेक सह-पाठ्येत्तर गतिविधियाँ संचालित की गईं। विभाग के प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों को पठन-पाठन के अतिरिक्त निबंध लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण, काव्य-पाठ तथा रचनात्मक लेखन हेतु प्रोत्साहित किया। राजभाषा हिन्दी दिवस, विश्व हिन्दी दिवस, छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस, शिक्षक दिवस, योग दिवस, गणतंत्र दिवस एवं स्वतंत्रता दिवस जैसे अवसरों पर विभाग की सक्रिय भागीदारी रही। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और श्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया गया।

विभाग में शोधपरक अध्ययन और साहित्यिक विमर्श की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अतिथि व्याख्यान और परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों से विद्यार्थियों को समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों, भाषा-विज्ञान और आलोचना की गहन समझ प्राप्त हुई। विभाग को यह बताते हुए गर्व है कि विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय परीक्षा परिणामों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में भी महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया। भविष्य में विभाग का प्रयास रहेगा कि शिक्षण-अध्यापन के साथ-साथ शोध और सृजनात्मक गतिविधियों को और सुदृढ़ बनाया जाए।

प्रतिवेदन : गृहविज्ञान विभाग - आयोजन एवं उपलब्धियां

डॉ. सरोजबाला श्याग विश्नोई
विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान विभाग

शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ के कला संकाय अंतर्गत 'गृहविज्ञान विभाग' वर्ष 1990 से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु कार्यरत है। यह विषय बी.ए. स्नातक स्तर पर रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत विभाग में बी.ए. गृहविज्ञान में DSC, VAC, DSE पाठ्यक्रम संचालित है । विभाग के परीक्षा परिणाम सदैव उत्कृष्ट और शत-प्रतिशत रहते हैं । विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु विभाग द्वारा नियमित रूप से विभिन्न कार्यशालाएं, संगोष्ठियां, प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं जागरूकता अभियान आयोजित किये जाते हैं।

विभाग ने आईक्यूएसी के सहयोग से ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यमों में सात दिवसीय उद्यमिता विकास कार्यशाला, योग एवं प्राणायाम शिविर, सिलाई प्रशिक्षण कार्यशाला, माइक्रोवेव कार्यशाला, मानसिक स्वास्थ्य, जीवनशैली प्रशिक्षण, नशा उन्मूलन एवं मधुमेह निवारण विषयों पर राष्ट्रीय कार्यशालाएं एवं संगोष्ठियां आयोजित की। इन सभी गतिविधियों का प्रसारण महाविद्यालय के यूट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध है।

सत्र 2024-25 में विभाग द्वारा अनेक जनहितैषी कार्यक्रम आयोजित किए गए। 12 दिसंबर 2024 को 'नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर' का आयोजन जिला चिकित्सालय मनेन्द्रगढ़ के सहयोग से किया गया, जिसमें 50 लाभार्थियों को स्वास्थ्य परीक्षण एवं नि:शुल्क दवाएं प्रदान की गई । 'सिकलसेल परीक्षण शिविर' में 60 विद्यार्थी लाभान्वित हुए । 'रक्तदान शिविर' में 16 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। 'स्वच्छता पखवाड़ा' (सितम्बर 2 अक्टूबर 2024) के दौरान शपथ, रैली एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। 10 से 25 अक्टूबर 2024 तक 'रोजगार भर्ती अभियान' में 77 आवेदकों की नियुक्ति पत्र वितरित किए गए । अगस्त में 'पौधारोपण कार्यक्रम'' आयोजित हुआ तथा 14 नवम्बर 2025 को बाल दिवस पर 'जिला स्तरीय रोजगार मेले' में 41 प्रतिभागियों को रोजगार प्रदान किया गया। 'एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस' ने 12 विद्यार्थियों को तथा 'सिक्योरिटी एंड इंटेलिजेंस सर्विसेस इंडिया लिमिटेड' ने 18 आवेदकों को नियुक्ति दी।

विभागाध्यक्ष डॉ. सरोजबाला श्याग विश्नोई ने शैक्षणिक एवं शोध क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित की। उन्होंने 'मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम (NEP 2020)' में 14-26 अप्रैल 2024 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। मार्च 2025 में धरमपुरा (जगदलपुर) में राष्ट्रीय कार्यशाला, बैकुण्ठपुर में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'आहार में मिलेट्स : आरोग्य एवं समृद्धि की संभावनाएं' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। चिरमिरी में 'विजन इंडिया 2047' तथा खड़गवां में 'मानव अधिकार एवं बौद्धिक संपदा अधिकार' विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 9-10 जून 2024 को नेपाल, वाराणसी एवं रोहतक के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

सम्मेलन में 'भारत और नेपाल में सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत कर प्रशस्ति प्रमाणपत्र प्राप्त किया। डॉ. विश्नोई को सत्र 2024-25 में शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शोध क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु सात राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें 'आचार्य चाणक्य सम्मान, भगवान परशुराम सम्मान, पंडित जवाहरलाल नेहरू स्मृति सम्मान, उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान' तथा 'ज्ञानदीप सम्मान' प्रमुख है।

उनके शोध कार्यों का प्रकाशन कई अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में हुआ। 'शोध समालोचन' में डॉ. भीमराव अम्बेडकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर शोधपत्र (इम्पैक्ट फैक्टर 5.840) प्रकाशित हुआ। 'बोहल शोध मंजुषा' में 'नारी सशक्तिकरण : महिला उद्यमियों की भूमिका' तथा 'आहार एवं पोषण' विषयों पर लेख प्रकाशित हुए। इसके अतिरिक्त नेपाल के 'त्रिभुवन विश्वविद्यालय' द्वारा प्रकाशित 'गुरू शोध गंगा' में उनका शोधपत्र शामिल किया गया।

इस प्रकार गृहविज्ञान विभाग ने सत्र 2024-25 में न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व, शोध एवं रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति की है।

प्रतिवेदन : इतिहास विभाग

श्री कमलेश पटेल
विभागाध्यक्ष - इतिहास

इतिहास विभाग महाविद्यालय के प्रमुख शैक्षणिक विभागों में से एक है, जो विद्यार्थियों को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से वर्तमान और भविष्य की समझ विकसित करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है।

इतिहास विभाग में वर्तमान में निम्नानुसार छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं :-

1. बी.ए. प्रथम सेमेस्टर में 42 छात्र-छात्राएं
2. बी.ए. तृतीय सेमेस्टर में 124 छात्र-छात्राएं
3. बी.ए. तृतीय वर्ष में 48 छात्र-छात्राएं

इस प्रकार विभाग में कुल 214 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

विभागीय गतिविधियाँ-

- समय-समय पर इतिहास से संबंधित व्याख्यान, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा निबंध लेखन आदि गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।
- छात्र-छात्राओं को स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षणिक भ्रमण भी करवाया जाता है।
- विभाग द्वारा विद्यार्थियों के समग्र बौद्धिक विकास हेतु संवादमूलक शिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है।

प्रतिवेदन : संगीत विभाग

डॉ. रश्मि तिवारी
विभागाध्यक्ष - संगीत

शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में संगीत विभाग का संचालन सत्र-2000-2001 से मात्र 03 प्रवेशित छात्र संख्या के साथ आरंभ हुए संगीत विभाग में वर्तमान सत्र में लगभग 60 छात्र-छात्राएं (नियमित एवं स्वाध्यायी) अध्ययनरत हैं। संगीत विभाग का प्रयास विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के अध्ययन के अतिरिक्त उनके सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक पक्ष को भी सुदृढ़ करना है।

नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के साथ ही अन्य संकाय के छात्र जैसे विज्ञान, वाणिज्य एवं कम्प्यूटर साइन्स के विद्यार्थी की अपनी रुचि के अनुसार संगीत विषय का अध्ययन कर रहे हैं। विषय के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम जैसे- बीए के विद्यार्थियों के लिए चार वर्षीय मुख्य पाठ्यक्रम (DSC) तथा बीएससी, बीकॉम एवं कम्प्यूटर साइंस के विद्यार्थियों के लिए सामान्य, ऐच्छिक पाठ्यक्रम (GE) कौशल अभिवृद्धि पाठ्यक्रम (SEC) मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम (VAC) के नियमित अध्यापन का लाभ मिल रहा है।

संगीत विषय में शास्त्रीय संगीत के अध्ययन के साथ ही दक्षिण भारतीय संगीत (दक्षिणी स्वर लिपि पद्धति एवं दक्षिण ताल पद्धति) एवं पश्चिम बंगाल का रवीन्द्र संगीत (सैद्धांतिक) जैसे विषयों की भी जानकारी मिल रही है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत के रूप में छ.ग. के लोकगीतों का सामान्य परिचय एवं गायन परम्परा का भी ज्ञान विद्यार्थियों को मिले ऐसा प्रयास सदैव विभाग द्वारा किया जाता है। राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान छत्तीसगढ़ राज्यगीत के गायन का अभ्यास भी कराया जाता है।

संगीत विभाग में विभागीय कार्यशाला, विद्यार्थियों के लिए समूह चर्चा एवं अतिथि व्याख्यान का आयोजन भी किया जाता है जिसके माध्यम से छात्रों में बौद्धिक विकास एवं विचार-विमर्श की क्षमता को प्रोत्साहित किया जा सके। शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त वाद्ययंत्रों के अतिरिक्त विभिन्न ग्रामीण वाद्ययंत्रों के बारे में भी विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की जाती है।

महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय है कि वर्तमान में संगीत विभाग में विभागाध्यक्ष के रूप में पदस्थ डॉ. रश्मि तिवारी केन्द्रीय अध्ययन मंडल रायपुर, छत्तीसगढ़ में संगीत विभाग में विषय विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत सदस्य हैं एवं नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत संगीत विषय के पाठ्यक्रम निर्माण में भी इनकी महत्वपूर्ण सहभागिता रही है। साथ ही डॉ. तिवारी संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय अंबिकापुर, छत्तीसगढ़ में संगीत विषय के अध्ययन मंडल की अध्यक्ष हैं। संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने अध्ययन अध्यापन के अतिरिक्त सांस्कृतिक एवं अन्य रचनात्मक गतिविधियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। साथ ही विश्वविद्यालय परीक्षाओं में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देकर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है।

प्रतिवेदन : समाजशास्त्र विभाग

श्री सुशील कुमार छात्रे
विभागाध्यक्ष-समाजशास्त्र

श्री रामनिवास गुप्ता
अतिथि व्याख्याता

श्री शिवकुमार
अतिथि व्याख्याता

शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेंद्रगढ़ के समाजशास्त्र के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों की गतिशील चेतना शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेंद्रगढ़ में समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में, मुझे अपने स्नातकोत्तर छात्रों के जीवंत जीवन की एक झलक साझा करते हुए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता हो रही है। समाजशास्त्र, अपने मूल में, सामाजिक जीवन, सामाजिक परिवर्तन और मानवीय व्यवहार के सामाजिक कारणों और परिणामों का अध्ययन है। हमारे विभाग में, विद्यार्थी इन अवधारणाओं को केवल किताबों से ही नहीं सीख रहे हैं, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतार भी रहे हैं। वर्तमान में हमारा विभाग विद्वानों के समर्पित समूहों का घर है जिसमे बी. ए. प्रथम सेमेस्टर के 89 विद्यार्थी बी.ए. तृतीय सेमेस्टर के 136 विद्यार्थी एम.ए. प्रथम सेमेस्टर के 27 होनहार छात्र और अपने अंतिम एम.ए. तृतीय के 25 अनुभवी विद्यार्थी। ये 277 विद्यार्थी मिलकर हमारे विभाग की धड़कन हैं, जो अपने साथ एक संक्रामक ऊर्जा, बौद्धिक जिज्ञासा और सामाजिक जिम्मेदारी की गहरी भावना लेकर आते हैं। जो बात हमारे छात्रों को वास्तव में सबसे अलग करती है, वह है कक्षा के सिद्धांतों और वास्तविक दुनिया के अभ्यास के बीच की खाई को पाटने की उनकी अटूट प्रतिबद्धता। वे समझते हैं कि समाजशास्त्र चार दीवारों तक सीमित रहने वाला विषय नहीं है। परिणामस्वरूप, वे विभिन्न प्रकार की सामाजिक गतिविधियों में असाधारण रूप से सक्रिय हैं। चाहे वह सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर जागरूकता अभियान आयोजित करना हो, मतदाता जागरूकता अभियानों में भाग लेना हो, या मनेंद्रगढ़ और उसके आसपास सामुदायिक कार्यक्रमों के लिए स्वेच्छा से काम करना हो, हमारे छात्र हमेशा सबसे आगे रहते हैं। वे फील्ड सर्वे करने, स्थानीय आयोजनों में सहायता करने और हमारे समाज की बेहतरी के उद्देश्य से की गई पहलों में योगदान देने के लिए सबसे पहले हाथ बढ़ाते हैं। वे सही मायने में सकारात्मक बदलाव के युवा दूत हैं। हालांकि, हमारे छात्रों की प्रतिभा केवल अकादमिक और सामाजिक कार्यों तक ही सीमित नहीं है। यह उनके अनुशासन, समय प्रबंधन और सर्वांगीण व्यक्तित्व का प्रमाण है कि समाजशास्त्र विभाग खेल प्रतिभाओं का भी एक पावरहाउस है। हमें यह बताते हुए बहुत गर्व हो रहा है कि हमारे महाविद्यालय के कुछ सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी, जो अपनी खेल प्रतिभा से महाविद्यालय के लिए गौरव और सम्मान लाते हैं, वे हमारे ही विभाग से हैं। एम.ए. तृतीय सेमेस्टर के छात्र, जो अपनी डिग्री पूरी करने की ओर अग्रसर हैं, अपने कनिष्ठ (जूनियर) छात्रों के लिए एक मार्गदर्शक हैं, जो अपने अनुभव से उनका मार्गदर्शन करते हैं। वहीं, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर के छात्र अपने साथ नई सोच और असीम उत्साह लेकर आते हैं। यह गतिशील परस्पर क्रिया सभी के लिए एक पोषक और प्रेरक वातावरण बनाती है। समाजशास्त्र विभाग के छात्र केवल शिक्षार्थी ही नहीं हैं बल्कि वे कर्मशील, विचारक और भविष्य के नेता हैं। वे इस बात का एक जीता-जागता उदाहरण हैं कि शिक्षा कैसे ऐसे व्यक्तियों का निर्माण कर सकती है जो न केवल ज्ञानी हैं, बल्कि दयालु, सक्रिय और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में भी सक्षम हैं। हम बड़े आशावाद के साथ उन्हें भविष्य की ओर बढ़ते हुए देखते हैं और हमें विश्वास है कि वे समाज में सार्थक योगदान देंगे।

प्रतिवेदन : राजनीति विज्ञान विभाग

श्रीमती अनुपा तिग्गा
विभागाध्यक्ष-राजनीति विज्ञान

श्री पुष्पराज सिंह
अतिथि व्याख्याता

श्री प्रकाश दास मानिकपुरी
अतिथि व्याख्याता

राजनीति विज्ञान विभाग महाविद्यालय के सबसे सक्रिय और जागरूक विभागों में से एक है । इस विभाग की स्थापना 1973 में महाविद्यालय की स्थापना के साथ हुई है। विभाग का उद्देश्य विद्यार्थियों में राजनीतिक समझ संवैधानिक मूल्यों और लोकतांत्रिक चेतना का विकास करना है। यह विभाग अपनी उत्कृष्ट शैक्षणिक परंपरा अनुशासन और सक्रिय सहभागिता के लिए प्रसिद्ध है। यह गर्व का विषय है कि इसी विभाग से संबद्ध एक विदुषी प्राध्यापिका डॉ. श्रीमती आनंदा गुप्ता महाविद्यालय के 'पूर्व प्राचार्य' भी रह चुकी हैं, जिससे विभाग का गौरव और अधिक बढ़ जाता है। राजनीति विज्ञान में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाएं संचालित करने हेतु तीन पद स्वीकृत हैं जिसमें श्रीमती अनूपा तिग्गा सहायक प्राध्यापक के पद पर नियमित रूप से पदस्थ है तथा दो रिक्त पद पर अतिथि व्याख्याता के रूप में श्री पुष्पराज सिंह एवं श्री प्रकाशदास मानिकपुरी कार्यरत हैं। विभाग में स्नातक स्तर पर 437 एवं स्नातकोत्तर स्तर पर 76 छात्र छात्राएं अध्ययनरत हैं। विभाग के छात्र-छात्राओं ने उच्च शिक्षा विभाग द्वारा आदेशित समस्त कार्यक्रमों में भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है जैसे मतदाता जागरूकता अभियान के तहत निबंध लेखन, पोस्टर, चित्रकला, रंगोली प्रतियोगिता में सहभागिता किया तथा रक्तदान कर रक्तदान अभियान को सफल बनाया। एड्स जनजागरूकता अभियान के तहत रैली व नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समाज के लोगों को जागरूक किया ।

राजनीति विज्ञान विभाग के शिक्षकों का योगदान न केवल शिक्षण कार्य में रहा है बल्कि सह पाठ्येतर गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के कौशल विकास में सहयोग किया। राजनीति विज्ञान विभाग की भविष्य की योजनाओं के अंतर्गत भारतीय लोकतंत्र और युवा विषय पर राज्य स्तरीय सेमिनार आयोजित करना, स्थानीय प्रशासन के साथ गुड गवर्नेंस विषय पर संवाद कार्यक्रम, शोध एवं सर्वेक्षण आधारित अध्ययन को प्रोत्साहित करना, शैक्षणिक भ्रमण के तहत विधानसभा का भ्रमण कराना आदि प्रस्तावित है। वस्तुतः राजनीति विज्ञान विभाग का उद्देश्य विद्यार्थियों को सजग, जिम्मेदार और राष्ट्रनिर्माण के प्रति समर्पित नागरिक बनना है।

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है।

शिक्षित व्यक्ति सदैव सम्मान पाता है।

प्रतिवेदन : अर्थशास्त्र विभाग

डॉ. नसीमा बेगम अंसारी
विभागाध्यक्ष - अर्थशास्त्र विभाग

भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय दर्शन भले ही अर्थप्रधान न रहा हो फिर भी तत्कालीन विद्वानों ने आर्थिक पक्षों पर अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। आर्थिक विचारों का समावेश किसी न किसी रूप में भारत के प्राचीन साहित्य, वेदों, पुराणों, उपनिषदों, महाभारत व रामायण में देखने को मिलता है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में अर्थशास्त्र को प्राचीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों के एक महान् ग्रंथ के रूप में पहचान प्राप्त है। अर्थशास्त्र एक बहुमुखी विषय है जो विभिन्न क्षेत्रों में कैरियर एवं रोजगार के अवसर प्रदान करता है। चुनौतिपूर्ण किन्तु उल्लेखनीय कार्यों की संभावना युक्त अर्थशास्त्र विषय में पृष्ठभूमि वाले डिग्रीधारक को विभिन्न क्षेत्रों में विश्लेषक, डेटा वैज्ञानिक, आर्थिक सलाहकार या अर्थशास्त्री के रूप में रोजगार की संभावनाएं मौजूद हैं। शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़ 3 जुलाई, 1973 को स्थापित किया गया, जिसे कोरिया जिले के अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों में से एक होने का गौरव प्राप्त है तथा वर्तमान में इसे नवनिर्मित जिले एमसीबी के अंतर्गत अग्रणी महाविद्यालय का दर्जा प्राप्त है।

महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही कला संकाय के अंतर्गत अर्थशास्त्र विषय का अध्यापन कार्य प्रारंभ किया गया किन्तु इतने लम्बे समय अंतराल के पश्चात् भी इस विषय में अध्यापन कार्य स्नातक स्तर तक ही सीमित है। यद्यपि इस विषय के साथ अन्य विषयों में भी स्नातकोत्तर अध्यापन कार्य प्रारंभ करने हेतु महाविद्यालय प्रशासन निरंतर प्रयासरत है। वर्तमान में स्नातक स्तर पर अर्थशास्त्र विषय में पूर्व पाठ्यक्रम के अंतर्गत बीए द्वितीय एव बीए तृतीय वर्ष में पंजीकृत छात्र-छात्राओं की संख्या 153 है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत DSC, GE एवं SEC में नियमित एवं स्वाध्यायी पंजीकृत छात्र-छात्राओं की संख्या 188 है। इस प्रकार इसमें कुल पंजीकृत छात्र-छात्रों की संख्या 241 है। अर्थशास्त्र विभाग में नियमित नियुक्ति के अभाव में यह विभाग लम्बे समय तक उपेक्षित एवं विकासहीन रहा, किन्तु वर्तमान में यह विभाग सतत् रूप में विकास की ओर अग्रसर है। शोध एवं विकास की दिशा में अर्थशास्त्र विभाग की गतिविधियां सक्रिय एवं उन्नतशील है। शोध निर्देशक के रूप में मान्यता प्राप्त होने के साथ नियमित रूप से शोधपत्रों का प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठी में शोधपत्रों की प्रस्तुति एवं सहभागिता की जाती है तथा इस दिशा में छात्र-छात्राओं को भी प्रेरित किया जाता है।

अर्थशास्त्र जैसे बहुमुखी विषय के अध्ययन में नवोन्मेषी पद्धति को प्रयुक्त करते हुए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के मांग अनुरूप अध्यापन कार्य किया जाता है, इसके साथ ही नियमित रूप से अर्थशास्त्र विषय में डिग्रीधारक के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार अवसर एवं संभावनाओं पर परिचर्चा कर कैरियर मार्गदर्शन का भी कार्य किया जाता है। अर्थशास्त्र विभाग का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी का व्यक्तित्व निर्माण एवं नैतिक विकास के साथ-साथ इसे रोजगारपरक बनाना है।

Department of Chemistry : An Overview

Dr. Prabha Raj
HOD - Chemistry

Dr. Renu Prajapati
Guest Faculty

Mr. Shivanand Saket
Guest Faculty

The Department of Chemistry was established in August 2002. At present, it is supported by one regular faculty member and two highly experienced guest faculty members. The department upholds the philosophy of education as a process of character building, intellectual enrichment, and holistic development. It emphasizes creativity, observation, inquiry-based learning, responsibility, cooperation, respect, communication, and the empowerment of knowledge. The vision of the department is to provide students with skill-oriented education in chemistry—focusing on practical applications and analytical abilities—while fostering curiosity and supporting their overall growth.

The department offers **B.Sc. (NEP)** and **M.Sc. (CBCS)** programs. Its departmental library houses a rich collection of textbooks. To ensure engaging and updated teaching-learning practices, the department utilizes smart classrooms, ICT tools, e-materials, and access to N-List/INFLIBNET library facilities. Special academic activities include seminars, PowerPoint presentations, guest lectures, and educational tours to mines, chemical industries, and research laboratories.

The department provides well-structured infrastructure facilities with separate and well-equipped laboratories for undergraduate and postgraduate levels, particularly for specialization in Organic Chemistry. Available modern instruments include UV-Visible Spectrophotometer, Electronic and Chemical Balances, Microprocessor-based Centrifuge, Magnetic Stirrers with Hot Plate, Digital pH Meter, Conductivity Meter, Turbidity Meter, COD and BOD Incubators, Electric Melting Point Apparatus, Digital Colorimeter, and Electric Water Bath. Additionally, the department is equipped with computers, internet-enabled Wi-Fi, and projectors for academic purposes.

A mentor-mentee system is followed to address the academic, personal, and emotional needs of students. Students are sensitized to the responsible use of chemicals in laboratory experiments to reduce pollution and are actively encouraged to maintain the cleanliness of laboratories and the campus. The department also organizes poster presentation competitions on **National Science Day (28th February)** and actively participates in initiatives such as **Swachh Bharat Abhiyan**.

The department serves as a platform for enhancing social skills, leadership qualities, self-confidence, and energy among students. Alumni interactions are regularly organized, while postgraduate students undertake project work and dissertations focused on developing scientific research skills and promoting innovations in green chemistry, nanotechnology, food adulteration

analysis, water quality analysis, and coal mine effluent studies with eco-friendly approaches.

Achievements of the Department

The department has consistently produced excellent academic results. A notable achievement includes **Ms. Rabia Khatoon**, who secured the first position at the university level in M.Sc. (2nd Semester, 2016–2018 batch) and was awarded her Masters degree. Many students of the department have also secured top ranks in state-level examinations and have been selected as lecturers, TET/NET qualified candidates, C.G.-PSC officers, food inspectors, and Shiksha Karmis. These achievements stand as a matter of pride for the college.

Department of Zoology : An Overview

Dr. Arunima Datta
HOD - Zoology

The Department of Zoology at Government Vivekanand Post Graduate College, Manendragarh, was established in **1973**, with the vision of imparting quality education in the field of animal sciences and promoting scientific temper among students. Since its inception, the department has been committed to excellence in teaching, learning, and research, catering to the educational needs of students from Manendragarh and nearby regions.

The department offers **Undergraduate (B.Sc.)** program in Zoology, following the curriculum prescribed by **Sant Gahira Guru Vishwavidyalaya, Sarguja, Ambikaur (C.G.)**. The department is equipped with well-maintained laboratory, microscopes, and essential instruments to facilitate hands-on learning and practical understanding of animal diversity, physiology, genetics, ecology, and applied zoology. Students are encouraged to participate in seminars, field studies, projects, and extension activities that help them develop scientific inquiry, environmental awareness, and ethical responsibility toward nature and wildlife.

Over the years, the department has nurtured many students who have gone on to pursue careers in research, education, health sciences, and environmental conservation. The department has only one faculty, Dr. Arunima Datta (2017 onwards). The Department of Zoology has adopted the provisions of the National Education Policy (NEP) 2020 from the academic session 2024–25, marking a significant step towards progressive and holistic higher education. With the introduction of the Four-Year Undergraduate Program (FYUP), the department has restructured its curriculum delivery methods to align with the core principles of flexibility, interdisciplinarity, and student-centric learning. The revised curriculum emphasizes not only a strong foundation in classical zoological disciplines such as animal diversity, physiology, ecology, genetics, and developmental biology, but also incorporates skill-based and research-oriented components. Multiple

entry and exit options, as envisaged under NEP 2020, have been integrated to provide students with diverse academic pathways and career trajectories. The inclusion of Ability Enhancement Courses (AECs), Skill Enhancement Courses (SECs), and Value-Added Courses ensures that learners acquire both domain-specific competencies and transferable skills. In keeping with the policy's thrust on experiential learning, the department has expanded opportunities for field studies, laboratory work, internships, and community engagement projects. Students are encouraged to pursue minor subjects and interdisciplinary courses in pure as well as allied sciences, environmental studies, Social studies, History, Languages like Hindi and English, Economics, Indian Music, Home Science, Business Economics, Computer Science etc. thereby broadening their academic exposure. The implementation of NEP 2020 has also fostered a research-oriented environment at the undergraduate level. The curriculum in the final year emphasizes project work, critical inquiry, and analytical approaches, enabling students to develop independent research skills. In addition, digital learning platforms and ICT-based teaching methods have been adopted to enhance access, inclusivity, and innovation in pedagogy. By adopting the NEP 2020 framework, the Department of Zoology seeks to nurture graduates who are not only proficient in zoological sciences but also equipped with critical thinking, problem-solving abilities, ethical values, and societal responsibility. This reform is expected to significantly strengthen the academic profile of students and prepare them for higher studies, research, and diverse professional avenues.

The Department of Zoology continues to uphold its mission of fostering curiosity, scientific thinking, and a deep appreciation for biodiversity, aligning with the college's broader goal of holistic education and regional development.

Dr. Datta has delivered over 30 **popular lectures, webinars, and online courses** on topics ranging from biodiversity conservation, molecular biology, mental health, stress management, reproductive health, and classical arts for stress relief. She has also developed extensive **MOOC scripts and video lectures** for undergraduate and postgraduate Zoology curricula available on digital platforms.

Dr. Arunima Datta is a highly accomplished scholar, educator, and administrator with a proven record of research excellence, pedagogical innovation, and community engagement. Her work exemplifies a commitment to integrating scientific research with societal outreach and higher education reforms under NEP 2020.



**"Nothing in life is to be feared,
it is only to be understood. Now is the time to
understand more, so that we may fear less."**

- Marie Curie

Department of Botany

Ms. Alpana Rani Xalxo
Guest Lecturer

The department of Botany was established in the year 03 July 1973 with the vision to become a center of excellence in science, education & research. The department of botany is one of the oldest department of our college Govt. Vivekanand P.G. college Manendragarh C.G. and has been in the forefront providing quality education & training in the field for the past few decades.

The department took its first major steps toward achieving this vision by launching its undergraduate program in the year 1973. Since, then it has grown significantly, offering a wide range of program to cater to the evolving needs of the science field. Currently the department offers undergraduate programs, B.sc in Botany with subject combination such as chemistry/ botany zoology/, chemistry/ botany/geology & chemistry/ botany /physics.

A B.Sc in Botany is a branch of biology focusing on plants, typically covers plant structure, classification, growth, metabolism, reproduction, physiology, evolution & their relationship with the environment. Key areas of study include plant anatomy, ecology, genetics and the study of algae and fungie.The curriculum also delves into the medicinal and economic uses of plants.

With the launch of NEP-2020 the department has introduced a vocational course such as Value added course and skill enhancement course in botany. The National Education Policy 2020 is a comprehensive education reform initiative in India, aiming to transform the education system to meet the needs of 21st century. NEP-2020 emphasizes integrating vocational education and skill development at all levels preparing students for the workforce. Through the introduction of value added course department of Botany is mainly focusing on the plantation and use of herbal and Ethnomedicinal plants and reflecting its commitment to sustainable gardening practice through skill enhancement course.

Vision:- The vision of the department of Botany is to advance knowledge in plant science through quality education, innovative research and sustainable practice. The Department aims to nurture skilled professionals and researchers who contribute to biodiversity conservation, agriculture advancements, and environmental sustainability. By integrating modern scientific approaches with traditional botanical knowledge, the department strives to address global challenges in Plant biology, Ecology, and Biotechnology while fostering commitment to academic excellence and societal development.

Mission:- Our mission is to foster an environment of excellence by attracting and supporting the outstanding students, faculty and staff dedicated to sustain our vision. We focus on enable predictive understanding of plants at their local, regional and global scales. We organize seminars, workshop and other activities within our course to develop a deeper understanding of the challenges of improving the subjects of botany.

Faculty:- The department boats a qualified and experience faculty dedicated to both teaching and research.

Facilities:- The department is equipped with well maintained laboratories with different chemicals, compound microscopes, various kind of specimens of different plant kingdoms, algae, fungie and other required instruments and glassware.

Carrier opportunities:- Graduate can pursue roles as a botanist, plant scientist etc. Students can also find their carriers in research, education, pharmaceuticals, environmental management, agriculture, plant biotechnology and agro based industries etc.

प्रतिवेदन : भौतिक शास्त्र विभाग

श्री सुनील कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष - भौतिक शास्त्र

भौतिकी विभाग का उदघाटन वर्ष 1987 में हुआ था। तब से यह विभाग विज्ञान के क्षेत्र में उच्च शिक्षा और शोध में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वर्तमान में विभाग में लगभग 80 छात्र अध्ययनरत हैं, जो भौतिकी के विविध पहलुओं में गहरी समझ और दक्षता हासिल कर रहे हैं।

विभाग का उद्देश्य छात्रों को मूलभूत और उन्नत भौतिकी सिद्धांतों की स्पष्ट समझ देना, प्रयोगात्मक कौशल विकसित करना, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनाना है। इसके तहत विद्यार्थियों को विभिन्न प्रयोगशालाओं में आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके प्रयोग करने का अवसर प्राप्त होता है।

पिछले वर्षों में विभाग ने कई शैक्षिक गतिविधियाँ, वर्कशॉप, सेमिनार और प्रोजेक्ट कार्य आयोजित किए हैं, जिनमें छात्रों ने सक्रिय भागीदारी की और अपने ज्ञान का विकास किया। विभाग के शिक्षक लगातार छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं और उन्हें प्रतिस्पर्धा परीक्षाओं तथा शोध कार्यों के लिए प्रेरित करते हैं। भौतिकी विभाग की यह यात्रा निरंतर प्रगति और उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर है। हम विश्वास करते हैं कि आने वाले वर्षों में हमारे विद्यार्थी और शोधकर्ता भौतिकी के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे और समाज तथा विज्ञान की उन्नति में योगदान देंगे।

प्रतिवेदन : गणित विभाग

श्री रंजीतमणी सतनामी
विभागाध्यक्ष - गणित विभाग

शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेंद्रगढ़, जिला-एमसीबी (छ.ग.) का गणित विभाग विज्ञान संकाय का एक महत्वपूर्ण अंग है। विभाग में स्नातक स्तर तक गणित विषय की कक्षाएँ संचालित की जा रही हैं। वर्तमान में गणित विषय के लिए स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाओं में क्रमशः साठ-साठ विद्यार्थियों की स्वीकृत सीटें उपलब्ध हैं।

गणित विभाग का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में गणितीय तर्कशक्ति, विश्लेषणात्मक चिंतन तथा समस्या समाधान की क्षमता का विकास करना है। इस दिशा में विभाग निरंतर प्रयत्नशील है। विभाग समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक गतिविधियाँ, जैसे- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, मॉडल प्रस्तुतीकरण एवं गणितीय संगोष्ठी आदि का आयोजन करता है, जिससे विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि एवं आत्मविश्वास का विकास होता है। विभाग का संकल्प है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को गणितीय दृष्टिकोण से समृद्ध कर उन्हें उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं अन्य प्रतिस्पर्धात्मक क्षेत्रों में अग्रसर किया जाए।

प्रतिवेदन : भू-विज्ञान विभाग

श्री भीमसेन भगत
विभागाध्यक्ष - भूगर्भ शास्त्र

भूविज्ञान विभाग की स्थापना वर्ष 1987 में की गई थी। अपनी स्थापना के समय से ही यह विभाग महाविद्यालय के प्रमुख विज्ञान विभागों में से एक रहा है। विभाग का उद्देश्य विद्यार्थियों को पृथ्वी की संरचना, खनिज, शैल, भौगोलिक प्रक्रियाओं तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं उपयोग के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवगत कराना है।

वर्तमान में विभाग में लगभग 100 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जो स्नातक स्तर पर भूविज्ञान विषय का गहन अध्ययन कर रहे हैं। विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ प्रयोगात्मक एवं क्षेत्रीय अध्ययन (Field Study) का भी अवसर प्रदान किया जाता है, जिससे उन्हें पृथ्वी विज्ञान के व्यावहारिक पहलुओं की सशक्त समझ विकसित हो सके। विभाग में शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से प्रयोगशालाएँ, फील्ड विजिट, प्रोजेक्ट वर्क, सेमिनार और शैक्षणिक चर्चाएँ आयोजित की जाती हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों को खनिज, चट्टानों और जीवाश्मों के नमूनों का प्रत्यक्ष अध्ययन कराया जाता है, जिससे वे प्राकृतिक भू-प्रक्रियाओं को समझ सकें।

भूविज्ञान विभाग सदैव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुशासन और शोध भावना को प्रोत्साहित करता है। भविष्य में

विभाग का उद्देश्य विद्यार्थियों को भू-सर्वेक्षण, खनन, पर्यावरण संरक्षण एवं आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में बेहतर अवसरों के लिए तैयार करना है। विभाग के विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक उपलब्धियों में बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक एवं सह-पाठयक्रम गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। विभाग का वातावरण सदैव शैक्षणिक, प्रेरणादायी एवं सहयोगात्मक रहा है।

अंत में, भूविज्ञान विभाग महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास में अपने योगदान पर गर्व करता है और भविष्य में भी इसी समर्पण भावना से कार्य करता रहेगा।



"For me, I am driven by two main philosophies: know more today about the world than I knew yesterday and lessen the suffering of others. You'd be surprised how far that gets you."

- Neil deGrasse Tyson

प्रतिवेदन : वाणिज्य संकाय

श्रीमती स्मृति अग्रवाल
विभागाध्यक्ष-वाणिज्य विभाग

डॉ. रामजी गर्ग
अतिथि व्याख्याता

श्री शुभम गोयल
अतिथि व्याख्याता

महाविद्यालय के स्थापना के साथ वाणिज्य संकाय वर्ष 2004-05 से प्रारम्भ है। प्रारम्भ से ही वाणिज्य संकाय अपनी अकादमिक एवं शैक्षणिक उपल्बधियो के लिए संभागीय स्तर पर प्रसिद्ध है। वर्तमान में वाणिज्य संकाय के द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर में अध्यापन कार्य कराया जाता है। संकाय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के बाद सत्र 2024-25 से स्नातक पाठ्यक्रम सेमेस्टर एवं वार्षिक दोनों तथा स्नातकोत्तर सी.बी.सी.एस. प्रणाली में संचालित है। महाविद्यालय में विद्यार्थी प्रवेश हेतु स्नातक स्तर पर 150 सीट एवं स्नातकोत्तर स्तर पर 40 सीट स्वीकृत है। वर्तमान में विभाग में 03 पद स्वीकृत हैं जिसमें 01 सहायक प्राध्यापक एवं 02 अतिथि व्याख्याता कार्यरत हैं।

विभाग में कार्यरत सहायक प्राध्यापक एवं अतिथि व्याख्याता का विवरण -

क्र.	नाम एवं पद नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव
1	स्मृति अग्रवाल (सहायक प्राध्यापक/विभागाध्यक्ष)	एम.फिल, एम.कॉम, नेट, सेट	12 वर्ष
2	डॉ. रामजी गर्ग (अतिथि व्याख्याता)	पी.एच.डी., एम.कॉम.	10 वर्ष
3	शुभम कुमार गोयल (अतिथि व्याख्याता)	एम.कॉम, नेट, सेट	7 वर्ष

विद्यार्थियों का विवरण :-

सत्र	बी.कॉम प्रथम वर्ष	बी.कॉम द्वितीय वर्ष	बी.कॉम तृतीय वर्ष
2022–23	148	98	139
2023–24	150	142	98
2024–25	150 (NEP 2020 लागू)	117	110
2025–26	108 (NEP 2020 लागू)	92 (III Sem) (NEP 2020 लागू)	135

सत्र	एम.कॉम प्रथम सेमेस्टर	एम.कॉम तृतीय सेमेस्टर
2022-23	37	15
2023-24	31	31
2024-25	30	14
2025-26	23	15

विभागीय गतिविधियॉं

1. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रेजेटेशन, सेमीनार, सहभागी कक्षाएं, समूह चर्चा एवं ओपन स्टेज कार्यक्रम का आयोजन हर सत्र में किया जाता है।
2. विद्यार्थियों को विश्वविद्यालयीन परीक्षाओं की तैयारी हेतु हर सत्र में 'परीक्षा पे चर्चा' का आयोजन किया जाता है एवं समय-समय पर इकाई परीक्षा एवं उपचारात्मक कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।
3. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन सुविधा हेतु विभागीय पुस्तकालय बनाया गया है जिसमें स्वयं एवं नमूनार्थ हेतु प्राप्त पुस्तकें अध्ययन हेतु विद्यार्थियों को दिया जाता है।
4. सत्र 2024-25 में विद्यार्थियों के लिए विजय जयसवाल कंसलटेंसी फर्म अम्बिकापुर के द्वारा रोजगार उन्मुखीकरण एवं साक्षात्कार का आयोजन किया गया जिसमें 07 विद्यार्थियों के चयन अगले स्तर पर हुआ था।
5. सत्र 2023-24 वाणिज्य स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण हेतु गोयल राईस मिल पिपरिया मनेन्द्रगढ़ ले जाया गया था
6. वर्ष 2022-23 में अप्रत्यक्ष कर- जी.एस.टी. एवं उसके प्रभाव विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया था।

विभागीय उपलब्धियां :-

1. श्री शुभम कुमार गोयल द्वारा सत्र 2024-25 में सेट परीक्षा उत्तीर्ण की गई। वर्तमान में वे नेट एवं सेट उत्तीर्ण है।
2. वाणिज्य संकाय की दो छात्राएं सुश्री अदिती अग्रवाल एवं सुश्री जया शर्मा ने राज्य स्तरीय युवा महोत्सव 2025 में जिला का प्रतिनिधित्व किया एवं क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।
3. वाणिज्य संकाय के भूतपूर्व छात्र (सत्र 2022-23) मो. नसीम ने सेट 2025 की परीक्षा उत्तीर्ण की।
4. सत्र 2023-24 में शासकीय रामानुजप्रताप सिंह देव स्नातकोत्तर महाविद्यालय के वाणिज्य मॉडल प्रदर्शनी में श्रीमती स्मृति अग्रवाल को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।
5. श्रीमती स्मृति अग्रवाल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हेतु जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर नियुक्त है।

मिलजुलकर काम करने में खास बात यह है कि आपके पास में हमेशा और भी लोग होते हैं।

प्रतिवेदन : कम्प्यूटर विभाग

श्री थनेन्द्र कश्यप
अतिथि व्याख्याता

श्री अभिषेक सिंह
अतिथि व्याख्याता

महाविद्यालय के स्थापना के साथ कम्प्यूटर संकाय वर्ष 2016 से प्रारम्भ है। प्रारम्भ से ही कम्प्यूटर संकाय अपनी अकादमिक एवं शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए संभागीय स्तर पर प्रसिद्ध है। वर्तमान में कम्प्यूटर संकाय के द्वारा स्नातक (बी.सी.ए.) एवं स्नातकोत्तर (पी.जी.डी.सी.ए.) में अध्यापन कार्य कराया जाता है। संकाय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के बाद सत्र 2024–25 से स्नातक पाठ्यक्रम सेमेस्टर एवं वार्षिक दोनो तथा स्नातकोत्तर वार्षिक प्रणाली में संचालित है। महाविद्यालय में विद्यार्थी प्रवेश हेतु स्नातक स्तर (बी.सी.ए.) पर 30 सीट एवं स्नातकोत्तर स्तर (पी.जी.डी.सी.ए.) पर 30 सीट स्वीकृत है। वर्तमान में विभाग में 02 पद स्वीकृत है जिसमें अतिथि व्याख्याता कार्यरत हैं।

विभाग में कार्यरत अतिथि व्याख्याता का विवरण -

क्र.	नाम एवं पद नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यपन अनुभव
1	अभिषेक कुमार सिंह (अतिथि व्याख्याता)	एम. टेक. , नेट	1 वर्ष
2	थनेंद्र कश्यप (अतिथि व्याख्याता)	एम.सी.ए., नेट, सेट	1 वर्ष

विद्यार्थियों का विवरण :-

सत्र	बी. सी. ए. प्रथम वर्ष	बी. सी. ए. द्वितीय वर्ष	बी. सी. ए. तृतीय वर्ष
2024–25	30 (NEP 2020 लागू)	14	13
2025–26	14 (NEP 2020 लागू)	12 (III Sem) (NEP 2020 लागू)	14

सत्र	पी. जी. डी. सी. ए. प्रथम वर्ष
2024–25	12
2025–26	06

विभागीय गतिविधियॉ

1. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रेजेटेशन, सेमीनार, सहभागी कक्षाएं, समूह चर्चा एवं ओपन स्टेज कार्यक्रम का आयोजन हर सत्र में किया जाता है।
2. विद्यार्थियों को विश्वविद्यालयीन परीक्षाओं की तैयारी हेतु हर सत्र में 'परीक्षा पे चर्चा' का आयोजन किया जाता है एवं समय–समय पर इकाई परीक्षा एवं उपचारात्मक कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

3. महाविद्यालय में सत्र 2024–25 में कार्यरत स्टॉफ के लिए विभाग द्वारा 6 दिवसीय वर्कशॉप आयोजित किया गया ।
4. समय–समय पर महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को साइबर सिक्योरिटी एवं साइबर क्राइम सम्बन्धित जानकारी दी जाती है
5. NEP-2020 के लागू होने के पश्चात छात्र छात्राओं का रुझान डिजिटल साक्षरता के रूप में विभाग द्वारा जेनेरिक इलेक्टिव के रूप में MS Office एवं Operating System जैसे विषय अन्य विभाग के छात्र छात्राओं को दिया जाता है
6. IOT, मोबाइल और इंटरनेट का साकारात्मक उपयोग के लिए विभाग द्वारा छात्र छात्राओं के लिए साक्षरता अभियान चलाया जाता है

विभागीय उपलब्धियां :-

1. श्री थनेंद्र कश्यप द्वारा सत्र 2024–25 में सेट परीक्षा उत्तीर्ण की गई। वर्तमान में वे नेट एवं सेट उत्तीर्ण है।
2. कम्प्यूटर साइंस विभाग अध्ययनरत बी. सी. ए. के तीन विद्यार्थियों के द्वारा प्रवेश परीक्षा पास कर बिलासपुर विश्वविद्यालय (UTD Campus) में एम. सी. ए. विषय में प्रवेश पाया जिनमे अर्चना मसीह , आर्यन कुरैशी , शिल्पा हैं।
3. पीजीडीसीए का एक छात्र संस्था से शिक्षा प्राप्त कर जिला सत्र न्यायालय कुरुक्षेत्र में कार्यरत है ।

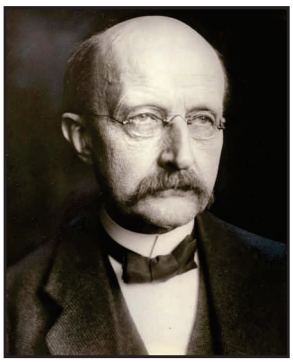

“Science cannot solve the ultimate mystery of nature. And that is because, in the last analysis, we ourselves are part of the mystery that we are trying to solve.”

- Max Planck

प्रतिवेदन : ग्रंथालय विभाग

श्री शरणजीत कुजूर
ग्रंथपाल

पुस्तकालय समाज का आईना है। यह केवल एक भवन नहीं, बल्कि ज्ञान संस्कृति और व्यक्तित्व विकास का मंदिर है। प्रत्येक शिक्षण संस्थान गाँव और शहर में एक समृद्ध पुस्तकालय का होना आवश्यक है। शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय का पुस्तकालय महाविद्यालय के स्थापना वर्ष से संचालित है पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की सुविधाएं दी जाती है, जो विद्यार्थियों और स्टॉफ के अध्ययन व अनुसंधान कार्य को सुगम बनाती हैं जैसे-

1. **पुस्तकें एवं संदर्भ सामग्री**
   - शैक्षणिक पाठयक्रम की पुस्तकें
   - संदर्भ ग्रंथ
   - पत्रिकाएं और जर्नल्स
   - समाचार पत्र
2. **रीडिंग रुम / अध्ययन कक्ष** (Readding Room)
   - शांत और स्वच्छ वातावरण
   - व्यक्तिगत और सामूहिक अध्ययन के लिए समुचित बैठक व्यवस्था
3. **ई-लाइब्रेरी / डिजिटल लाइब्रेरी** (E-Library)
   - कम्प्यूटर और इंटरनेट सुविधा
   - ई-पुस्तके डिजिटल पुस्तकें (E-books), ई-जर्नल्स
   - राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) की पंहुच।
   - N-स्पेज
   - INFLIBNET
4. **पुस्तकालय अर्ध-स्वचालन** (Sem-Autometion of Libraries)
   - पुस्तकीय कार्य
   - डिजिटल कार्ड
5. **बुक लेंडिग सुविधा** (Book Lending Facility)
   - पुस्तकें घर ले जाने की अनुमति
   - कार्ड सिस्टम या डिजिटल बार कोर्ड प्रणाली के माध्यम से।
6. **प्रिटिंग सुविधा / फोटो कॉपी सुविधा** (Photo copy printing)
   - पुस्तकें घर ले जाने की फोटो कॉपी कराने की सुविधा
   - प्रिंट-आउट की सुविधा
7. **नियमित अभिविन्यास कार्यक्रम** (Library orientation)
   - नये विद्यार्थियों के लिये लाईब्रेरी उपयोग की जानकारी

प्रतिवेदन : क्रीड़ा विभाग

श्री सुमित कुमार तिवारी
अतिथि क्रीड़ाधिकारी

श्री भीमसेन भगत
प्रभारी क्रीड़ाधिकारी

विभाग का संक्षिप्त परिचयः-

शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ के क्रीड़ा विभाग में खिलाड़ियों के लिये व्यायामशाला, वेट लिफ्टिंग, कैरम बोर्ड, शतरंज, टेबल-टेनिस, बैडमिंटन आदि इंडोर गेम की सुविधा है और आऊटडोर गेम में कबड्डी, हैन्डबॉल, बालीवाल, बास्केट बॉल, किक्रेट, हॉकी, फुटबाल, एथलेटिक्स आदि खेलो की समुचित व्यवस्था है। विभिन्न खेल प्रतियोगिताओ में महाविद्यालय के 125 खिलाड़ियों ने भाग लिया और उत्कृष्ट प्रदर्शन कर राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर पर चयनित हुये।

विभाग में शिक्षकों का विवरण :-

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता
1.	सुमित कुमार तिवारी (अतिथि क्रीड़ाधिकारी)	B.com., B.P.Ed, M.P.Ed, M. Phil.

गतिविधियाँ -

महाविद्यालय से विभिन्न खेल कबड्डी क्रिकेट फुटबॉल, हैन्डबॉल, खो-खो, शतरंज, बैडमिंटन, वालीवॉल एथलेटिक्स आदि का नियमित अभ्यास कराया जाता है। और टीमों का चयन कर परिक्षेत्र स्तर में भेजा जाता है।

महाविद्यालय में व्यायाम शाला का संचालन सुचारू रूप से किया जाता है जिसमें महाविद्यालय के छात्र एवं छात्रायें नियमित अभ्यास के लिये प्रतिदिन आते है। महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल दिवस पर वालीवाल, बैडमिंटन, शतरंज एथलेटिक्स आदि प्रतियोगिता का आयोजन कराया जाता है। महाविद्यालय में फिट इंडिया मूवमेन्ट के तहत, योगा, सूर्य नमस्कार, कराते, और स्वास्थ्य व्याख्यान माला का भी आयोजन कराया जाता है।

विभाग की उपलब्धियां (सत्र 2024-25) :- पुरुष वर्ग

1. कबड्डी

क्र.	नाम	कक्षा	स्थान
1	शिवकुमार	बी.ए. तृतीय	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर
2	नेवल सिंह	एम. ए. तृतीय सेमेस्टर	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर

2. क्रिकेट

क्र.	नाम	कक्षा	स्थान
1	सुमित सिंह	बी.कॉम प्रथम	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर
2	आकाश सिंह	बी. कॉम प्रथम सेमेस्टर	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर
3	नागेश्वर	एम.ए प्रथम सेमेस्टर	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर

3. एथलेटिक्स :-

क्र.	नाम	कक्षा	स्थान
1.	अभिषेक	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर
2	अनुपम दुबे	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर
3	शिव कुमार	बी.ए. तृतीय सेमेस्टर	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर

महिला वर्ग

कबड्डी

क्र.	नाम	कक्षा	स्थान
1	दीपा	बी.ए. द्वितीय	राज्य एवं विश्वविद्यालय स्तर

लक्ष्य :- महाविद्यालय से खिलाड़ियों को राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लियें तैयार करना एवं महाविद्यालय में परिक्षेत्र स्तर एवं राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन कराना।

प्रतिवेदन : राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

श्री रंजीतमनी सतनामी
कार्यक्रम अधिकारी (रासेयो पुरुष इकाई)

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) केवल एक संगठन नहीं, बल्कि यह युवाओं में राष्ट्रभक्ति, सामाजिक जिम्मेदारी, और सेवा भावना को जागृत करने वाला एक महान आंदोलन है। इसकी स्थापना 24 सितंबर 1969 को युवाओं को 'Not Me, But You'— 'मैं नहीं, आप' की भावना से प्रेरित करने के लिए की गई थी।

NSS हमें केवल स्वयंसेवा करना नहीं सिखाता, यह हमें सच्चा नागरिक बनाता है, जो न केवल अपने अधिकारों को जानता है, बल्कि अपने कर्तव्यों का भी ईमानदारी से पालन करता है।

NSS का महत्व–

1. सामाजिक उत्तरदायित्व : NSS युवाओं को समाज के प्रति संवेदनशील बनाता है। यह उन्हें ग्रामीण विकास, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों से जोड़ता है।
2. नेतृत्व और चरित्र निर्माण : NSS के माध्यम से युवा नेतृत्व करना सीखते हैं। वे कठिन परिस्थितियों में कार्य करना, निर्णय लेना, और टीम भावना को आत्मसात करना सीखते हैं।
3. राष्ट्र निर्माण में भागीदारी : NSS स्वयंसेवक समाज के हर वर्ग से संवाद स्थापित कर, राष्ट्र की नींव को मज़बूत करते हैं।

4. व्यक्तित्व विकास : NSS के कार्यक्रमों से आत्मविश्वास, संवाद कौशल और व्यवहारिक ज्ञान बढ़ता है, जिससे विद्यार्थी हर क्षेत्र में सफल हो सकता है।

युवाओं को राष्ट्र के नाम संदेश-

प्रिय युवाओं,

देश हमसे सिर्फ डिग्रियाँ नहीं, दिशा और दृष्टि की अपेक्षा करता है। NSS के माध्यम से हमने सीखा है कि अगर गाँव बदलेगा, तो देश बदलेगा। अगर हम अपने छोटे-छोटे प्रयासों से समाज में रोशनी भर सकें, तो वही असली देशभक्ति है। आइए, हम संकल्प लें- हम नशा-मुक्त, स्वच्छ और शिक्षित भारत के निर्माण में योगदान देंगे। हम जात-पात और भेदभाव से ऊपर उठकर एक समतामूलक समाज का निर्माण करेंगे। हम हर जरूरतमंद के साथ खड़े रहेंगे, क्योंकि यही NSS का मूल मंत्र है — 'Not Me, But You' अंत में मैं यही कहना चाहूंगा- 'जब तक NSS का एक भी स्वयंसेवक जीवित है, तब तक राष्ट्र निर्माण की लौ बुझ नहीं सकती।'

प्रतिवेदन : रेड रिबन क्लब

डॉ. सरोजबाला श्याग बिश्नोई
प्रभारी अधिकारी, रेड रिबन क्लब

रेड रिबन क्लब (RRC) की स्थापना राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (NACO) द्वारा भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अतर्गत की गई। छत्तीसगढ़ में (RRC) की शुरूआत छत्तीसगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण समिति (CGSACA) के सहयोग से की गई। इस क्लब का मुख्य उद्देश्य युवाओ को एच.आई व्ही. /एड्स के लिए जागरूक करना और उन्हें स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करना है।

हम महाविद्यालय में डाक्टर्स के माध्यम से व्याख्यान द्वारा फिर युवाओं द्वारा, युवाओं में एड्स, यौन रोगो तथा नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाने सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना से कार्य करने उन्हे रक्तदान, अंगदान, सुरक्षित व्यवहार, सराकात्मक दृष्टिकोण के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जिसमें विद्यार्थी जन सम्पर्क कर समाज में फैली गलत धारणाओं और भय को दूर करते हैं।

विद्यार्थियो के माध्यम से निरन्तर रक्तदान शिविर जनजागरूकता रैली पोस्टर प्रतियोगिता के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति चेतना फैलाने का कार्य रेड रिबन क्लब प्रभारी अधिकारी के संयोजन में तथा IQAC के द्वारा मार्गदर्शन में सत्र 2024-25 में आयोजित गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण :-

- उन्मुखीकरण 24.09.2024 को तथा एच.आई.व्ही. संबंधित क्वीज प्रतियोगिता का आयोजन पुरुस्कार वितरण हुआ ।

- माह अक्टूबर में भी एच.आई.व्ही. संबंधित क्वीज प्रतियोगिता आयोजित हुई एवं एड्स जागरूकता व्याख्यान का आयोजन हुआ।
- डॉ. लवलेश गुप्ता केन्द्रीय चिकित्सालय द्वारा रक्तदान एवं जीवनशैली शिक्षण पर व्याख्यान दिया गया।
- विश्व एड्स दिवस पखवाड़ा में 01.12.2024 से 15.12.2024 तक एच.आई व्ही./एड्स पर पोस्टर प्रतियोगिता, व्याख्यानमाला, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- रैली नुक्कड़-नाटक का आयोजन शहर के मुख्य चौराहे पर विद्यार्थियों के द्वारा किया गया।
- रक्तदान शिविर में 16 यूनिट रक्तदान हुआ एवं नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 60 विद्यार्थियों को स्वास्थ्य परीक्षण उपरान्त नि:शुल्क दवाई वितरित की गई। यह कार्यक्रम जिला चिकित्सालय मनेन्द्रगढ, जिला चिकित्सा अधिकारी डॉ. अविनाश खरे के सौजन्य से सम्पन्न हुआ।
- सिकल सेल परीक्षण में 60 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।
- राष्ट्रीय कृमिमुक्ति दिवस कार्यक्रम 10 से 28 फरवरी दवा सेवन में विद्यार्थियो ने सहयोग किया।
- फाईलेरिया के लिए जागरूकता अभियान चलाया गया।
- पौधारोपण का कार्य किया गया।
- स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन महाविद्यालय स्तर पर सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2024 तक किया गया जिसमें स्वच्छता शपथ, रैली, जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रतिवेदन : ईको क्लब

डॉ. सरोजबाला श्याग बिश्नोई
प्रभारी अधिकारी, ईको क्लब

ईको क्लब महाविद्यालय में भारत सरकार के पर्यावरण, वन, जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की राष्ट्रीय हरित कोर (National Green Corps-NGC) योजना के अंतर्गत प्रारंभ है। यह क्लब महाविद्यालय में राज्य पर्यावरण संरक्षण मण्डल रायपुर, अम्बिकापुर के दिशा-निर्देश पर संचालित है।

महाविद्यालय ईको क्लब (Eco Club) के माध्यम से विद्यार्थी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना, पर्यावरण संरक्षण की भावना लोगो में प्रसारित करना तथा जलवायु, मिट्टी, पौधो, जीव-जंतुओं के संरक्षण का संदेश फैलाना, पौधारोपण 'हरितसोच' (Green Thinking) को बढ़ाने का कार्य तथा स्वच्छता पखवाड़े के आयोजन अंतर्गत महाविद्यालय स्तर पर 15 सितम्बर, 2024 से 02 अक्टूबर, 2024 तक किया गया जिसमें स्वच्छता शपथ, रैली, जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कृमिनाशक दवाई वितरण, जागरूकता व्याख्यान, पौधारोपण कार्यक्रम में सहभागिता जैसे कार्य ईको क्लब प्रभारी द्वारा समिति एवं विद्यार्थियों के सहयोग से सत्र 2025-26 में सम्पन्न किये।

संस्कार और संस्कृति



डॉ. श्राबनी चक्रवर्ती
प्राचार्य

शुद्धि की प्रक्रिया ही मौलिक संस्कार है
शरीर, मन, और मष्तिष्क जब पवित्र हो तो श्रेष्ठ श्रृंगार है
संस्कृति हमारे देश की प्राचीन अलंकार है
निरंतर मानव को उदीयमान बनाये ये परिष्कार है।

श्रीकृष्ण, राम और बुद्ध की है जन्म भूमि यहाँ
ऋषि, मुनि और तपस्वी करते वास जहां
पुरातन काल से सभ्यता और संस्कृति है निहित यहाँ
वीरों और वीरांगनाओं की बलिदान की धरती है जहां।

ऐसे सुसंस्कारों में रचा बसा मेरा हिन्दुस्तान
जिसकी जय गाथा चारों ओर करे हर इंसान
पश्चिम से पूरब की ओर रूख करे सब विद्वान
संस्कृति के ज्ञान गंगा में अवगाहन करें, मेरा देश महान।



संस्कार हमें सदाचार, दया, धर्म और शांति का पाठ पढ़ाये
सुसंस्कारो के पवित्र सलिला में जिसने भी गोते लगाये
अंदर से चुन-चुन कर प्रेम से उत्तम मोती पाये
आओ सब मिलकर इस वसुंधरा को और सजाये।

इस पावन संस्कृति की धरोहर को सदैव आगे बढ़ाये
उत्कृष्ट संस्कृति की अलख हर दिल में जगाये
निष्ठा और लगन से नयी पीढ़ी को अपने संस्कार बताये
भारत माता का मान और शान हर पल ऊपर उठाये ।

नवयुवकों का तमाम शिक्षण फिजूल है, अगर उन्होंने सद्व्यवहार नहीं सीखा।

हिन्दी दिवस और मुख्य अतिथि गाथा



डॉ. सुशील कुमार तिवारी
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी

हिन्दी दिवस की भोर मानो एक नई आभा लेकर आई थी। सूरज अपने सुनहरे रथ पर सवार होकर आकाश में थोड़ा और तेज़ चमक रहा था, परन्तु उसके ताप को भी मात दे रही थी मन के भीतर उमड़ती हिन्दी प्रेम की शीतल छाया। वातावरण में एक अलग ही उल्लास था, जैसे हर किरण हिन्दी की गरिमा का संदेश लेकर धरती पर उतर रही हो।

इस दिन का हर क्षण एक विशेष भाव से सराबोर था। गली-चौराहों से लेकर विद्यालयों और महाविद्यालयों तक, हर ओर एक अदृश्य उत्सव-सा पसरा था। हवा में हिन्दी शब्दों की मिठास घुली हुई थी, मानो पूरा परिवेश किसी मधुर संगीत में डूब गया हो। पक्षियों की चहचहाहट भी जैसे कह रही हो 'हिन्दी हमारी पहचान है, हिन्दी हमारी शान है।' सच तो यह है कि यह सुबह हमें याद दिलाती है कि हिन्दी मात्र एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की धड़कन, संवेदनाओं की सजीव अभिव्यक्ति और राष्ट्र की आत्मा है।

आज का पूरा वातावरण हिन्दीमय लग रहा था। पेड़ों की पत्तियाँ भी जैसे शुद्ध खड़ी बोली में सरसराने लगी थीं और हवा झोंकों में 'हिन्दी-हिन्दी' का घोष कर रही थी। हिन्दी दिवस की गहमागहमी चल ही रही थी कि अचानक मोबाइल की घंटी टुनटुनाई और एक परिचित की आवाज़ कानों में घुसी। ''भाई साहब (आपको हिन्दी दिवस के कार्यक्रम में 'मुख्य अतिथि' बनना है।''

'मुख्य अतिथि' शब्द कानों में पड़ते ही मैं तो ऐसे उछल पड़ा मानो हिन्दी ने अचानक मुझे हिन्दी-सेनापति घोषित कर दिया हो। मन ही मन मैंने कहा- 'वाह रे हिन्दी जैसे अंधे को दो आँखें मिल जाएँ, वैसे ही तूने मुझे पहचान और सम्मान दे दिया।' अब तक मैं तो बस हिन्दी का एक प्राध्यापक था, जो कभी किताबों की धूल झाड़ता, कभी बच्चों की कॉपियों में गड्ड-मड्ड व्याकरण सुधारता। लेकिन आज तो हिन्दी ने मुझे पलक झपकते 'राष्ट्रगौरव' की सूची में शामिल कर दिया।

जिज्ञासावश मैंने पूछ ही लिया, कहाँ और कैसा अतिथि?

उधर से उत्तर ऐसा मिला मानो मैंने कोई भयंकर अपराध कर दिया हो। उनकी आवाज़ में वही तेवर था जो किसी थानेदार की 'गंभीर चेतावनी' में होता है।

देखिए, हिन्दी दिवस है और आप हिन्दी के प्राध्यापक। तो आपसे बेहतर मुख्य अतिथि और कौन हो सकता है? आपकी स्वीकृति पहले ही दर्ज मान ली गई है। आयोजन समिति बाद में आपसे संपर्क करेगी, इतना कहकर उन्होंने फोन काट दिया। उनका यह आदेश ऐसे लगा जैसे न्यायाधीश ने हथौड़ा पटककर अंतिम निर्णय सुना दिया हो। मैं हतप्रभ जरूर हुआ किंतु मन ही मन मुस्कुराया- 'चलिए, हिन्दी ने आखिर मेरी बोली लगा ही दी। अब तक तो मैं बस हिन्दी पढ़ाता था, पर आज हिन्दी मुझे पढ़वाने जा रही है मुख्य अतिथि की कुर्सी पर बिठाकर ।

कुछ क्षण पश्चात् आयोजन समिति का फोन आ गया, और उधर से स्वर ऐसा था जैसे कोई ताजपोशी की घोषणा कर रहा हो- 'आप हमारे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे।' यह सुनते ही दिल बाग-बाग हो गया। मैंने भी तत्काल अपनी हिन्दी-प्रेमी छाती पर हाथ रखकर विनम्रता से 'जी' कह दिया। क्षण भर को लगा जैसे हिन्दी ने मुझे तिलक कर के आशीर्वाद दिया हो- 'जा पुत्र मंच पर तू ही मेरा अवतार है।' लेकिन तभी कुछ प्रश्न ऐसे आए, जिन्होंने मेरे अरमानों की उड़ान को जैसे पंखों से बाँध दिया। ''जी... आप किस गाड़ी से आएँगे? आपके पास कौन सी कार है?''

मैंने बड़ी सहजता से कहा, 'कार तो नहीं है, बाइक है।' बस इतना कहना था कि उधर जैसे रेगिस्तान में ऊँट घुटनों के बल बैठ गया हो। कुछ क्षणों बाद शीतलहर जैसी ठंडी आवाज़ तैरती हुई आई- 'ठीक है... हम आपको सूचित करेंगे।'

सूचित होने की प्रतीक्षा में मैं भी 'सूचना-प्रेमी चातक पक्षी' बन गया। मैंने अपनी मुख्य अतिथि बनने की तैयारी शुरू कर दी। हिन्दी के इतिहास की मोटी-मोटी किताबें पलटने लगा। याद करने लगा, 'राजा राममोहन राय हिन्दी में कितने निपुण थे या भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कितनी बार कलम को पंखा समझकर झलते-झलते साहित्य को जीवित रखा।' मन में विचारों का समंदर मचलने लगा 'कबीर कोट करूँ या तुलसीदास का प्रसंग सुनाऊँ?'

मुख्य अतिथि की 'मुख्य भाषा' यानी कि 'भाषण' का रिहर्सल भी मन-ही-मन करता रहा। फिर 'परिधान-प्रकरण' की बारी आई। मैंने वह कुर्ता निकाला जिसे पहनते ही लोग समझ लें कि यह आदमी 'बिलकुल विद्वान' है। ऊपर से चश्मा लगाया ताकि विद्वता के साथ-साथ 'गंभीरता' भी झलके। मन ही मन सोचता रहा 'मंच पर जाते ही लोग माला पहनाएँगे, फोटो खिंचाएँगे और तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा हॉल गूँज उठेगा।'

इसी स्वप्निल जगत में डूबा दिन संध्या की ओर सरक गया, किन्तु आयोजन समिति की ओर से पुनः कोई संदेश न मिला। मैंने घड़ी देखी, कॉल-लॉग देखा, मोबाइल का नेटवर्क चेक किया यहाँ तक कि एक बार तो मोबाइल की बैटरी भी निकालकर दोबारा लगाई कि कहीं 'सूचनाएँ घुसने में अटक तो नहीं गईं।'

आखिरकार धैर्य का बांध टूट गया। मैंने खुद फोन मिलाया। लेकिन आयोजन समिति का फोन तो मानो 'संन्यास ले चुका' था। घंटी बजी, पर किसी ने उठाने की कोशिश तक न की। शायद फोन को भी मुँह मोड़ने की ट्रेनिंग दे दी गई थी। पूरे दिन इंतजार के बाद भी आखिरकार कोई संदेश नहीं आया और हमारे मुख्य अतिथि बनने का सपना पूरा होते-होते अधूरा ही रह गया।

हिन्दी के प्रति उमड़ता प्रेम अब धीरे-धीरे संशय की धुंध में घिरने लगा था। मन में विचारों की आँधी ऐसी उठ रही थी मानो कागज़ों के ढेर को तूफ़ान उड़ा ले जा रहा हो। हिन्दी दिवस आयोजन से जुड़े अनेक प्रश्न सिर उठाए खड़े थे- क्या कार्यक्रम स्थगित हो गया? या फिर कोई और रहस्यमय कारण था?

मैं इन प्रश्नों को झटककर भुलाने ही वाला था कि तभी सूत्रों से खबर टपकी। पता चला, जिस मंच पर मुझे 'मुख्य अतिथि' बनाने का स्वप्न दिखाया गया था, वहाँ कोई और ही महामहिम विराजमान थे। और हाँ, वे हिन्दी-प्रेमी नहीं थे, बल्कि एक आंग्लभाषी, कोल इंडिया के रसूखदार अधिकारी।

अब असली रहस्य पर से परदा उठ चुका था- मंच पर बैठने का टिकट हिन्दी-प्रेम से नहीं मिलता, वह तो चमचमाती चारपहिया की हेडलाइटों से जारी होता है। यहाँ हिन्दी केवल बहाना थी, जबकि निर्णायक था, गाड़ी का रुतबा।

हिन्दी ज्ञान कितना है, हिन्दी दिवस की आत्मा क्या है- इससे कोई सरोकार नहीं। बस मुख्य अतिथि कार से उतरे और श्रोता एवं दर्शक के बीच रौब जमाते हुए मंच पर चढ़ें, यही काफी है। शायद श्रोता और आयोजन समिति को किसी ऐसे ही अतिथि की आवश्यकता थी। मैंने दिल में हिन्दी को प्रणाम किया- जय हो हिन्दी भाषा (तुम्हारी सेवा की चाह में बाइक से आने वाला प्राध्यापक मंच पर नहीं चढ़ पाया, लेकिन कार वाले को तुम्हारा आशीर्वाद मिल गया।

हिन्दी दिवस हो या कोई और दिवस, अब कार्यक्रमों की सफलता मंच, माइक और महंगे मेहमानों पर टिकी है। भाषा की आत्मा, उसके सेवक और उसका असली प्रेम सब कुछ कार के पीछे धूल खाते हैं। अब हिन्दी केवल दिल की भाषा नहीं रही, बल्कि उसका सम्मान भी दिल से नहीं, धन और दिखावे से जुड़ गया है। मंचों पर हिन्दी प्रेम नहीं, मुख्य अतिथि की गाड़ी और उसकी हैसियत आंकी जाती है। जो जितना बड़ा पद, जितनी बड़ी कार और जितना भारी बैंक बैलेंस, वही हिन्दी का सबसे बड़ा सेवक समझा जाता है। मानों हिन्दी अब भावनाओं से नहीं, इंजन की घनघनाहट और रुपयों की खनक से बोलती है।



शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत



डॉ. रश्मि तिवारी
सहायक प्राध्यापक - संगीत

शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत एक वृक्ष की दो शाखाएँ हैं। दोनों विधाओं में विकास की दिशाएँ स्वतंत्र हैं। दोनों ही प्रकार प्रौढ़ संगीत शैलियों के दो विकसित रूप हैं। शास्त्रीय संगीत की प्रेरणास्रोत व्यक्ति एवं शास्त्र दोनों ही हैं। यह शास्त्र के नियमों से बंधा है। इसमें स्वतंत्रतापूर्वक विचरण का अधिकार नहीं है। जबकि लोकगीतों का प्रेरणास्रोत जनमानस है, उसका विकास एवं संचरण क्षेत्र अधिक विस्तृत है। शास्त्रीय संगीत के लिए शास्त्र विशेष तथा विशेष प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता होती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत व्यक्तिगत साधना का विषय है, जबकि लोक संगीत सामूहिक साधना का। जीवन और संगीत के नैसर्गिक संबंध का जितना वास्तविक परिचय हमें लोक संगीत द्वारा मिलता है, उतना शास्त्रीय संगीत से नहीं। शास्त्रीय संगीत के स्वरूप का निर्माण और विकास मुख्यत: प्रतिभा एवं बुद्धि के समन्वयात्मक प्रयत्न से होता है और इसीलिए उसका सरल एवं निश्छल सौन्दर्य प्राय: दब सा जाता है। लोक संगीत कभी भी शास्त्रीय पक्ष को प्राप्त नहीं करता है न ही शास्त्रीय संगीत लोक पक्ष को प्राप्त करता है। संगीत के ये दोनों पक्ष अनादि काल से

एक-दूसरे के समकक्ष चलते आये हैं और संगीत के विशिष्ट प्रेमियों ने दूसरी शैली शास्त्रीय संगीत को अपनाया।

शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति का माध्यम लोक संगीत को माना जाता है, परन्तु इसकी पुष्टि के अनेक प्रयास किये गए किन्तु निश्चित परिणाम आज तक सामने नहीं आया है। लोक संगीत सर्वसाधारण की गेय शैली है परन्तु इस शैली में यदि शास्त्रीय संगीत के नियमों का समावेश किया जाता है तो वह लोक संगीत प्रभावशाली नहीं बन सकता है। शास्त्रीय संगीत जैसा कि नाम से विदित है कि यह शास्त्रीय नियमों एवं समय से बंधा रहता है उसी तरह लोक संगीत का कोई शास्त्र नहीं होता है, यह अवसरों के साथ जुड़ा रहता है। अतः शास्त्रीय संगीत के शास्त्रानुसार एक राग को निश्चित समय में ही गाते है एवं लोक संगीत समय की सीमा में नहीं बंधा होता है, ये गीत अवसरों के अनुसार गाये जाते हैं।

शास्त्रीय संगीत की कोई भी रचना केवल एक राग पर आधारित होती है, यह शास्त्रीय नियम के अनुसार आवश्यक है, किन्तु लोक गीतों में ऐसी अनिवार्यता नहीं होती है। लोक संगीत पूर्णतः शास्त्र की जटिलताओं से मुक्त है, परन्तु उसका शास्त्र न होते हुए भी कुछ परम्पराएँ है, कुछ मर्यादा है। शास्त्रीय संगीत के राग जिस प्रकार समय को ध्यान रख कर गाये-बजाये जाते हैं, उसी तरह लोक संगीत अवसर विशेष पर गाये जाते हैं। शास्त्रीय संगीत में खटका, मुर्की, गमक और स्वरों का विशेष घुमाव-फिराव रहता है और इसके अपने कुछ विशिष्ट घराने होते हैं। लोक संगीत में भी घराने की तरह जातिगत गायकी की छाप रहती है। शास्त्रीय संगीत में जिस तरह राग की पकड़ होती है उसी तरह लोक संगीत भी अपनी विशेष धुन, गूंज एवं लय से अलग ही पहचाने जा सकते हैं। अतः दोनों ही संगीत शैलियों का उद्देश्य जनमानस का मानसिक एवं सामाजिक मनोरंजन ही है।

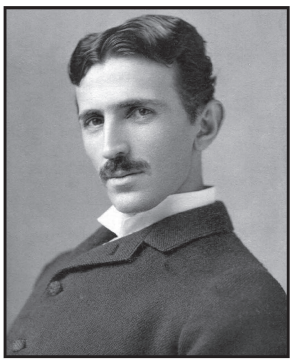

"The scientists of today think deeply instead of clearly. One must be sane to think clearly, but one can think deeply and be quite insane."

- Nikola Tesla

योग, ध्यान, सुदर्शन क्रिया और सात्विक आहार : स्वस्थ मन, शरीर और समग्र जीवन की आधारशिला



डॉ. सरोजबला श्याग बिश्नोई
सहायक प्राध्यापक–गृह विज्ञान

आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में युवा वर्ग सबसे अधिक दबाव, तनाव और असंतुलित जीवनशैली से जूझ रहा है। पढ़ाई का दबाव, कैरियर की अनिश्चितता, सोशल मीडिया की तुलना और बिगड़ती दिनचर्या–इन सबका सीधा असर हमारे मन और शरीर पर पड़ता है। ऐसे समय में योग, ध्यान, सुदर्शन क्रिया और सात्विक आहार केवल प्राचीन परंपराएँ नहीं, बल्कि वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित समाधान बनकर उभरे हैं।

योग: शरीर और मन का संतुलन

योग का अर्थ केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, श्वास और चेतना का समन्वय है। आज विश्वभर में 180 से अधिक देशों में योग अपनाया जा चुका है। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ योग में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, नियमित योगाभ्यास करने वाले लोगों में तनाव हार्मोन कॉर्टिसोल का स्तर औसतन 25–30 प्रतिशत तक कम पाया गया।

योगासन जैसे ताडासन, भुजंगासन और वृक्षासन शरीर की लचीलापन बढ़ाते हैं, रीढ़ को मज़बूत करते हैं और रक्त संचार को बेहतर बनाते हैं। इसके साथ ही प्राणायाम जैसे अनुलोम–विलोम और कपालभाति फेफड़ों की क्षमता बढ़ाकर शरीर को अधिक ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जिससे ऊर्जा और एकाग्रता में वृद्धि होती है।

ध्यान: मन की स्वच्छता

यदि योग शरीर की सफ़ाई है, तो ध्यान मन की सफ़ाई। आज के डिजिटल युग में हमारा मन लगातार सूचनाओं से भरा रहता है, जिससे मानसिक थकान, चिंता और अनिद्रा बढ़ती है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल की एक रिसर्च के अनुसार, रोज़ाना 10–15 मिनट का ध्यान करने से मस्तिष्क के उस हिस्से (Amygdala) की सक्रियता कम होती है जो डर और तनाव से जुड़ा होता है।

ध्यान व्यक्ति को वर्तमान क्षण में जीना सिखाता है। यह आत्म–जागरुकता बढ़ाता है, निर्णय क्षमता को स्पष्ट करता है और भावनात्मक संतुलन विकसित करता है। विद्यार्थियों में ध्यान अभ्यास से एकाग्रता में 20 प्रतिशत तक सुधार देखा गया है. जिससे पढ़ाई और रचनात्मकता दोनों में लाभ मिलता है।

सुदर्शन क्रिया: श्वास के माध्यम से परिवर्तन

सुदर्शन क्रिया एक विशेष लयबद्ध श्वास तकनीक है, जिसे आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा विश्वभर में सिखाया जाता है। यह तकनीक श्वास की गति और गहराई के माध्यम से तंत्रिका तंत्र को संतुलित करती है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (NIH) से संबद्ध अध्ययनों के अनुसार, सुदर्शन क्रिया करने वाले लोगों में :

- अवसाद के लक्षणों में 60–70 प्रतिशत तक कमी
- नींद की गुणवत्ताा में उल्लेखनीय सुधार
- इम्यून सिस्टम की मजबूती

यह क्रिया शरीर में जमा भावनात्मक तनाव को स्वाभाविक रूप से बाहर निकालती है, जिससे व्यक्ति हल्का, शांत और ऊर्जावान महसूस करता है। कॉलेज छात्रों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि यह परीक्षा तनाव और भावनात्मक उतार-चढ़ाव को संतुलित करती है।

सात्विक आहार: जैसा अन्न, वैसा मन

भारतीय दर्शन में कहा गया है- 'जैसा अन्न, वैसा मन।' सात्विक आहार का सीधा संबंध मानसिक शुद्धता और शारीरिक स्वास्थ्य से है। सात्विक भोजन में ताजे फल, हरी सब्ज़ियों, साबुत अनाज, दालें, दूध और मेवे शामिल होते हैं। यह भोजन हल्का, पोषक और आसानी से पचने वाला होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, पौधों पर आधारित संतुलित आहार अपनाने से हृदय रोगों का खतरा 30 प्रतिशत तक कम हो सकता है। सात्विक आहार न केवल पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है, बल्कि मन को शांत और स्थिर बनाता है। इसके विपरीत अत्यधिक तामसिक और जंक फूड चिंता, आलस्य और चिड़चिड़ापन बढ़ाते हैं।

मन शरीर का गहरा संबंध

आधुनिक विज्ञान अब उस सत्य को स्वीकार कर रहा है जिसे भारतीय परंपरा हज़ारों वर्षों से जानती थी-मन और शरीर अलग नहीं हैं। तनाव सीधे इम्यून सिस्टम को कमजोर करता है, जबकि सकारात्मक मानसिक अवस्था रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाती है।

योग, ध्यान, सुदर्शन क्रिया और सात्विक आहार मिलकर:

- हार्मोनल संतुलन सुधारते हैं
- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं
- आत्मविश्वास और सकारात्मकता विकसित करते हैं

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अनुसार, माइंड-बॉडी प्रैक्टिस अपनाने वाले लोगों में जीवन संतुष्टि का स्तर औसतन 40 प्रतिशत अधिक पाया गया।

स्वस्थ जीवन की ओर एक कदम

स्वस्थ जीवन का अर्थ केवल बीमारी का अभाव नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन है। कक्लेज जीवन वह समय है जब आदतें बनती हैं और दिशा तय होती है। यदि इस उम्र में योग, ध्यान और सही आहार को जीवनशैली का हिस्सा बना लिया जाए, तो यह निवेश जीवनभर का लाभ देता है।दिन की शुरुआत कुछ मिनट के प्राणायाम से, दिन में सजग भोजन और रात को थोड़े ध्यान से ये छोटे कदम बड़े परिवर्तन ला सकते हैं।

निष्कर्ष

योग, ध्यान, सुदर्शन क्रिया और सात्विक आहार कोई अलग-अलग अभ्यास नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन दर्शन हैं। ये हमें भीतर से मज़बूत बनाते हैं, ताकि हम बाहरी चुनौतियों का सामना शांति और स्पष्टता के साथ कर सकें। आज की पीढ़ी के लिए यह केवल स्वास्थ्य का विकल्प नहीं, बल्कि एक आवश्यकता है।स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है और स्वस्थ मन ही एक संतुलित, सार्थक और आनंदमय जीवन की कुंजी है।



महिला उत्पीड़न तथा यौन शोषण एवं जाति भेदभाव संबंधी कानून



डॉ. प्रभा राज
सहायक प्राध्यापक – रसायन शास्त्र

महिला उत्पीड़न कई रुपों में हो सकता है– जिनमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक ,आर्थिक और यौन उत्पीड़न शामिल है। महिला उत्पीड़न, यौन शोषण एवं जाति भेदभाव संबंधी प्रमुख कानून निम्नलिखित हैं–

1. महिला पर हाथ उठाने पर भारतीय दंड संहिता आई.पी.सी. की विभिन्न धारा जैसे 323, 354 और 509 धारा के तहत आप शिकायत कर सकते हैं।
2. महिला को गाली देने पर धारा 294 के तहत 3 महीने की क़ैद हो सकती है।
3. आईपीसी धारा 153–ए, यदि कोई व्यक्ति एस.सी./एस.टी जाति के आधार पर लोगों को भड़काने या नफरत फैलाने का काम करता है तो उस पर यह धारा लगाई जा सकती है।
4. आईपीसी की धारा 504 अब 1989 SC-ST ACT यह अधिनियम अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के सदस्यों पर जानबूझकर अपमान या जाति सूचक टिप्पणी से किसी व्यक्ति को अपमानित किया जाता है तो यह धारा लगाई जा सकती है।
5. गाली के साथ–साथ धमकी देने पर आईपीसी की धारा 506 एवं 2 साल की क़ैद का प्रावधान है।
6. मेंटली टार्चर करने पर धारा 354 (1) और 509 के तहत कार्यवाही कर सकते हैं।
7. दहेज निषेध अधिनियम 1961 एवं महिलाओं का अश्लील प्रतिनिधित्व रोकथाम एक्ट 1986/2013 के तहत कार्यवाही की जा सकती है।

महिलाओं के प्रति किये गये किसी भी अपराध के लिए राष्ट्रीय अथवा राज्य महिला आयोग में शिकायत दर्ज कराना पूर्णत: नि:शुल्क है। आपके परिवार में किसी भी महिला या बच्ची को कोई फोन पर परेशान करे या फिर अश्लील वीडियो या मैसेज भेजे तो घबराए नहीं अपितु 1091 या 112 पर कॉल कर शिकायत करें तथा कंट्रोल रूम की हेल्पलाइन नंबर 2525253 पर भी आप कॉल कर सकते हैं। महिला आयोग के व्हाट्सएप हेल्पलाइन नंबर–9304264570 पर शिकायत दर्ज करा सकते हैं या पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कर सकते हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग की वेबसाइट https:@@new-gov-in पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज करा सकते हैं या डाक द्वारा शिकायत भेज सकते हैं। किसी भी प्रकार के घरेलू हिंसा पर इस नंबर पर– 7217713537 शिकायत कर सकते हैं।

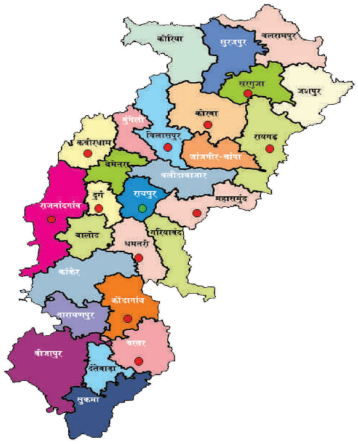



श्री भीमसेन भगत
सहायक प्राध्यापक–भूगर्भशास्त्र

उपदेश की तुलना में हम अनुकरण से कहीं ज्यादा सीखते हैं।

कविता

छत्तीसगढ़ सिर्फ़ एक राज्य नहीं
यह भारत की धड़कन है,
जहाँ धरती के नीचे खजाना है,
और ऊपर संस्कारों और संस्कृति का दीप जला हुआ है

छत्तीसगढ़ बोले हर सुबह,
मैं हूँ भारत की धरा का गर्वित स्वरूप
मुझमें है कोयले की ज्वाला, लोहा जैसी हिम्मत
और जंगलों–सी शांत प्रकृति की ताक़त

मनेंद्रगढ़ की धरती कहे, मैं इतिहास की पहचान हूँ,
करोड़ों साल पुराने फॉसिलों की मैं जान हूँ।
यहाँ की चट्टानों में गूंजती है आदिकाल की बात,
जहाँ धरती ने खुद बयां की अपनी जीवन की सौगात

कोरबा की कोयले की अंधेरी गहराई
देश के उद्योगों में लाए उजियाई
भिलाई का लोहा बना भारत की ढाल
शक्तिशाली इस्पात से करे हर संकट का हलाल

बालोद, जशपुर, सूरजपुर, और कवर्धा के गर्भ में है सोने की चमक
धरती की सांसों में बसी है स्वर्णिम रेखाओं की दमक
ये धूप नहीं, ये धरा की मुस्कान है
छत्तीसगढ़ की मिट्टी में छुपा रत्नों का सम्मान है

लोहा, कोयला, सोना, बॉक्साइट हर खनिज यहाँ गाता,
धरती का ये टुकड़ा, भारत का गर्व कहलाता
संस्कृति, समृद्धि और संसाधनों की भूमि यह विशाल,
छत्तीसगढ़ है खनिजों की रानी, अद्भुत और भव्य मिसाल

राजनीति में युवाओं की भागीदारी : एक अहम भूमिका



श्रीमती अनुपा तिग्गा
सहायक प्राध्यापक – राजनीति विज्ञान

''युवा देश का भविष्य है'' यह कहावत केवल एक विचार ही नहीं बल्कि प्रत्येक राष्ट्र की प्रगति का मूल मंत्र है। जब कोई देश प्रगति की ओर अग्रसर होता है तो उसमें अनुभवी व्यक्तियों के साथ-साथ युवाओं की भी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। लोकतंत्र में राजनीति वह माध्यम है जिसके जरिए आम नागरिक अपनी बात अपनी आवाज को सत्ता के गलियारों तक पहुंचाते हैं। ऐसे में यदि राजनीति में युवाओं की सक्रिय भागीदारी होगी तो वह राजनीति को अधिक सशक्त पारदर्शी और प्रगतिशील बना सकता है। राजनीति एक ऐसा साधन है जो किसी भी देश की दिशा और दशा तय करता है। क्योंकि किसी भी देश की राजनीति जितनी अच्छी होगी उस देश की स्थिति उतनी ही अच्छी होगी, चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या आर्थिक क्षेत्र। अत: एक स्वस्थ राजनीति का होना अति आवश्यक है और इसके लिए युवाओं का राजनीति में सम्मिलित होना अति आवश्यक है।

आज भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा युवाओं का है जहां 60 प्रतिशत से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है। यह समूह ऊर्जा, उत्साह, नवीन सोच और परिवर्तन की भावना से परिपूर्ण होता है उनमें किसी भी स्थिति को परिवर्तन करने का अदम्य साहस होता है परन्तु यह तभी संभव है जब युवा राजनीति में उचित रूप से सम्मिलित हों। आज हम यदि पिछले 5 पंचवर्षीय चुनावों को देखें तो हम पाते है कि उसमें युवा वर्गों की सहभागिता अत्यंत निराशाजनक है। चाहे वह उम्मीद्वार के रूप में हों या मतदाता के रूप में। हलांकि युवा राजनीति के रूचि तो रखते हैं परन्तु सक्रिय राजनीति में उनकी भागीदारी अभी भी सीमित है। परन्तु दुख की बात यह है कि आज भी अधिकांश युवा राजनीति को गंदा मानकर उससे दूरी बना लेते है। लेकिन परिवर्तन तभी संभव है जब युवा खुद आगे बढ़कर राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग ले, चाहे वो मतदान हो, जनजागारूकता अभियान हो या फिर सक्रिय 'राजनीतिक भागीदारी।

आज डिजिटल युग में युवा सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद कर रहें है लेकिन जरूरत है कि वह भागीदारी जमीनी स्तर पर दिखाई दे। कॉलेज, विश्वविद्यालय और पंचायत स्तर पर राजनीति की समझ विकसित करना आवश्यक है ताकि युवा अपने अधिकारों और कर्तव्यों दोनो के प्रति सजग बने । राजनीति में यदि ईमानदारी, नयी सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व लाना है तो युवाओं को सामने आना होगा क्योंकि जब युवा आगे बढ़ते हैं तब देश आगे बढ़ता है।

कमियाँ मंजिल तक पहुँचने का नया रास्ता दिखाती हैं।



पुस्तकालय के महत्व



श्री शरणजीत कुजूर
ग्रंथपाल

पुस्तकालय ज्ञान का भण्डार होता है। यह केवल पुस्तकों का संग्रह नहीं, बल्कि शिक्षा, अनुसंधान, आत्मविकास और सामाजिक जागरूकता का केन्द्र भी होता है।

पुस्तकालय के महत्व के बिन्दु :-

- **ज्ञान का स्त्रोत** - पुस्तकालय में विविध विषयों की पुस्तके, पत्रिकाएं, अखबार, संदर्भ सामग्री आदि उपलब्ध होती है जो ज्ञानवर्धन में सहायक होती है।
- **सूचना की सहज उपलब्धता** - इंटरनेट, डिजिटल संसाधन, ई-बुक्स और ऑनलाइन जर्नल्स के माध्यम से पुस्तकालय सूचना तक आसान पहुँच प्रदान करता है।
- **शिक्षा में सहायक** - छात्र-छात्राएं, शिक्षक और शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग अध्ययन, शिक्षण और अनुसंधान के लिये करते है।
- **विचारों का आदान-प्रदान** - पुस्तकालय विचारों अनुभवों और संस्कृति के आदान-प्रदान का मंच है। यह सामाजिक और बौद्धिक विकास में सहायक होता है।
- **समय का सदुपयोग** - पुस्तकालय एक शांत और अनुशासित वातावरण प्रदान करता है जहां व्यक्ति एकाग्र होकर अध्ययन कर सकता है।
- **पठन-पाठन की रूचि को बढावा** - पुस्तकालय पठन संस्कृति को बढ़ाता है, जिसमें छात्रों में रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति और विश्लेषण क्षमता विकसित होती हैं
- **डिजिटल साक्षरता का केन्द्र** - आज के समय में पुस्तकालय ई-लर्निंग, डिजिटल लाइब्रेरी, और तकनीकी साक्षरता को भी बढावा देता है।

पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्र

1. प्रथम सूत्र : पुस्तके उपयोग के लिए है (Books is for use)
2. द्वितीय सूत्र: प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले (Every reader his/her Book)
3. तृतीय सूत्र : प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले (Every reader its Book)
4. चतुर्थ सूत्र : पाठक का समय बचाए (Save the time of the reader)
5. पंचम सूत्र : पुस्तकालय एक विकासशील संस्था है। (The Library is a growing organism)

.एस. आर. रंगनाथ

बेरोजगारी एवं आर्थिक विकास : एक संबंधपरक अध्ययन



डॉ. नसीमा बेगम अंसारी
सहायक प्राध्यापक – अर्थशास्त्र विभाग

बेरोजगारी गंभीर रूप से आर्थिक परिदृश्य को सतत् रूप से चुनौती देते रहता है जिसके चक्रीय दुष्प्रभाव सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास की सेहत के नजरिये से चिंताजनक है। विश्व के अधिकतम आबादी वाले देश भारत में विविधतापूर्ण कार्यबल है किन्तु बेरोजगारी दर की निरंतर वृद्धिमान प्रवृत्ति ने आर्थिक विकास को दूरगामी रूप से प्रभावित किया है। उक्त संदर्भ में मानव विकास संस्थान (IHD) एवं अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा संयुक्त रूप से हाल ही में जारी India Employment Report-2024 के अनुसार भारत की कार्यशील आबादी जो वर्ष 2011 में 61% थी, वह वर्ष 2021 तक वृद्धिमान होकर 64% हो गई तथा उक्त संदर्भ में यह सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि कार्यशील आबादी का यह प्रतिशत वर्ष 2036 तक 65% पहुंच चुका होगा।

ILO की रिपोर्ट के अनुसार देश के कुल युवा बेरोजगारों में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या वर्ष 2000 की तुलना में दुगनी हो गई है, अर्थात वर्ष 2000 में कुल युवा बेरोजगारों में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या 35.2% थी जो वर्ष 2022 की अवधि तक 65.7% के उच्च स्तर तक जा पहुंची, इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत में बेरोजगारी की प्रवृत्ति उतार–चढ़ाव युक्त है। उक्त रिपोर्ट में इस तथ्य को विशेष रूप से उल्लेखित किया गया कि यदि भारत में 100 व्यक्ति बेरोजगार हैं तो उनमें 83 युवा है, जो निश्चित ही विचारणीय है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने देश में प्रथम बार पहला मासिक आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण जारी किया जिसमें अखिल भारतीय स्तर पर बेरोजगारी दर अप्रैल, 2025 में 5.1% पाई गई। ,यद्यपि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों तथा महिला–पुरुष वर्गीकरण के आधार पर इन आंकड़ों में भिन्नता विद्यमान है, जिसके अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी दर क्रमशः 12.3% एवं 17.2% रही। स्पष्ट है कि तुलनात्मक रूप से शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी दर, ग्रामीण बेरोजगारी दर से अधिक रही। इसी क्रम में पुरुषों में बेरोजगारी दर 5.2% तथा महिलाओं में यह प्रतिशत 5.8% रहा तथा भारत के विभिन्न राज्यों में भी बेरोजगारी दर में भिन्नता पाई गई है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के रूप में कोविड–19 की समाप्ति की घोषणा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा की जा चुकी है किन्तु महामारी के झटके अभी भी आर्थिक विकास को प्रभावित कर रहे है। कोविड–19 ने बेरोजगारी की समस्या को अति विकराल किया है। महामारी के बाद श्रम बाजार में पुनः प्रवेश होने के बावजूद बीमार होने अथवा छुट्टी लेने के कारण समान घंटों तक काम करने में सक्षम नही हो पा रहे हैं। यद्यपि रोजगार में महिलाओं की भागीदारी में इजाफा हुआ है किन्तु लिंग के आधार पर एक उल्लेखनीय अंतर आर्थिक रूप से उभरते एवं विकासशील देशों में देखी जा रही है।

भारत में बेरोजगारी के कई कारण हैं जिनमें मजबूत औद्योगिक विकास की कमी, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार अवसरों की कमी है। उपरोक्त समग्र कारकों के कारण तकनीकी प्रगति एवं वृद्धिमान निवेश के बावजूद मानवीय श्रम का बड़ा हिस्सा निष्क्रिय एवं व्यर्थ हो जाता है जो निम्न उत्पादकता वृद्धि हेतु मोटे तौर पर जिम्मेदार माना जा सकता है। आईएलओ के महानिदेशक गिल्बर्ट हांगबो ने चेतावनी दी है की ''जीवन स्तर में गिरावट एवं कमजोर उत्पादकता के साथ-साथ लगातार मुद्रास्फीति के कारण असमानता की स्थिति पैदा हो रही है एवं सामाजिक न्याय प्राप्त करने के प्रयास कमजोर हो रहे है और बेहतर सामाजिक न्याय के बिना हम कभी भी स्थायी सुधार हासिल नहीं कर पाएंगे।'' महानिदेशक ने कार्यबल से जुड़ी चुनौतियों से शीघ्र एवं प्रभावी तरीके से निपटने का आह्वान किया।

निष्कर्षत: भारत में बेरोजगारी को कम करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे है, जिनमें कौशल विकास कार्यक्रम, बुनियादी ढांचें में निवेश एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार अवसरों का सृजन आदि। किन्तु यह पर्याप्त तभी होंगे जब सतत् नौकरी वृद्धि को बढ़ाकर देश की समृद्धि को सुरक्षित करने के लिए निरंतर सर्तकता एवं प्रभावी नीतिगत उपाय किए जाएं।

'खुशियाँ : आत्मविकास की पहली सीढ़ी'



श्रीमती स्मृति अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक - वाणिज्य

खुश रहना एक कला हैं, जब आप ये समझ जाते हैं तो एक बेहतर इंसान बनने के लिए आपको बस कुछ छोटी-छोटी आदते या नियम अपनाने चाहिए ।

1. खुश रहिए, खुश रखिए।
2. ना बुरा सोचे, ना बुरा करे ।
3. सम्मान देंगे तो सम्मान मिलेगा ।
4. अच्छा ढूँढेंगे तो अच्छा मिलेगा।
5. ना टेंशन ले ना टेंशन दे ।

वो कहते हैं ना ज़िंदगी लंबी नहीं, बड़ी होनी चाहिए इसलिए मन का हो तो अच्छा और ना हो तो और अच्छा। बस खुश रहिए, क्योंकि अगर आप खुश रहेंगे तो आप समझ पाएँगे कि आप खुद में बेहतर है और बेहतर को किसी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं होती। हम सब एक सिस्टम में काम करते हैं जहाँ हर कोई कहीं ना कहीं एडजस्ट कर रहा है, फिर चाहे वह कार्यस्थल हो या परिवार, पर इस एडजस्टमेंट में जो सबसे ज्यादा ज़रूरी हैं वो है खुश रहना। और अगर आप खुद को खुश रखेंगे तो दूसरो को भी खुश रख पाएँगें।



भारतीय फिल्में और इतिहास

श्री कमलेश पटेल
सहायक प्राध्यापक – इतिहास

भारत एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। यहां की सभ्यता हजारों वर्षों पुरानी है, जिसमें अनेक साम्राज्य, युद्ध, सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। इस ऐतिहासिक यात्रा को जनसामान्य तक पहुँचाने में भारतीय सिनेमा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। फिल्में केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने इतिहास को जीवंत कर दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने का कार्य भी किया है।

भारतीय फिल्म उद्योग की शुरुआत 1913 में दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्मित राजा हरिश्चंद्र फिल्म से मानी जाती है। यह फिल्म एक पौराणिक कथा पर आधारित थी, लेकिन उसी समय से यह स्पष्ट हो गया था कि सिनेमा केवल कल्पनाओं की दुनिया तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह संस्कृति और इतिहास को भी उजागर करेगा। समय के साथ भारतीय फिल्म उद्योग ने सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक विषयों पर कई सारगर्भित फिल्में प्रस्तुत की हैं।

इतिहास पर आधारित फिल्में उस कालखंड की घटनाओं, पात्रों, रहन-सहन, वस्त्र, भाषा और सामाजिक संरचना को सजीव रूप में प्रस्तुत करती हैं। गांधी (1982), झांसी की रानी (1953), शहीद (1965), जोधा अकबर (2008), पानीपत (2019), तान्हाजी (2020), सत्याग्रह, केसरी, पद्मावत जैसी फिल्में दर्शकों को न केवल ऐतिहासिक घटनाओं से अवगत कराती हैं, बल्कि उनमें देशभक्ति, त्याग, साहस और आत्मबल का संचार भी करती हैं।

इतिहास की किताबें अक्सर छात्रों को रूखी और कठिन लगती हैं, परन्तु जब वही इतिहास चलचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, तो वह रोचक बन जाता है। फिल्मों ने ऐतिहासिक विषयों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। ऐतिहासिक फिल्में युवाओं में देशभक्ति की भावना जागृत करती हैं। बार्डर, एलओसी, उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक, शेरशाह जैसी फिल्में समकालीन ऐतिहासिक घटनाओं को प्रस्तुत कर आज के युवा वर्ग को प्रेरित करती हैं। फिल्मों के माध्यम से पुराने रीति-रिवाज, परंपराएं, संगीत, नृत्य, वेशभूषा आदि का संरक्षण संभव हुआ है। यह सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में सहायक है। कई फिल्में ऐतिहासिक घटनाओं के बहाने सामाजिक मुद्दों पर भी प्रकाश डालती हैं। लगान एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित फिल्म थी, जिसने औपनिवेशिक कर-प्रणाली और ग्रामीण भारत की एकता को उजागर किया।

कई बार फिल्म निर्माता नाटकीयता या मनोरंजन के उद्देश्य से ऐतिहासिक तथ्यों से छेड़छाड़ करते हैं। इससे वास्तविकता और कल्पना के बीच अंतर मिट जाता है। पद्मावत और आशुतोष गोवारिकर की पानीपत जैसी फिल्मों को लेकर इतिहासकारों और सामाजिक संगठनों ने आपत्ति जताई थी। इतिहास पर आधारित फिल्मों को अक्सर

राजनीतिक दबाव, सेंसर बोर्ड की सख्ती और सामाजिक संगठनों के विरोध का सामना करना पड़ता है। इससे फिल्म निर्माण में बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में इतिहास विषय को पढ़ाने के लिए फिल्मों का सहारा लिया जा सकता है। दृश्य माध्यमों के द्वारा पढ़ाई जाने वाली बातें अधिक स्मरणीय होती हैं। विद्यार्थी यदि किसी ऐतिहासिक घटना को दृश्य रूप में देख लें, तो वे उसे लंबे समय तक नहीं भूलते। इसलिए इतिहास शिक्षा को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए फिल्मों का समुचित उपयोग आवश्यक है।

आजकल डॉक्यूमेंट्री फिल्में और बायोपिक भी लोकप्रिय हो रही हैं। जैसे- द मेकिंग ऑफ महात्मा, द लेजेंड ऑफ भगत सिंह, इमरजेंसी, ताशकंद फाइल जैसी फिल्मों में सत्य घटनाओं और व्यक्तित्वों को गंभीरता से दर्शाया गया है। ये फिल्में दर्शकों को न केवल ज्ञान देती हैं, बल्कि उन्हें सोचने पर मजबूर भी करती हैं।

आज ओटीटी प्लेटफार्म्स जैसे नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम, डिज़्नी, हॉटस्टार आदि पर भी इतिहास आधारित वेब सीरीज और फिल्में बन रही हैं। द क्राउन, सम्राट पृथ्वीराज, द टेस्ट केस, राजसी आदि ने डिजिटल युग में इतिहास को नए रूप में प्रस्तुत किया है। यह युवाओं को इतिहास से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है।

भारतीय फिल्म और इतिहास का संबंध अत्यंत गहरा है। फिल्मों ने न केवल इतिहास को जीवित रखा है, बल्कि उसे जन-सामान्य तक रोचक और प्रेरक रूप में प्रस्तुत भी किया है। यद्यपि इतिहास को फिल्म के माध्यम से प्रस्तुत करते समय सावधानी और प्रामाणिकता बनाए रखना आवश्यक है, फिर भी यह माध्यम इतिहास को लोकप्रिय और जनउपयोगी बनाने में सफल रहा है। इतिहास विषय के छात्र, शोधकर्ता और आम दर्शक- सभी फिल्मों के माध्यम से न केवल अतीत को देख सकते हैं, बल्कि उससे सीख भी सकते हैं। इस प्रकार भारतीय फिल्में केवल कला या व्यापार का माध्यम नहीं, बल्कि इतिहास को समझने और सहेजने का आधुनिक यंत्र बन चुकी हैं।

सज्जन पुरूष की वास्तविक परिभाषा यही है
कि वह कभी किसी व्यक्ति को पीड़ित नहीं करता।

स्वयं प्रेरित होकर कार्य करना
किसी बुद्धिमान व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण होता है।

कॉलेज के अकादमिक जगत में एआई (AI) का बढ़ता प्रभाव



श्री सुशील कुमार छात्रे
सहायक प्राध्यापक - समाजशास्त्र

कुछ साल पहले तक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक ऐसी अवधारणा थी जिसके बारे में हम कंप्यूटर साइंस लैब में पढ़ते थे या साइंस-फिक्शन फिल्मों में देखते थे। आज यह हमारी जेब में है, हमारे डेस्कटॉप पर है, और चुपचाप कैंपस के हर कोर्स में दाखिला ले चुका है। ChatGPT द्वारा प्रोफेसर को ईमेल लिखने से लेकर, DALL&E द्वारा प्रेजेंटेशन के लिए तस्वीर बनाने तक, AI अब भविष्य की कोई नई चीज़ नहीं रह गया है, यह एक नया, अदृश्य सहपाठी है, और यह हमें सीखने, शोध करने और कुछ नया रचने के अर्थ का मौलिक रूप से पुनर्मूल्यांकन करने के लिए मजबूर कर रहा है।

स्नातकोत्तर (Postgraduate) छात्रों के लिए, AI एक शक्तिशाली, दोधारी तलवार की तरह है। एक तरफ, यह एक क्रांतिकारी रिसर्च असिस्टेंट (शोध सहायक) है। PerpleÛity-ai और Elicit-org जैसे टूल अकादमिक साहित्य के पहाड़ों को सेकंडों में छान सकते हैं, मुख्य निष्कर्षों का सार प्रस्तुत करते हैं और प्रासंगिक पेपर सुझाते हैं। यह क्षमता थकाऊ लिटरेचर रिव्यू पर खर्च होने वाले समय को काफी कम कर देती है, जिससे शोधकर्ताओं को उच्च-स्तरीय विश्लेषण और मौलिक विचारों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अधिक समय मिलता है। AI एक 24/7 राइटिंग टयूटर के रूप में भी काम कर सकता है, जो अटपटे वाक्यों को सुधारने, स्पष्टता बढ़ाने और यहां तक कि जटिल अकादमिक शब्दावली का सरल शब्दों में अनुवाद करने में मदद करता है। राइटर-ब्लॉक से जूझ रहे या अकादमिक प्रकाशन की जटिल भाषा से निपटने वाले छात्रों के लिए, यह एक निर्विवाद संपत्ति है।

हालांकि, तलवार की दूसरी धार तेज है और नैतिक खतरों से भरी है। सबसे बड़ी चिंता अकादमिक ईमानदारी (academic integrity) की है। सहायता के लिए AI का उपयोग करने और साहित्यिक चोरी (plagiarism) करने के बीच की रेखा कहाँ है? यदि कोई AI किसी शोध-प्रबंध (dissertation) के लिए एक मुख्य तर्क उत्पन्न करता है या स्रोतों को संश्लेषित करता है, तो यह वास्तव में किसका काम है? इस अस्पष्टता ने विश्वविद्यालयों को अपनी अकादमिक ईमानदारी की नीतियों को अपडेट करने के लिए मजबूर कर दिया है। इन उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता उन कौशलों के लिए भी खतरा पैदा करती है, जिन्हें एक स्नातकोत्तर शिक्षा विकसित करने के लिए बनाया गया है- जैसे कि महत्वपूर्ण सोच (critical thinking), समस्या-समाधान, और स्वतंत्र रूप से जानकारी को संश्लेषित करने की क्षमता। अगर हम अपने काम का 'सोचने' वाला हिस्सा एक एल्गोरिथ्म को सौंप देते हैं, तो हमारे पास डिग्री तो होगी, लेकिन उसे सार्थक बनाने वाली बौद्धिक क्षमता नहीं होगी।

इसके अलावा, हमें AI की अंतर्निहित सीमाओं से भी सावधान रहना चाहिए। ये मॉडल 'मतिभ्रम' (hallucinate) कर सकते हैं, यानी आत्मविश्वास से गलत जानकारी प्रस्तुत करना या ऐसे स्रोतों का हवाला देना

जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। वे अपने ट्रेनिंग डेटा में मौजूद पूर्वाग्रहों को भी बढ़ावा देते हैं, जो कि अगर गंभीरता से न जांचा जाए तो शोध के परिणामों को प्रभावित कर सकता है।

अकादमिक जगत के लिए आगे का रास्ता AI पर प्रतिबंध लगाना नहीं, बल्कि 'AI साक्षरता' (AI literacy) को बढ़ावा देना है। प्रगतिशील शिक्षक असाइनमेंट को 'AI-प्रूफ' बनाने के लिए फिर से डिजाइन कर रहे हैं, और वे कक्षा में चर्चा, मौखिक परीक्षाओं (viva voce), और ऐसी परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जिनके लिए व्यक्तिगत चिंतन और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग की आवश्यकता होती है, ऐसे कार्य जहाँ मानवीय अंतर्दृष्टि अपरिहार्य बनी हुई है।

अंतत:, AI एक उपकरण है, ठीक वैसे ही जैसे कैलकुलेटर या इंटरनेट थे। इसका उपयोग बौद्धिक महल बनाने या आलसी शार्टकट अपनाने के लिए किया जा सकता है। ज्ञान की सीमाओं पर खड़े स्नातकोत्तर छात्रों के रूप में, हमारी ज़िम्मेदारी स्पष्ट है। हमें इस तकनीक का उपयोग एक बैसाखी के रूप में नहीं, बल्कि एक उत्प्रेरक (catalyst) के रूप में करना चाहिए। चुनौती मशीन को मात देने की नहीं है, बल्कि इसका लाभ उठाकर खुद को और अधिक होशियार, कुशल और विवेकशील शोधार्थी बनाने की है।

मनेन्द्रगढ़ की सुंदरता

श्री सुशील कुमार छात्रे
सहायक प्राध्यापक - समाजशास्त्र

हरी-भरी वादियों का आँचल, मनेन्द्रगढ़ की शान निराली,
पर्वतमालाओं ने घेरा है, छटा यहाँ की बहुत मतवाली।
भोर यहाँ जब चादर ओढ़े, धुंध में लिपटी हरियाली,
प्रकृति ने खुद इसे सँवारा, जैसे हो फूलों की डाली।
देखो अमृतधारा का वैभव, झर-झर झरता अमृत पानी,
चाँदी सी बहती जलधारा, कहती अपनी अमर कहानी।
शिव शंकर का धाम यहीं पर, गूँजे पावन मीठी वाणी,
शांत सरोवर, शीतल जल है, धन्य हुई ये भूमि दानी।
कर्मघोंघा की सुनो पुकार, घने वनों के बीच समाया,
चटानों से टकराकर जल, मोतियों सा है बिखराया।

एक ओर प्रकृति का नर्तन, दूजी ओर कोयलांचल छाया,
काला सोना गर्भ में जिसके, जिसने देश को बल पहुँचाया।
श्रमिकों के पसीने से सिंचित, इस माटी का कण-कण भाया,
ऊर्जा का ये स्रोत प्रबल, जिसने जग को रोशन कराया।
पहाड़ों के ऊपर से देखो, वादी का अद्‌भुत नज़ारा,
बादल छूते लगते शिखरों को, बहती शीतल पवन की धारा।
कहीं झरनों का मधुर संगीत, कहीं खान का शोर है न्यारा,
दोनों रूपों में सजता है, यह अपना मनेन्द्रगढ़ प्यारा।
छत्तीसगढ़ का गौरव है ये, प्रकृति का अनुपम गलियारा,
इस धरती को नमन है मेरा, ये स्वर्ग से भी सुंदर सारा।

संस्कार दूषित होने से ज्ञान भी दूषित हो जाता है।

मानव और प्रकृति



श्री रामनिवास गुप्ता
अतिथि व्याख्याता
समाजशास्त्र

प्रकृति हजारों हाथों से ,
मानव को शुद्ध, वायु, जल, अन्न,
और प्राकृतिक संपदाओं से पोसती रही,
ये सम्पदा है अनमोल ,
सुख सुविधाओं से मत तोल।
मानव स्वार्थ के प्रभाव में बहता रहा,
हजारों तरह के प्रकृति को लूटता रहा,
पेड़ो को काटता रहा, हवा में जहर घोलता रहा ,
महत्वाकांक्षाओं के जंगल में बढ़ता रहा ।
प्रकृति कब तक सहेगी अत्याचार,
दुर्दम मानव ने किया लाचार
प्रकृति का कोई इशारा न समझ पाया
आखिर मानव ने सागर को उकसाया,
सूरज भी आग बबूला हो गया ,
प्रकृति का सारा चक्र गड़बड़ाया,
मानव दो दिन मन में पछताया,
फिर भी अपनी आदत से बाज नहीं आया
मानव हर दम सुविधाओ को ललचाये ,
पर्वतों को भी कटवाये,
घर-घर, एसी, रेफ्रिजरेटर, लगवाए,
ग्लोवल वार्मिंग की चेतावनी भी रोक न पाए।
इसीलिये जीवन की मर्यादा टूट गए,
मानव नित नए बीमारी से ग्रसित हो गए।

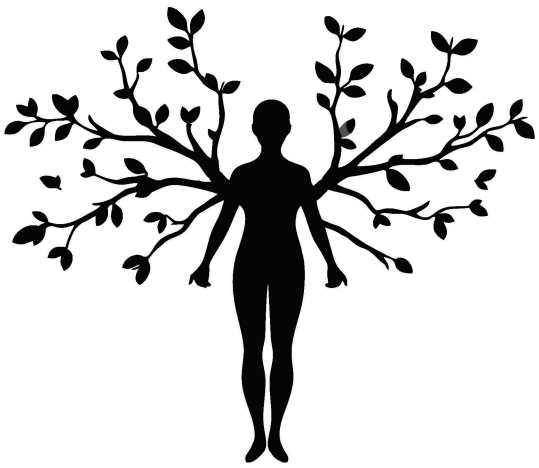

मौन के वृक्ष पर शांति के फल लगते हैं।

यदि आप सच कहते हैं तो आपको कुछ याद रखने की जरूरत नहीं है।

सफलता की कुंजी



डॉ. रेनू प्रजापति
अतिथि व्याख्याता - रसायन शास्त्र

''खुद को सरल और मिलनसार बनाएं रखें।
सच्चे और ईमानदार बनें रहें।
पूरी दुनिया आप सें प्यार करेगी।''
इसे सरलरखें:
जब आप किसी भी काम को करते है
तो उसे स्पष्ट और समझनें में
आसान बनानें की कोशिश करें।
इससे चीजों को करना
और समझना आसान हो जाता है।

इसे ईमानदार रखें:
अपने कार्यों और शब्दों मे सच्चे रहें।
झूठ बोलनें या धोखा देनें से बचे।
ईमानदारी से काम करनें से
दूसरों का विश्वास जीतना आसान हो जाता है
और आप खुद के बारे में बेहतर महसूस करते है।

इसे वास्तविक रखें:
इसका मतलब है कि
दिखावा करनें से बचें।
जो आप नहीं हैं,
वह बननें की कोशिश न करें।
अपनी वास्तविक पहचान को स्वीकार करें
और दूसरों के सामनें
खुद को उसी रूप में पेश करें।

यह तीनों बातें न केवल व्यक्तिगत जीवन में
बल्कि व्यावसायिक जीवन में भी महत्वपूर्ण हैं।
एक सरल, ईमानदार और
वास्तविक दृष्टिकोण सफलता की कुंजी है।

Quantum Computers : The Next Big Thing in Tech!



Mr. Sunil Kumar Gupta
Asst. Prof. - Physics

Imagine a computer that can solve big problems in just a few seconds — problems that would take today's fastest computers many years. That's what quantum computers can do!

Normal computers work using 0s and 1s — these are called bits. But quantum computers use qubits, which are special. A qubit can be both 0 and 1 at the same time because of something called superposition. This helps quantum computers do many things at once, making them much faster and smarter.

There's another cool idea called entanglement. It means that two qubits can be linked together. If you change one, the other changes too — even if they are far apart. It sounds strange, but it's a real part of quantum science.

Right now, quantum computers are still being developed. Big companies like Google, IBM, and Microsoft are working hard to improve them. In the future, these computers could help scientists make new medicines, predict the weather better, make AI (Artificial Intelligence) smarter, and protect our data in new ways.

We may not have quantum computers at home soon, but they are going to be very important. They can change the world — and the future of technology looks very promising because of them!

भारत में साइबर अपराध और महिलाएं



श्री अभिषेक कुमार सिंह
अतिथि व्याख्याता – कम्प्यूटर विज्ञान

आज के डिजिटल युग में इंटरनेट हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है । मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, ऑनलाइन बैंकिंग और ई-कामर्स जैसी सुविधाओं ने हमारे जीवन को आसान बनाया है, लेकिन इसके साथ ही साइबर अपराधों का खतरा भी तेजी से बढ़ा है। भारत में महिलाओं के संदर्भ में साइबर अपराध की स्थिति चिंताजनक है, क्योंकि महिलाएं अक्सर इस अपराध का आसान निशाना बनती है।

महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध कई रूपों में सामने आते हैं, जैसे – साइबर बुलिंग, मॉर्फिंग, ऑनलाइन स्टॉकिंग, फेक प्रोफाइल बनाना, अश्लील संदेश भेजना, बैंक फ्रॉड, ईमेल हैकिंग आदि। इन अपराधों का असर केवल महिला की निजता और सुरक्षा पर ही नहीं पड़ता, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव डालता है । कई मामलों में पीड़ित महिलाएं समाज के डर और बदनामी के भय से शिकायत दर्ज तक नहीं करती। सोशल मीडिया महिलाओं के लिए एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जो उन्हें अपनी प्रतिभा और विचार रखने का अवसर देता है, लेकिन यही प्लेटफॉर्म अपराधियों के लिए शोषण का माध्यम भी बन जाता है। नकली प्रोफाइल बनाकर महिलाओं की तस्वीरों का गलत इस्तेमाल, भ्रामक जानकारी फैलाना और ब्लैकमेल करना आम हो गया है। भारत सरकार ने साइबर अपराधों से निपटने के लिए कई कदम उठाए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियिम (IT Act, 2000) और भारतीय दंड संहिता (IPC) के अंतर्गत महिलाओं से जुड़े साइबर अपराधों पर कठोर दंड का प्रावधान है । इसके अलावा, गृह मंत्रालय ने राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल भी शुरू किया है, जहां ऑनलाइन शिकायत दर्ज की जा सकती है । कई राज्यों में साइबर क्राइमसेल भी सक्रिय रूप से काम कर रही है।

हालांकि, केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है। सबसे जरूरी है कि महिलाएं साइबर जागरूकता बढ़ाएं। मजबूत पासवर्ड का उपयोग, सोशल मीडिया पर निजी जानकारी साझा करने से बचना, दो-स्तरीय सत्यापन (Two-factor authentication) अपनाना और संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करना जैसी आदतें उन्हें सुरक्षित रख सकती हैं। साथ ही, माता-पिता और शैक्षणिक संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे लड़कियों को डिजिटल सुरक्षा के बारे में शिक्षित करें। समाज को भी इस समस्या के प्रति संवेदनशील होना होगा। पीड़ित महिला को शर्मिंदा करने की बजाय उसका समर्थन करना जरूरी है। मीडिया और सिविल सोसायटी संगठनों को भी जागरूकता फैलाने में योगदान देना चाहिए।

अंतत:, साइबर अपराध केवल तकनीकी चुनौती नहीं बल्कि सामाजिक चुनौती भी है। महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार, समाज और खुद महिलाओं के संयुक्त प्रयास आवश्यक है। यदि महिलाएं डिजिटल दुनिया में सुरक्षित महसूस करेंगी, तभी वास्तविक अर्थो में 'डिजीटल इंडिया' का सपना सफल होगा।



समस्या का समाधान

डॉ. रामजी गर्ग
अतिथि व्याख्याता – वाणिज्य

किसी शहर में एक व्यक्ति था। वह हमेशा दुखी रहा करता था उसे हमेशा ऐसा लगता था कि उससे दुखी व्यक्ति संसार में और कोई नहीं है। जब भी कोई उससे बात करता तो वह अपनी समस्याओं का बखान करने लगता थोड़ी देर में साथ वाला व्यक्ति उठकर चला जाता। इस बात से वह और परेशान हो जाता कि उसकी बात कोई सुनने वाला नहीं है। तभी उसे पता चला कि शहर में कोई महात्मा आने वाले हैं जिनके पास सभी समस्याओं का समाधान हैं। यह जानकर वह महात्मा के पास पहुँचा। उस महात्मा के साथ हमेशा एक काफिला चला करता था जिसमें कई ऊंट भी थे। महात्मा के पास पहुँचकर उस व्यक्ति ने कहा गुरुजी मैंने आपका बड़ा नाम सुना है की आप सभी समस्याओं का समाधान करते हैं। मैं बहुत दुखी व्यक्ति हूँ। मेरे इर्द–गिर्द हमेशा बहुत सारी समस्याएं रहती हैं। एक को सुलझाता हूँ तो दूसरी पैदा हो जाती है। मैं अपनी आपबीती किसी को सुनाता हूँ तो कोई सुनता ही नहीं। दुनिया बड़ी मतलबी हो गई है।

अब आप ही बताइए क्या करूँ? महात्मा ने उसकी बातें ध्यान से सुनी और कहा भाई मैं अभी तो बहुत थक गया हूँ। परंतु कल सुबह मैं तुम्हारी समस्या का समाधान अवश्य करूँगा। इस बीच तुम मेरा एक काम कर दो। मेरे ऊंटो की देखभाल करने वाला आदमी बीमार है। आज रात तुम इनकी देखभाल कर दो जब सभी ऊँट बैठ जाए तब तुम सो जाना। मैं तुमसे कल सुबह बात करूँगा और अगले दिन महात्मा ने उस आदमी को बुलाया उसकी आँखें लाल थीं। महात्मा ने पूछा तो बताओ कल रात कैसे नींद आई? व्यक्ति ने बोला गुरुजी मैं तो रात भर सोया ही नहीं। आपने कहा था जब सभी ऊँट बैठ जाए तब सो जाना पर ऐसा नहीं हुआ जब भी कोशिश करके एक ऊँट को बिठाता दूसरा खड़ा हो जाता। सारे ऊँट बैठे ही नहीं इसलिए मैं रात को सो नहीं सका। महात्मा जी ने मुस्कुराते हुए कहा मैं जानता था कि इतने ऊँट एक साथ कभी नहीं बैठ सकते। फिर भी मैंने तुम्हें ऐसा करने को कहा यह सुनकर व्यक्ति क्रोधित होकर बोला महात्मा जी मैं आपसे हल मांगने आया था पर आपने मुझे भी परेशान कर दिया । महात्मा बोले यही तुम्हारे समस्या का समाधान है। किसी व्यक्ति की समस्या इन ऊँटों की तरह ही है। एक खत्म होगी तो दूसरी खड़ी हो जाएगी। अत: सभी समस्याओं के खत्म होने का इंतजार करोगे तो कभी भी चैन से नहीं जी पाओगे। समस्याएं तो जीवन का ही अंग है। इसे महसूस करते हुए जीवन का आनंद लें। जीवन में सहज रहने का यही एक उपाय है। दुनिया के किसी भी व्यक्ति को तुम्हारी समस्याएं सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है क्योंकि उनकी भी अपनी समस्याएं हैं। महात्माजी की बात सुनकर व्यक्ति के चेहरे पर संतोष और सहज के भाव उमड़ पड़े। मानो उसे अपनी सभी समस्याओं से निपटने का अचूक मंत्र प्राप्त हो गया हो



कोयला उत्पादक क्षेत्रों का जीवन पर प्रभाव

श्री शिवानन्द साकेत
अतिथि व्याख्याता - रसायन शास्त्र

कोयला विश्वभर में ऊर्जा उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है और इसके द्वारा उत्पन्न आर्थिक लाभ बहुत महत्वपर्ण हैं। भारत जैसे विकासशील देश में, कोयला खनन उद्योग का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान है । हालांकि, कोयला खनन के समाजिक, पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । कोयला उत्पादक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन पर इसका प्रभाव व्यापक और जटिल है ।

पर्यावरणीय प्रभाव

वायु प्रद्षण -

कोयला खनन और दहन के कारण वायु प्रदूषण एक प्रमुख समस्या है। कोयला खदानों और बिजली संयंत्रों से निकलने वाले धूलकण, सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी हानिकारक गैसें वायु की गुणवत्ता को खराब करती हैं। यह वायु प्रदूषण सांस की बीमारियों जैसे अस्थमा और ब्रोंकाइटिस का कारण बन सकता है, जिससे स्थानीय निवासियों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

जल प्रदूषण -

खनन गतिविधियों के दौरान उत्पन्न रासायनिक अपशिष्ट और खदानों से निकलने वाला मलबा जल स्रोतों को प्रदूषित करता है। इससे पीने के पानी की गुणवत्ता पर असर पड़ता है और जलजनित बीमारियों का खतरा बढ जाता है । जल प्रदुषण से स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित है, जिससे जलीय जीवों की आबादी में गिरावट आती है।

भूमि क्षरण -

कोयला खनन से भूमि का क्षरण और परिदृश्य में परिवर्तन होता है। खुले गड़ढों और खदानों के कारण मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है, जिससे कृषि योग्य भूमि की उपजाऊ क्षमता कम हो जाती है। इससे स्थानीय किसानों की आजीविका पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव

शारीरिक स्वास्थ्य -

खनन क्षेत्रों में प्रदूषण के उच्च स्तर के कारण निवासियों में सांस संबंधी बीमारियों का प्रकोप अधिक देखा जाता है । इसके अलावा, खदानों में काम करने वाले मजदूरों को सिलिकोसिस, कोयला श्रमिकों की बीमारी और अन्य फेफड़ों की बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

मानसिक स्वास्थ्य-

निरंतर प्रद्षण और अस्थिर जीवन स्थितियों के कारण मानसिक तनाव और चिंता का स्तर भी बढ़ता है। विस्थापन और सामाजिक असुरक्षा की वजह से मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

आर्थिक प्रभाव

आर्थिक असुरक्षा-

हालांकि, कोयला खनन का आर्थिक लाभ दीर्घकालिक नहीं होता। खदानों के समाप्त होने पर लोग बेरोजगार हो जाते हैं और उन्हें स्थायी रोजगार की तलाश में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, खनन गतिविधियों के कारण कृषि भूमि की गुणवत्ता में गिरावट से किसानों की आय प्रभावित होती है।

शिक्षा और विकास पर प्रभाव-

खनन क्षेत्रों में शिक्षा के बुनियादी ढांचे का विकास सीमित हो सकता है । प्रदूषण और स्वास्थ्य समस्याओं के कारण बच्चे नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाते, जिससे उनकी शिक्षा प्रभावित होती है।

निष्कर्ष -

कोयला उत्पादक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन अनेक चुनौतियों से भरा होता है। जबकि कोयला खनन आर्थिक लाभ प्रदान करता है, इसके पर्यावरणीय, स्वास्थ्य संबंधी और सामाजिक प्रभावों को कम नहीं आंका जा सकता। सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए खनन नीतियों में सुधार की आवश्यकता है, ताकि कोयला खनन से उत्पन्न नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके और स्थानीय निवासियों का जीवन स्तर बेहतर बनाया जा सके। इसके लिए सरकार, उद्योग और समुदायों के बीच समन्वय और सहयोग आवश्यक है।

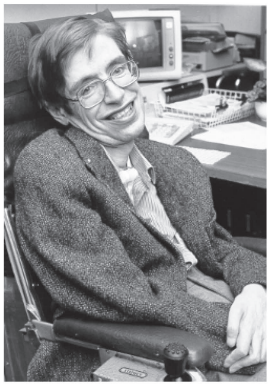

"Remember to look up at the stars and not down at your feet."

- Stephen Hawking



WARRIOR

Prof. Shrabani Chakravorty
Dept. of English

Nirupama had become very weak after her second surgery. She could hardly move from one room to the other, lest with the help of an aid or Walker. She wanted to take some rest on a grumpy afternoon, but the sound of the ring tone played on her mobile. "Who's speaking?", she asked. " I'm Ria, your neighbour, aunty." Please open the door. After quite some time the door was opened and Ria really felt sorry to see aunty's deteriorating health, but she avoided to express her feelings to the octogenarian lady, who was already suffering so much pain not only physically but also mentally, as none of her children had come to see their ailing mother, leave aside to take care of her in the old age. Ria sat on the couch placed opposite to aunty's bed, who was lovingly known as Niru aunty, being her nickname. Ria asked her, "Aunty, how are you feeling now?" "Much better " said Niru aunty. And Ria felt a bit relieved to see a faint smile on aunty's face. Ria's beautiful smile and assuring words that "you will attain good health gradually" gave a ray of sunshine to the old woman.

In the Covid 19 pandemic, when the world was going through an extremely challenging situation, it has been a very sad and tragic story of Niru aunty that Ria could sense since past 2-3 years, though they were neighbours for the last 8 years. Aunty was a working woman and had lost her husband at a young age. They had four children whom they have provided good education. They were doing well in their professional and personal life, got married well in time and were living a good life. But the other side of the coin was that not a single child was present to take care of their old and sick mother, not only in those testing times but otherwise too. Harish, the young man, working as a part time driver for her, turned out be a true warrior in helping her round the clock, during the crisis when aunty had to be hospitalized twice due to her chronic illness followed by two major surgeries. A man of little education but brave heart, he served aunty day and night without any expectations, without worrying about his own health or his family members. Ria and her husband were really astonished to see the devotion of Harish towards aunty and saluted him for his loyalty. Ria said to herself: "this poor and less educated man has shown to the world that what he has done is far more than what a daughter or a son could have done, not for any gains or charity but as his duty. God bless him! "

Niru aunty's stitches were opened after a week of her surgery and thereafter the dressing continued for almost 10 days. With the help of a day time nurse she was recovering at a snail's pace, actually age was also a major factor when it takes more time to heal. The old woman was

tired of waiting to listen to the knock on the door from her children, the hope she nestled in her heart, like every other parent, but in vain as not a single child made their presence even once. Ria and her husband Tuhin used to call or visit aunty at an interval of two or three days, and were happy to see the improvement in her health that took place slowly. They could feel the pain in her eyes and voice that has been caused due to the emptiness in her life. A little gesture from a neighbour would also touch her deeply.

Ria asked her, "Aunty, where is Harish?" We have not seen him for the past two- three days. We used to ask him quite often and used to get your updates from him. "How come you have not known that he has been tested positive for corona and has been hospitalized," said Niru aunty. "Oh My God!," Ria almost screamed to hear that. "Poor fellow". "Why God has been so unkind to him?" Tuhin added to her woe, "Don't worry, and pray for his safe and speedy recovery, he will recover soon."Ria folded her hands in prayer and closed her eyes and Tuhin could hear Ria utter the word "Amen." When people knew about it in the neighbourhood they shut themselves within the four walls of their house, panic stricken and afraid as if it is not the virus that is going to attack them but Harish's ghost is chasing them. Not a single person came to help the poor man or his family. Only Tuhin and Ria were able to lend some financial support to his family. A fort night later, it was known that Harish has been cured of the corona virus and he came out victorious from the hospital. Few days later when he came to see Niru aunty, she was more than happy as she felt all her prayers have been heard by the Almighty and she thanked God with her closed eyes and folded hands.

Ria was busy with her daily chores when she heard the beep of her mobile phone and as she reached near the mobile she could clearly see that it was a call from Niru aunty. Her heart missed a beat but she courageously picked up the call, and Ah! it was the good news of Harish's recovery from the devilish virus. She asked Ria to come and meet the brave boy, at her home. She hurriedly made her way towards aunty's home but before that she did not forget to go to the Pooja room and bowed down before God for saving Harish's life, as she felt a sense of gratitude that her prayers have been answered .Within 10 minutes she reached Niru aunty's house and was really happy to see Harish in good health. Both Niru aunty and her eyes met together and Harish could see the tears of joy falling down from their eyes and both of them yelled together, " Harish, you are a true warrior, you have not only saved other people's lives but have come out safe and sound from the tentacles of the corona virus, fighting bravely each time." Undoubtedly this wouldn't have been possible without the immense help of the doctors and medical workers for his treatment and recovery and everyone felt a great sense of gratitude.

Rohan's Dream Trip



Ms. Smriti Agrawal
Asst. Prof. - Commerce

Rohan had always dreamt of exploring Europe's historic cities and trying authentic pizza in Italy. But, his wallet seemed to have other plans. Every month, his salary would vanish into the air, leaving him wondering where it all went.

One day, Rohan decided to take control of his finances. He started tracking every single transaction, from his morning coffee to his weekend movie nights. The revelation was shocking: he was spending a small fortune on dining out and impulse buys!

Armed with this new found knowledge, Rohan created a budget that prioritized his travel fund. He cut back on unnecessary expenses, cooked his own meals, and even started a small side hustle to boost his income.

Months went by, and Rohan's savings grew. He resisted the temptation to splurge and stayed focused on his goal. Finally, the day arrived when Rohan had enough money for his European adventure.

As he wandered through Rome's Colosseum and savoured pizza in Naples, Rohan felt an immense sense of pride and accomplishment. His financial discipline had paid off, and he knew that **accounting wasn't just about numbers – it was about achieving his dreams.**

The Brave Teacher and the Pandemic Challenge



Mr. Abhishek Kumar Singh
Guest Faculty - Computer Science

During the COVID-19 pandemic, many schools around the world closed, and education faced unprecedented disruption. In a small rural village, a dedicated teacher named Manjula refused to let her students miss out on learning despite limited internet access.

Manjula bravely took on the responsibility of traveling from house to house, delivering lesson plans and teaching materials to her students while following safety precautions. She honestly communicated with parents and village leaders about the challenges and possibilities for continuing education during hard times.

Her honesty-built trust, and her bravery inspired the entire community. Not only did her students continue learning despite hardship, but her selfless commitment became a beacon of hope and integrity for everyone around.

नेक बात चाहे किसी धर्म की हो,
किसी भी व्यक्ति की हो,
उसे अवश्य ग्रहण करो।

ANTARAAGNI : THE FIRE WITHIN



Dr. Arunima Datta
Asst. Prof. - Zoology

Seema was born in a small village in Rajasthan, where dreams were often smaller than the houses themselves. Her father worked as a clerk in the Panchayat office and her mother spent her days cooking, cleaning and taking care of the family.

But Seema was different. While most girls in her class giggled about movies and weddings, she loved listening to her teachers talk about history, geography and the Constitution. Her favourite book was her Class 8 civics textbook — especially the chapter about the Indian Administrative Service.

"These people can change how villages work," she told her friend Rukmini one day. "Imagine being able to make schools better or bring water to every home!"

Rukmini laughed. "That's for rich people in cities, Seema. Girls like us don't become officers."

Seema smiled and replied softly, "Then maybe I'll be the first."

Dreams and Reality

As Seema grew older, life started testing her courage. After her 12th standard, her father said firmly, "Enough studying. We'll find you a good match soon."

Her heart sank. Marriage? At eighteen? She dreamed of studying political science in college, of seeing Delhi, of taking the UPSC exam one day.

That night, she couldn't sleep. The stars outside her window seemed to whisper, *Don't stop here.*

The next morning, she gathered her courage and said to her father, "Bapu, please give me three more years. Let me finish college. I promise I'll make you proud."

Her father frowned. "College means money — fees, books, travel. And what will people say if my daughter stays unmarried?"

Her mother, speaking softly, said, "Let her study, ji. She's not like others."

After a long pause, her father sighed. "Three years. No more."

That was the first wall Seema broke.

A City Full of Dreams

Seema moved to Jaipur for college. Life there was fast and unfamiliar. She lived in a tiny hostel room with two other girls. Money was tight, so she often survived on leftover chapati and pickle.

Every morning, she woke up at 5 a.m., made notes from the newspaper and attended her classes.

In the evenings, she worked part-time at a coaching center to pay her hostel rent.

Her friends would often say, "Seema, don't study all the time! Enjoy life a little!"

She would smile and answer, "I will — after I pass UPSC."

After graduation, she enrolled in a master's program and began preparing seriously for the civil services exam. But the syllabus felt endless — history, polity, economics, current affairs — everything under the sun. Some days, she felt like giving up.

When she failed a mock test badly, she sat on the hostel terrace and cried. "Maybe Rukmini was right," she thought. "Maybe girls like me can't make it."

Just then, her phone buzzed. It was her mother. "Don't cry, beta. Remember your promise to your father — make him proud."

Seema wiped her tears. "Yes, Maa," she whispered. "I will."

The Struggle Grows

Two years later, Seema took her first UPSC attempt — and didn't even clear the prelims. Her heart broke. She had worked day and night, given up everything, yet failed.

Relatives began whispering, "Such a waste of time. She could have been married by now."

Her father didn't scold her, but she could see the disappointment in his eyes.

That night, Seema stood before her mirror and said firmly, "One failure cannot define me. If others can do it, why not me?"

She started again — this time smarter. She joined a library, practiced writing daily, discussed current affairs with classmates, and taught younger students to earn money. Her days were long, and her nights were longer. But her determination never broke.

The Turning Point

In her second attempt, Seema cleared the prelims. For the first time, she truly believed in herself. Her father called her, voice shaking with pride. "I told everyone in the village! My daughter passed the first stage!"

But the mains were tougher. She studied up to 12 hours a day, revising and writing practice papers. She learned to stay calm and enjoy the process rather than fear the result.

When the results came, Seema had cleared the mains too. Now only the interview stood between her and her dream.

The Final Step

The interview was in Delhi. Seema wore a simple cotton saree and carried her mother's blessings

in her heart.

A panel member asked, "Seema, why do you want to join the IAS?"

She replied confidently, "Sir, I've seen how lack of awareness and opportunity hold people back in rural India. I want to change that. I don't just want to rise — I want to help others rise with me."

The chairman smiled. "That's a wonderful answer, Ms. Seema. We wish you all the best."

A Dream Realized

Two months later, Seema was sitting under the same starry sky of her childhood when her phone buzzed. It was a message from UPSC:

"Congratulations! You have been selected for the Indian Administrative Service."

She screamed with joy. Her mother rushed out, Seema hugged her tightly, tears streaming down their faces. Her father, too proud to show emotion, said simply, "You did it, beta. You made us proud."

The same villagers who once doubted her now invited her to speak at the school. Seema stood before the children and said,

"Dreams don't belong only to cities or rich families. Dreams belong to anyone brave enough to hold on when the world says 'No'. I was told a thousand times that I couldn't — but every 'No' became my reason to try harder. Remember, your background is not your boundary."

Years later, as District Collector Seema Singh looked out of her office window at the busy streets below, she smiled. The journey had been long and full of struggle — but it was worth every step.

She had not just broken walls; she had built doors for others to walk through.

And somewhere, in a small village under a starlit sky, another girl looked up and whispered to herself—

"If she can, I can too."

**"There is nothing to writing.
All you do is sit down at a typewriter and bleed."**

- Ernest Hemingway



The Joy of Giving



Prof. Shrabani Chakravorty
Professor : English

At this hour of night
When darkness surrounds the blurry sight
Sleep is miles away from my eyes.
All I see is the black cloudy sky

An emptiness creeps in makes my mind to think
About the modern times
Where life has been reduced to a machine.
Running in the rat race of 24 × 7 is now routine.

Care, concern, emotion and feelings seem
lost for fellow beings.
A heart devoid of love has forgot its role
A feeling of compassion for the needy soul
To pour a handful of rice into a needy bowl.

Cries of hunger lost its voice, failing to reach
Among man, machine and noise.
Life on the pavement simply waits
Be it chilly winter, hot summer or rainy day
My heart cries out in silence for the children
in the street

Pray almighty for their agony to retreat
Let us awake in a dawn filled with hope
Arise and know our real strength to help
Those whose basic amenities are deprived
To a child's face or an old man's dying
hopes the Joy

My Garden of Happiness

The stars are twinkling in my garden
With pink dianthus and magenta verbenas
Each radiating the vibrant colours of life
Lovely little blooms are a great feast to the eyes

The soft dew kissed petals of roses bloom
On a misty morning removes the gloom
Spreads it's fragrance in the room
Unfolding beauty like a peacock's plume

The golden hue of marigold
Is like gold coins to behold
White, red, blue, yellow chrysanthemum bold
Unravels the charm of flowers untold

The tall hibiscus shrubs
In red, white, pink, orange throbs
Serves for worship and offering
In home and temple to the deities.

The exquisite fragrance of white flowers
Jasmine, Arabian Jasmine, lily and tuberose
Exudes its scent for days together
These are the ingredients of natural perfumes

The lotus flowering in the corner
Of a small pond of my backyard
Is sublime, subtle and curious
Opens its petals appears mysterious

The dazzling dancing yellow
Sunflower smiles towards the Sun
Orange palash splashing colours of Holi
The Flame tree bearing flamboyant flowers

Every morning and evening
When I tread along my garden
Nurturing, caring, talking to each flower
I feel blessed to be surrounded by
My garden of happiness and peace.

AI-Generated Beauty : The Risk of Generating Viral AI Images

Mr. Thanendra Kashyap
Guest Faculty - Computer Science



AI-powered beauty images spread fast because they're eye-catching, easy to make, and tap into familiar ideals—but the same virality magnifies privacy threats, bias, and manipulation at scale. Each upload can expose biometric data, fuel deepfakes, and reinforce narrow standards that shape how people see themselves and others.

How virality raises the stakes

When millions join a trend—like stylized "AI saree" portraits or retro glam filters—the sheer volume turns playful posts into a mass biometric dataset, often governed by vague terms of use. Even if a platform embeds watermarks or metadata, those signals are inconsistent across the web and can be stripped or ignored, limiting real-world protection.

Privacy, deepfakes, and misuse

Uploading selfies hands over facial geometry, skin texture, and expressions that can be repurposed for impersonation, scams, or explicit deepfakes without consent. Reverse lookups and AI inference can reveal locations, habits, or sensitive traits, expanding risks far beyond the original "fun" post.

Bias baked into beauty

Viral "world's most beautiful" AI threads often default to lighter skin, thinner noses, and Eurocentric features, amplifying colourism and narrow ideals that erase local diversity. As these images flood feeds, they normalize a single aesthetic and marginalize faces that don't match the model's training bias.

Mental health and social pressure

AI-beautified selfies reward polished looks with likes and reach, nudging creators to post edited versions of themselves to keep pace. Over time, the gap between "camera-self" and "mirror-self" can feed anxiety, body dissatisfaction, and deceptive presentation in dating or professional contexts.

Legal gray zones and consent

Many generators reserve rights to reuse uploads for model training, advertising, or third-party sharing, creating long-tail exposure even if a post is deleted. Copyright and likeness protections vary by region, and proving harm or takedown eligibility is difficult once content goes viral.

Safer creation playbook

- Minimize uploads: avoid close-up faces, kids photos, uniforms, and geotagged scenes.
- Check terms: look for data retention, training reuse, and third-party sharing clauses before participating.
- Use reputable tools: prefer platforms with edit disclosures and robust provenance features.
- Limit reshaping: avoid slimming or facial morphs that promote harmful standards or invite misuse.
- Post with context: label AI images clearly and keep originals private; be ready to delete fast if repurposed.

Viral AI beauty can be creative and communal—but without stronger defaults for privacy, consent, and provenance, it risks normalizing deceptive images, biased aesthetics, and identity abuse at internet speed. Choosing careful participation—and demanding safer design—keeps the fun while shrinking the collateral damage.



Those Who Truly Understand Her, Find Their Life Transformed

Smita Tiwari
Ex-student - B.Sc. (Bio)

In every student's life, there comes a teacher who doesn't just teach subjects but leaves an imprint on the soul. Some educators win hearts instantly with their soft tone and friendly attitude. But some remain misunderstood often mistaken for being too strict, too quiet, or too serious. However, once you truly look beyond the surface, you discover a person filled with wisdom, depth, and unmatched dedication. During my graduation, I had such a teacher. I won't name her not because she's forgettable, but because her influence is so personal and profound that words fall short. I completed my B.Sc. from this college, and it was during this time that I learned so much from her. Lessons that went far beyond the textbooks. She wasn't the kind of teacher who smiled often or mingled much. In fact, many students kept their distance, unable to read her quiet demeanor and composed expressions. But the few who made the effort to understand her, who gave her a chance beyond surface impressions, saw a completely different side. An extraordinary

guide, mentor and motivator. She didn't just deliver lectures; she delivered life lessons, her words were precise, her expectations clear and her values strong. She didn't believe in spoon-feeding; she believed in pushing us to think, to struggle and to grow. And maybe that is why many couldn't understand her at first. We often prefer comfort over challenges, but her way was to challenge us, so we could become stronger. With time, I realized that behind her strict discipline was the deepest care. She remembered every student, their progress, their efforts and even their potential. She guided without show and uplifted without praise. Her silence was filled with meaning, and her rare words carried the power to shape you. Now, as an MBA student, I often find myself recalling her voice, her teachings, and her way of thinking. Especially in difficult situations, her silent strength echoes within me **Don't just learn to pass, learn to live.** Through this article, I simply want to say, never judge a teacher by first impressions. You never know whose lessons may turn into the foundation of your future. Sometimes, the most reserved people give you the most powerful lessons. All it takes is the courage to understand them with patience and respect. To that one teacher, thank you. Your impact was invisible to many, but unforgettable to me.

Veer Birsa Munda

Kumar Chandrashekhar
B.Com.-III Sem.



Birsa Munda was not just a freedom fighter but a revolutionary tribal leader, spiritual guide, and folk hero who inspired thousands to rise against injustice. Born on **15 November 1875** in **Ulihatu village** (now in Jharkhand) to **Sugana Munda** and **Karmi Hatu**, Birsa belonged to the **Munda tribe** of the **Chhotanagpur Plateau**, spread across present-day Jharkhand, Odisha, West Bengal, and Chhattisgarh. Growing up in poverty, his family often moved in search of work, but Birsa found joy in simple pleasures like playing in the forest, grazing sheep, and making music on his flute and one-string *tuila*. He began his education under **Jaipal Nag** in Salga and later joined the **German Mission School**, where he briefly converted to Christianity as *Birsa David*. However, he soon realised that the British were using education as a tool for conversion and exploitation, prompting him to leave the mission and dedicate his life to protecting his people's traditions and dignity. Witnessing how the British and local landlords seized tribal lands, imposed unfair taxes, and oppressed his community deeply angered him. Determined to resist, Birsa mobilized his people and launched the **Ulgulan (The Great Tumult)** between **1899 and 1900**, a powerful movement that sought to free tribal lands, safeguard their culture from external interference, and establish **Munda Raj** — a system of self-rule based on tribal customs and leadership. He also

founded a new faith called **Birsait**, which blended traditional Munda beliefs with his own spiritual teachings, urging his followers to reject forced conversions and return to their roots. Under his leadership, thousands of tribals united, attacking symbols of British power like police stations and landlords' houses, striking fear into the colonial administration. However, in **March 1900**, weakened by illness, Birsa was captured by the British in the **Jamkopai forest** and imprisoned in Ranchi, where he died mysteriously on **9 June 1900** at just **25 years old**. Although officials claimed he died of cholera, many believe he was poisoned. His death turned him into a legend — his people called him **"Bhagwan Birsa Munda"**, a divine protector and symbol of hope. To me, Birsa Munda represents courage, unity, and resistance — a young man who stood up for justice and equality against one of the most powerful empires of his time. His spirit continues to inspire generations to fight for freedom, self-respect, and the rights of the marginalized, making him an eternal symbol of India's tribal pride and resilience.

Life is so Unpredictable



Aditi Agrawal
B.Com IIIrd Year

In the heart of Chhattisgarh, where the majestic Bailadila mountains meet the lush green forests, there lived a young boy named Rohan. Rohan was born in a small village of Dantewada. He grew up surrounded by the rich cultural heritage and natural beauty of the state.

Rohan had always dreamed of becoming an athlete since his childhood. He belonged to a very poor family. His father worked day and night to fulfil the needs of the family, yet they still struggled to have enough to eat by the end of the day. Because of their financial problems, his family could not put him in any proper coaching classes to help him improve in the field he loved.

Despite everything, Rohan never felt discouraged. He believed that he would achieve his dreams on his own. He started practicing by running in his village every day. He used to wake up early in the morning and go for a run. Yes, Rohan was truly passionate about running, and his goal was to become the number one athlete in the whole country.

Rohan was unstoppable. Even after finishing all the household chores and helping his father with work, he never missed a single day of practice. One day, his PT teacher noticed his dedication and decided to help him. The teacher trained him daily and supported him in improving his skills. With full concentration and hard work, Rohan's efforts finally paid off. He won the district-level running competition. He was extremely happy, but he also knew that the real challenges of his life were about to begin.

After winning at the district level, he was selected for the state-level competition. Rohan was nervous about how he would manage everything, but he refused to step back from his dreams. He practiced even harder and eventually reached the place where the competition was going to be held.

Finally, the day of the race arrived. The other athletes tried to discourage him. They pushed him and even insulted him, saying he was "ugly" and could not achieve anything. But when the results were announced, everyone went silent. Rohan could not believe it—he had won the match and fulfilled the dream he had always carried in his heart.

Rohan's journey was never easy. He had faced many problems in his life. Even before the state-level competition, he had broken his leg, and the doctor told him he would never be able to run again. But Rohan refused to give up. He fought through every difficulty and rose above them.

After achieving success, Rohan decided to help others who were struggling just like he once did. He opened many training centres in Dantewada and even in other parts of the country. He also opened NGOs and old-age homes, all free of cost, for people who truly needed support.

Rohan's story reminds us of the powerful message given by Swami Vivekananda ji:

"Never say no, never say 'I cannot'.
For you are infinite.
All the power is within you.
You can do anything."

सपने



ज्ञान नंदिनी
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

सपने सबके होते हैं,
कुछ पूरे होते हैं
कुछ अधूरे रह जाते हैं।
कुछ बचपन में ही छूट जाते हैं ,
तो कुछ उम्र भर साथ निभाते हैं ।
कुछ खिलौनों जैसे मासूम से,
तो कुछ बड़े से आसमान को छू जाते हैं ।
कुछ सपने खुद ही दब जाते हैं ,
तो कुछ पंख देकर हमें उड़ना सिखाते हैं ।
कुछ हकीकत में ढल जाते है ,
और कुछ सिर्फ ख्वाब बनकर रह जाते हैं ।
दिल के किसी कोने में छिपे रहते हैं,
ये सपने सिर्फ अपने ही रह जाते हैं।
जिंदगी के हर पड़ाव पर
यादों की तरह संग चल पड़ते हैं ।
और हां
ये सपने नींद में नहीं आते,
ये तो हमारे साथ ही आते हैं
और हमारे साथ ही चले जाते हैं।

समस्त सफलताएँ कर्म की नींव पर आधारित होती हैं।

Ethics and Values in Education : Beyond Number-Driven Knowledge



Ex-Student - **Shreya Tiwari**
B.A. IIIrd Year

Knowledge alone is like a body without a soul. True education goes beyond textbooks, exams, and numbers — it shapes values that guide how we live and interact with others. The character and morality we develop early in life form the foundation of an ethical society and help us make the right choices. Schools and colleges, therefore, have a vital role in nurturing both the mind and the heart.

Ethics gives us the ability to judge what is right and wrong, which is essential for fair and just decision-making. Honesty, generosity, friendliness, self-discipline, civility, cooperation, loyalty, kindness, and wisdom are some of the core values that define our personality and shape our future. For example, honesty is shown by being truthful in words and actions, generosity through sharing time and care, and discipline by controlling impulses and staying focused on goals. Developing these qualities makes a person balanced, peaceful, and trustworthy.

In today's competitive world, success is often measured only by marks or achievements. Yet, it is important to remember that real education lies in building strong character. Educational institutions should create environments that encourage moral behaviors and ethical thinking through discussions, community service, and fair practices. Ancient philosophers and thinkers like Buddha, Aristotle and Mahatma Gandhi emphasized the importance of values. Their teachings remind us that education is not just about earning a living but about creating a meaningful life. As James Madison once said, "If men were angels, there would be no need for government," highlighting how ethics are essential for harmony and order in society.

We should strive to raise people who are morally strong, socially responsible, and emotionally wise. When education builds character as well as intellect, it becomes a force to create a fair, joyful, and respectful world.

जिम्मेदारियां'



Isha devangan

विपदाओं से भरी खूबसूरत ये जिंदगी
बचपना छीन लेती है घर की जिम्मेदारियां,
उम्र से पहले ही बड़ा बना देती है।
ख्वाहिशें पूरा करने की चाहत में,
ना जाने क्या-क्या काम करवाती है।
जिंदगी की इस मुश्किल राहों में,
हमें आगे बढ़ना सिखाती है।
जिम्मेदारियां हमें वक्त से पहले ही,
बड़ा बना जाती है।
पिता के हाथों में थे छाले,
मैने मां को सालों से एक साड़ी पहनते देखा है।
कंधों में थे जिम्मेदारियों के भार ,
उनको अपनी इच्छाओं का गला घोंटते देखा है।
अब आई बारी मेरी है, कुछ कर दिखाने की
खुशियों की चादर को और बड़ा फैलाने की
जिम्मेदारियों ने हमें बहुत कुछ सिखाया है,
वक्त ने हमें वक्त से पहले बड़ा बनाया है ।।



The School Memories and College Lessons

Aditya Kumbhkar
B.Com. III Sem.

Introduction : When I first entered UKG, the school felt like a whole new world. Small classrooms, colourful charts on the wall, and the sweet smell of tiffin boxes — that was my life. Teachers were like second mothers, always reminding me to write neatly and not to forget my homework.

Primary Classes (1 to 5) : Life was full of fun and learning. I remember handwriting competitions, poem recitations, and the joy of showing my parents a star in my notebook. Lunch breaks were like mini picnics with friends, and even a small piece of chocolate was enough to make us feel rich.

Middle School (6 to 8) : This was when things started to change. Homework increased, subjects became tougher, and teachers expected more from us. Sports day, annual functions, and inter-house competitions made these years exciting. This was also the time when friendships grew deeper, and mischief became part of daily life — from hiding chalk pieces to passing secret notes during class.

Senior Classes (9 to 12) : These were a different challenge. The word "Board Exams" started haunting us. Tuition, last-night study sessions, and canteen talks became normal. Yet, there were unforgettable moments — last bench jokes, group studies that turned into gossip sessions, and that emotional farewell day when we wore the school uniform for the last time.

College Life : Then came college. I thought it would be completely different, but in my case we still have a uniform. The environment, however, has changed. Discipline is still there, but it feels different now. In school, discipline meant standing in a straight line and keeping silent in the corridor. But in college, it means being on time for lectures, submitting work on deadlines, and respecting the rules without anyone constantly reminding you.

One of the biggest changes I noticed was the attendance problem. In school, if we missed a class, teachers would call our parents. In college, the punishment is more silent but scary — your name in the "short attendance list" and suddenly you are running from one teacher to another, asking for attendance "adjustment".

And then there are projects and assignments. Every student has the same story — you plan to start early, but somehow the work begins just one night before the submission date, searching for information, typing everything neatly, and making sure it looks presentable. It's always a race against time. These small struggles make college life challenging and memorable.

Conclusion : Looking back, UKG to 12th was a journey full of innocence, discipline, and memories that will stay with me forever. College is a new chapter — challenging yet exciting. Sometimes I still miss those morning assemblies, the ringing of the school bell, and the simple joy of sharing lunch with friends. School taught me how to dream, and college is teaching me how to work for those dreams. Life will keep moving forward, but a part of my heart will always be sitting in that old classroom, wearing the same uniform, and waiting for the bell to ring.

I, YOU AND HE



Shivam Mishra
Ex-Student - B.A. IIIrd Year

There once was a forest from forever maybe,
At the centre of it God created a beautiful tree

So fabulous it was, small in size
But birds could see it from their high flights

Every part of it was so beautiful
Branches of it were very fruitful

Just beside that small and beautiful tree
There was a giant and ugly tree

Everybody said it was living just to tell others
what's opposite of beautiful
His incapabilities could only get comments pitiful

No one could believe they were destined to meet
But that love was maybe a gods treat

One day a huge fire broke down in green wild woods
First it burned down the little crooks

The love trees were happy in the starting before
But alas they didn't know this would hurt their core

The fire kept becoming giant and powerful
The little one said what a shining light and
forgot to be careful

She kept on closing astounding from the beauty
HE kept on closing seeing the little cutie
The giant got afraid seeing the fire raid
He stood in between protecting his queen

The fire burnt him and turned into light
The little one thought fire is turning him bright

The giant fought well from the fire of hell
Got weak on the roots and suddenly fell

The fallen giant was taken away
Far from love which got him some ray

He was cut down into pieces of wood
the hurting blade couldn't let him stood

Far away that innocent tree who always helped him
Thought why the giant left her away
didn't get he was in pain up to rim

Seeing the giant far far away
The fire again came closer to the small one everyday

The fire first burned down the leftover of giant
Covered the small one and showed her how
beautiful he is and kind

Far away the giant was crying
Disabled and broken from the spine.

The fire burnt down the lovely tree
And went ahead for his next prey

There once was a forest from forever maybe
At the centre of it god created a beautiful tree

मूर्तिकार का अहंकार



खुशी परवीन
बी.कॉम. द्वितीय सेमेस्टर

बहुत समय पहले की बात है- एक गांव में एक मूर्तिकार रहता था। वह ऐसी मूर्तियां बनाता था जिन्हें देखकर हर किसी को मूर्तियों के जीवित होने का भ्रम हो जाता था। आस-पास के सभी गाँव में उसकी प्रसिद्धि थी, लोग उसकी मूर्ति के कायल थे इसलिए उस मूर्तिकार को अपनी कला पर बड़ा घमंड था। जीवन के सफर में एक वक्त ऐसा भी आया जब उसे लगने लगा कि अब उसकी मृत्यु होने वाली है और वह ज्यादा समय तक जीवित नहीं रह पाएगा। उसे जब लगा कि जल्दी ही उसकी मृत्यु होने वाली है तो वह परेशानी में पड़ गया। यमदूत को भ्रमित करने के लिए उसने एक योजना बनाई उसने हुबहू अपनी जैसी दस मूर्तियाँ बनाई और खुद उन मूर्तियों के बीच जाकर बैठ गया यमदूत जब उसे लेने आए तो एक जैसी ग्यारह आकृतियों को देख कर दंग रह गए वह पहचान नहीं पा रहे थे कि उन मूर्तियों में से असली इंसान कौन है (वह सोचने लगे- अब क्या किया जाए अगर मूर्तिकार के प्राण नहीं ले सके तो सृष्टि का नियम टूट जाएगा और सत्य परखने के लिए मूर्तियों को तोड़ा गया तो कला का अपमान हो जाएगा। अचानक यमदूत को मानव स्वभाव के सबसे बड़े दुर्गुण अहंकार को परखने का विचार आया उसने मूर्तियों को देखते हुए कहा- कितनी सुंदर मूर्तियां बनी हैं लेकिन मूर्तियों में एक ग़लती है, काश मूर्ति बनाने वाला मेरे सामने होता तो मै उसे बताता कि मूर्ति बनाने में क्या गलती हुई है। यह सुनकर मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा उसने सोचा- मैंने अपना पूरा जीवन मूर्तियां बनाने में समर्पित कर दिया भला मेरी मूर्तियों में क्या गलती हो सकती है वह बोल उठा- 'कैसी गलती' झट से यमदूत ने उसे पकड़ लिया और कहा यहीं गलती कर गए तुम अपने अहंकार में, क्योंकि बेजान मूर्तियां बोला नहीं करती।

कहानी का तर्क यही है कि इतिहास गवाह है अहंकार ने हमेशा इंसान को परेशान किया और दुख के सिवा कुछ नहीं दिया। **'मैं श्रेष्ठ हूं यह आत्मविश्वास है लेकिन, मैं ही श्रेष्ठ हूं यह अहंकार है'**



अंधकार से उजाला तक

अंकिता दाहिया
बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

जब न पढ़ाई, न ज्ञान था,
अंधकार ही अंधकार था।
तब न पथ दिखते, न राह मिलते,
अकेले पीछे खड़े होते।

जब ज्ञान की रौशनी मिली,
प्रकाश ही प्रकाश हुआ।
तब पथ दिखते और राह मिलते,
सबसे आगे खड़े होते।

किताबों ने साथ निभाया,
सबसे आगे हमें बढ़ाया।
मेहनत कर हम चलते,
मंज़िल के पास ही होते।

कलम से कर्म तक



रोहित राज गुप्ता
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

प्रतियोगी परीक्षाएं अब केवल सवालों का संकलन नहीं रहीं, ये अब एक ऐसी मनोवैज्ञानिक रणभूमि बन चुकी हैं जहाँ कलम नहीं, बल्कि धैर्य, आत्मविश्वास और मानसिक संतुलन को हथियार बनाकर उतरते हैं। कभी ओएमआर शीट पर पसीना टपकता है तो कभी ऑनलाइन स्क्रीन पर टिकी आँखों से समय को पकड़ने की कोशिश होती है, जैसे कोई साँप अपनी केंचुली बदलता हो। एक समय था जब परीक्षा महज़ किताबी ज्ञान का मूल्यांकन हुआ करती थी, लेकिन आज यह एक बदलते स्वरूप वाला युद्ध हैं, जहाँ प्रश्नपत्र हर वर्ष एक नई शक्ल में सामने आता है– कभी करंट अफेयर्स की आँधी बनकर, कभी रीजनिंग की गहराइयों में डुबोकर, कभी गणित की पहाड़ी पर चढ़ाकर, तो कभी सामान्य ज्ञान के रेगिस्तान में भटका कर। परीक्षार्थी अपने ख्वाबों को सीने से लगाए, माँ–बाप की उम्मीदों को कंधों पर लादे, इस तूफानी सफर में उतरते हैं, जहाँ हर कदम पर एक नई चुनौती, एक नई परीक्षा उनका इंतजार करती है। यह दौड़ अब सिर्फ किताबी नहीं रही, यह अब तकनीक की रेस है, जहाँ पर डेटा एनालिसिस, च्ल्फ ट्रेंड्स और कटऑफ प्रेडिक्शन जैसे टूल्स ही असली अस्त्र बन चुके हैं। अब केवल 'क्या पढ़ना है' नहीं, बल्कि 'क्या छोड़ना है' यह तय करना भी उतना ही जरूरी हो गया है, क्योंकि अब परीक्षा में सफलता ज्ञानी होने से नहीं, संयमित और रणनीतिक होने से मिलती है। यह एक ऐसा युग है जहाँ तैयारी सिर्फ किताबों से नहीं, बल्कि समय से, परिस्थितियों से और सीमाओं से युद्ध करकें करनी होती है। छात्र उस नाविक की तरह है जिसे यह नहीं पता कि हवा की दिशा क्या है, गहराई कितनी है, या किनारा कितना दूर। फिर भी वह बहता है, डगमगाता है, गिरता है, वह रूकता नहीं, क्योंकि उसकी मंज़िल सिर्फ नौकरी नहीं होती, बल्कि खुद से एक जीत होती है। अपने डर, आलस्य, सीमित संसाधनों और असफलताओं से पार पाकर खुद को नया आकार देने की लड़ाई होती है। यह परीक्षा अब केवल अंकों की नहीं रही, यह अब सेकंडों की हो गई है, जहाँ सफलता का पैमाना यह नहीं कि आपने कितना पढ़ा, बल्कि यह है कि आपने कब क्या पढ़ा, कैसे पढ़ा और कितनी समझदारी से पढ़ा। यह तपस्या की वह अग्नि है जो मोबाइल की स्क्रीन से शुरू होकर साक्षात्कार कक्ष की गूंजती खामोशी तक जाती है, जहाँ हर मोड़ पर परीक्षा का स्वरूप बदलता है– जैसे कोई रहस्यमयी नदी जो हर बार एक नया रास्ता बना लेती है। प्रतियोगिता अब एक जीवन दर्शन बन चुकी है, जिसमें हार कर भी सीखने वाला अंततः विजेता बनता है।



सपना तो सपना होता है न कोई बड़ा न कोई छोटा होता है।
सपने देखो खुल के देखो ,सपनों में पर तुम अपनों को देखो।।

संजू बैगा, एम. एस.सी रसायन शास्त्र

छत्तीसगढ़ में मिलेट्स उत्पादन के विकास संभावनाएँ

(मनेन्द्रगढ़ विकासखण्ड के संदर्भ में)



दिशा लकड़ा
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

हाल ही में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा वनांचल में उगाई जाने वाली कोदो- कुटकी और रागी फसल को प्रोत्साहन देने के लिए मिलेट मिशन की शुरूआत की। इस मिशन से वनांचल में लोंगो के पोषण स्तर में वृद्धि होगी साथ ही इनकें द्वारा रोजगार सृजन एंव अतिरिक्त आय से किसानो की आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी। मुख्यमंत्री जी के विशेष पहल पर कोदो-कुटकी के लिए समर्थन मूल्य की घोषणा कर इसे राजीव गांधी किसान न्याय योजना में शामिल कर लिया गया है। कोदो-कुटकी के उत्पादन और संग्रहकर्ता के लिए किसान विकास समिति का गठन किया गया है, जिसमें 300 परिवार जुड़े हुए हैं। कलेक्टर एवं स्व-सहायता समूह की महिलाओ को 850 से अधिक मानव दिवस का रोजगार उपलब्ध कराया गया है। जिला प्रशासन की ओर से सबसे पहले लघु धान्य उद्यमों का उत्पादन करने वाले किसानो और महिला उद्यमियो को इस कंपनी केंन्द्र से जोड़ा गया है। इस केंद्र में तैयार किए गए उत्पाद बालवाड़ी के माध्यम से कुपोषित गर्भवती और कुपोषित बच्चों को कोदो चावल के रूप में और रागी को हलवा के रूप में उपलब्ध कराया जा रहा है। वर्तमान में कई आदिवासी इलाको में मोटे अनाज का काफी समय से प्रयोग किया जाता है। यह स्वास्थ के लिए बहुत फायदेमंद है। इसलिए अब दूसरे इलाको में भी इन अनाज का काफी इस्तेमाल किया जा रहा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ के मुताबिक कोदो -कुटकी और रागी को प्रोटीन व विटामिन युक्त अनाज माना गया है। इसके सेवन से रक्तचाप ,शुगर जैसे रोग से लाभ मिलता है। सरगुजा और बस्तर के आदिवासी संस्कृति व खानपान में कोदो-कुटकी रागी जैसे फसलो का महत्वपूर्ण स्थान है। गौरतलब है कि मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देने के मामले में छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर का पोषक अनाज अवार्ड 2022 सम्मान से नवाजा गया है। मिलेट्स उत्पादक को प्रोत्साहन के लिए प्रति एकड़ के मान से 9 हजार रूपए की आदतन सहायता भी दी जा रही है। मिलेट्स की खेती में कम पानी और कम खाद की जरूरत पड़ती है। जिसके फलस्वरूप इसकी खेती में लागत बेहद कम आती है और उत्पादक कृषकों को लाभ ज्यादा होता है।

माँ

पैसों पर इतराने वाले ,
खुद को खुदा कहते हैं ।
एक बात बताओ मुझे ,
क्या? माँ को खुदा कहते हैं ।

माँ का हाथ पकड़ चलने वाले ,
माँ को आश्रम छोड़ आते जाते हैं
खुद पर बोझ बनने नहीं दिया माँ ने ,
आज माँ बच्चों पर बोझ बन जाती हैं ।
खुद को खुदा बताने वाले ,
क्या ? माँ को खुदा कहते हैं ।



खुद का बोझ उठा ना पाते ,
आज माँ को बोझ बताते हैं ।
माँ को छोड़ खुदा को मनाने वाले ,
तुम माँ में ही खुदा क्यों देख नहीं पाते ,
खुद को खुदा बताने वाले ,
क्या? माँ को खुदा कहते हैं ।

अभिमन्यु कोल
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष



(1) 'सीखो'

अपनों की भीड़ में, अपनों की पहचान करना सीखो...
अपनों की भीड़ में, अपनों की पहचान करना सीखो ।
जिंदगी को जिंदगी के नाम करना सीखो...
यूं ही नहीं मिली हैं, हमें यह जिंदगी...
औरों की भीड़ में तुम अपनी पहचान करना सीखो ।
तुम मुठ्ठी में कुछ सपने लेकर चलना सीखों...
और भरकर जेबों में कुछ आशाएं....
तुम बढ़ो इतना आगे की मिट जाएं
तुम्हारी सारी निराशाएं ।
निराशाओं से सीखो तुम आशाओं के दीप जलाना...
दीपों से सीखो तुम जगमगाना ।
जगमगाते रहना है, हर एक तराने में
जिससे तुम्हारी पहचान बने जमाने में.....
ज़माने में तुम्हे बनानी है, अपनी अच्छी पहचान,
जिससे दुनियां में चले तुम्हारा बड़ा नाम ।।

(2) 'सपनों की उड़ान'

छोटे से गांव से निकली, आंखों में थी एक आस,
पढ़-लिखकर कुछ कर दिखाने का ,
मन में था विश्वास ।
किताबों से दोस्ती की, कलम को साथी माना,
हर कठिनाई में भी मैंने, खुद को आगे जाना ।
सपनों की वो ऊंची उड़ान, अब डर से न थमती है ।
मेहनत की ये रोशनी हर अंधेरे में चमकती है ।
अवसर जब भी आए सामने , मैने कदम बढ़ाए ,
कभी थकी, कभी रुकी, पर हार नहीं अपनाएं ।
हर पन्ना, हर शब्द, बनता मेरी कहानी है,
छात्र जीवन में छिपी, मेरी असली निशानी है।
आज भी मंज़िल दूर सही, हौसला है साथ मेरे,
आसमान को छूने की जिद,
हर सुबह है, पास मेरे....।।

(3) 'मैं और मेरा सफर'

मै चली, राहों पर अकेली,
सपनों की गठरी झोली में भरी ।
न कोई साथ, न कोई मंज़िल,
बस हौसलों की डोरी बंधी ।
कभी ठोकर लगी, कभी गिर पड़ी।
पर रुकना तो मेरी आदत नहीं ।
हर आंसू को मुस्कान में बदला,
ये सफर मेरा है, कोई सौगात नहीं ।
हर सवाल ने मुझसे पूछा - क्या कर पाओगी,
इतनी सी तुम।
मैने जवाब दिया नजरों से, देख लेना बन जाऊंगी
सबके लिए मिसाल कभी ।

अन्नू यादव
बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

एम.सी.बी. जिले के अंतर्गत कृषि विकास की समस्याएं एवं संभावनाएं



पुष्पा सिंह
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

एम.सी.बी (मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर), जिला 9 सितंबर 2022 को छ.ग. कि 32 वें जिले के रूप में अस्तित्व में आया। यह अपने पितृ जिला कोरिया से विभाजित करके बनाया गया। मनेन्द्रगढ़ को इस नवनिर्मित एम.सी.बी. जिले के विकासखंड एवं मुख्यालय का दर्जा प्राप्त है। यह जिला छ.ग. के उत्तर-पश्चिम भाग में सरगुजा संभाग के अंतर्गत आता है, जो पर्यटन क्षेत्र एवं मनोरम दृश्यों से भरपूर है।

एम.सी.बी जिले की कुल जनसंख्या लगभग 4.5 लाख है जिसमें से लगभग 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। जिले में सिंचाई, सुविधाओं की कमी एक प्रमुख समस्या है। अपर्याप्त और अनियमित वर्षा के कारण किसानों को सिंचाई के लिए वर्षा जल पर निर्भर रहना पड़ता है। जिससे उत्पादन प्रभावित होता है यहाँ छोटे और सीमांत किसान लगभग 85 प्रतिशत हैं। लगातार फसल चक्रण और उर्वरकों के अनुचित उपयोग के कारण मिट्टी की उर्वरता में कमी आ जाती है। जलवायु, परिवर्तन के कारण अनियमित वर्षा जैसी परिस्थितियां कृषि उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। जिले में जैविक खेती को बढ़ावा देकर मिट्टी की उर्वरता में सुधार किया जा सकता है। इसके अलावा विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती को बढ़ावा देकर किसानों की आय में वृद्धि की जा सकती है एवं किसानों को सहकारी समितियों के माध्यम से संगठित करके बेहतर बाजार पहुँच और अन्य सुविधाएँ प्रदान की जा सकती है। कृषि के साथ गैर कृषि क्षेत्रों में जैसे पशुपालन, मत्स्यपालन और मुर्गी पालन द्वारा कृषि को सम्बल प्रदान करने में सहायक हो सकता है।

एम.सी.बी. जिले में कृषि विकास के लिए किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों, सिंचाई सुविधाओं और विपणन सहायता की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना और किसानों को उक्त संदर्भ में नवीनतम जानकारी और प्रशिक्षण प्रदान करना भी महत्वपूर्ण कदम होगा। इन उपायों को लागू करके निश्चित ही एम.सी.बी. जिले में कृषि विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है और किसानों के जीवन स्तर में सुधार किया जा सकता है।

विज्ञान



छबिलाल
बी.एस.सी.
द्वितीय सेमेस्टर

विज्ञान है हमारे जीवन का आधार
विज्ञान ने की है हर कल्पना साकार
जिस प्रकार हर द्रव्य द्रव नही होता ,परन्तु
हर द्रव दव्य अवश्य होता है
इसी प्रकार हर मनुष्य अच्छा नही होता
पर हर अच्छा व्यक्ति मनुष्य ही होता है।

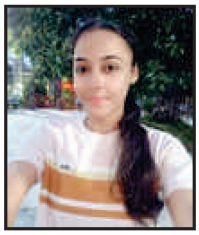

मन को मोहने वाले मनमोहन

स्नेहिता पाण्डेय
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर (एनईपी)

वर्ष 1991 में भारत में वित्त मंत्री के रूप में पदस्थ डॉ. मनमोहन सिंह को आर्थिक सुधार का शिल्पकार माना जाता है, जिन्होंने डगमगाती भारतीय अर्थव्यवस्था हेतु आर्थिक सुधार प्रारंभ कर भारत के विकास को एक नवीन दिशा प्रदान की। डॉ. मनमोहन सिंह एक प्रसिध्द अर्थशास्त्री, शिक्षाविद् एवं राजनेता थे। जिन्होंने 2004 से 2014 तक भारत के 13 वें प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। उनका जन्म 26 सितम्बर, 1932 को भारत के गाह में हुआ जो वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। विभाजन के दौरान वर्ष 1947 में उनके परिवार ने भारत में प्रवास किया। उन्होंने महाविद्यालयीन शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक और स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। इसके पश्चात् उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा अर्थशास्त्र में प्राप्त की तथा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में ही डॉक्टरेट ऑफ फिलास्फी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय Delhi school of Economics से अध्यापन कार्य किया एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू) में प्रोफेसर के रूप में पदस्थ रहे।

1991 के आर्थिक सुधार के वास्तुकार के रूप में पहचाने जाने वाले इस महान अर्थशास्त्री ने दो सफल, संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू.पी.ए.) सरकारों का नेतृत्व किया। जिससे मजबूत जी.डी.पी. वृद्धि और ऐतिहासिक नीतियों को लागू किया। महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), सूचना अधिकार अधिनियम एवं शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 जिसके लिए उन्हें क्रांतिकारी कदम माने जाते हैं, सदैव याद किया जायेगा। मुख्य आर्थिक सलाहकार, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर, योजना आयोग के उपाध्यक्ष जैसे भारत के बड़े एवं गौरवशाली पदों पर भी अपने कार्य किया।

'The Independent' जैसी प्रकाशनो ने उन्हें विश्व के सबसे सम्मानित नेताओं में से एक बताया। डॉ. मनमोहन सिंह की विरासत उनकी ईमानदारी बुद्धिमता और राष्ट्र सेवा के प्रति समर्पण से चिन्हित है। मन को मोहने वाले मनमोहन ने आधुनिक भारत के आर्थिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण एवं अतुलनीय योगदान दिया। वित्तमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल अविस्मरणीय रहा। राष्ट्र के आर्थिक परिदृश्य को नया आकार दिया और उन्होने, एक ऐसे नेता के रूप में छवि बनाई जिन्हें सदैव याद किया जायेगा जिन्होंने बुद्धिमता को विनम्र और दृष्टि को व्यवहारिकता के साथ जोड़ा।

हर छोटा बदलाव बड़ी कामयाबी का हिस्सा होता है।

मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर की प्रकृति और वर्तमान



रजनी सिंह
एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर

सतपुड़ा की गोद में बसा है ये धाम
हरियाली, पहाड़ और झरनों का काम।
कोयले की खानें जंगल हरे-भरे
हर कोना बोलता है प्रकृति से गहरे जुड़े हैं हम तेरे।
हसदेव की लहरें गुनगुनाती हैं गीत
वन्यजीवों की दुनिया करती है मन को मीत।
आदिवासी संस्कृति परंपरा का रंग
बाँसुरी की तान में गूंजे जंगल का संग।
चिरमिरी की ठंडी हवा भरतपुर का श्रृंगार
मनेन्द्रगढ़ की वादियाँ करती हैं प्यार।
ये जिला है छत्तीसगढ़ की शान,
जहाँ प्रकृति गाती है मधुर गान।
पर अब खनन की दौड़ में जंगल हैं रोते
पेड़ों की कतारें भी अब चुपचाप होते।
हसदेव अरण्य की पुकार सुनो रे भाई
प्रकृति भी कहती है संभल जाओ जल्दी आई।
सौर ऊर्जा हरियाली और जन-जागरूकता का स्वर
नव निर्माण के संग हो प्रकृति से भी प्यार।
नई पीढ़ी उठाए ये जिम्मेदारी का भार
ताकि कल भी बचे रहे ये सुंदर उपहार।

मेरी सपनों की उड़ान

नीतू
एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर



- बचपन से मैंने सपना देखा, आसमानों में उड़ने की जब बड़ी हो जाऊँगी, सपनों का पंख लेकर उड़ जाऊँगी ।
- सपनों को मैंने आँखों मे बुन लिया और अपनी सपनों की ओर कदम बढ़ाना शुरु किया।
- बचपन में मां-बाप ने भी मेरी सपनो की खूब सराहना किया मुझे खूब पढ़ा लिखाकर नन्ही बच्ची से बड़ा किया।
- सपनों की ओर बढ़ते हुये स्नातक की पढाई पूरी की और वही दुनिया वालों की नजरों में बेटी जवान हो गई।
- स्नातक के बाद जब मैंने पढ़ना चाहा मां-पापा ने भी समर्थन दिया पर वही दुनिया वालों की बातों में आकर मुझे किसी के घर की बहू बनाना चाहा।
- पर मैंने भी अपने सपनों को सच करने के लिए अपने परिवार को मना कर अपनी पढ़ाई जारी रखी।
- मैं अपने गुरुओं के मार्गदर्शन से अपने सपनों के रास्ते पर लगातार चलती रही हूँ।
- कई बार गिरती सम्भलती और मजबूत बनती रही अपने आप से कहती रही-
- क्या हुआ जो देर हो रही एक मुकाम पाने में जिन्दगी को जिन्दगी बनाने में किसी रास्ते में चल पाने में खुद को साबित कर पाने में, सपने की दुनिया सजाने में, देर से ही सही पर होगी बात नई, मेरी आने वाली जिन्दगी की होगी शुरुआत नई।
- बस यही बातें अपने आपसे कहती रहती और एक बेटी अपने सपनों के लिए बढ़ती रही। और तब तक बढ़ते रहेगी जब तक अपनी सपनों की उड़ान न भर लें।

बनास की बाहों में - रामदहा



रामप्रताप
एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर

बनास नदी की ममता भरी धार
चलती है लेकर स्नेह अपार ।
घाटियों से बहती एवं गूंजती स्वर में
एवं प्रकृति गाती है राग नये घर में ।
जब चट्टानों से टकरा झरती
रामदहा बन जाती एवं हर बूंद झरती ।
श्वेत फुहारों का वो सुंदर दृश्य एवं
मानो धरती पर उतरा हो स्वर्ग का स्पर्श
हरियाली की चादर ओढ़े पहाड़
नीचे गिरता जल करे जयकार।
बनास की बहना रामदहा की गाथा
प्रकृति की सबसे मधुर परिभाषा।
नील अम्बर नीचे सिर झुकाए
जब बनास रामदहा में समाए।
कहती है लहरें चुपचाप
यही है जीवन एवं यही है आप
पंछी चहके एवं पवन भी बोल
सुनो बनास की रागिनी डोले।
रामदहा का स्वर्गिक रूप
भर दे हृदय में नया स्वरूप

दीपावली



सतीश पांडे
बी.ए. पूर्व छात्र

जब रिश्ते दियों से ज्यादा चमकते थे.... कभी दीपावली सिर्फ रोशनी का त्योहार नहीं थी, वह रिश्तों की गर्माहट की उत्सव थी। उस समय घरों में सिर्फ दिए नहीं जलते थे,दिल भी जगमगाते थे, बचपन की वह दीपावली याद आती है जब मोहल्ले की गलियों में बच्चों की किलकारियाँ गूंजती थीं।

घर की महिलाएँ मिलकर मिठाइयाँ बनाती थीं, और हर कोई बिना किसी स्वार्थ के एक दूसरे के घर दीये जलाने जाते थे तब ना मंहगे कपड़ो की होड़ थी, ना मोबाइल पर शुभकामनाओं का शोर बस एक छोटा-सा दिया, एक सच्ची मुस्कान और हाथों से बनी खील-बताशे की मिठास ही दीपावली का असली सुख था, लोग तब दीपों की रोशनी से नहीं, मन की पवित्रता से उजाले करते थे। आज वक्त बदल गया है घरों में बिजली की लाइटें तो है, पर रिश्तों में अंधेरा है। शुभकामनाएं अब मैसेज बनकर रह गई हैं और पूजा की थाली जगह अब सेल्फी ने ले ली है। पहले लोग दीपावली में मिलने जाते थे अब ऑनलाइन स्टेटस डालते है, लेकिन फिर भी दिल के किसी कोने में वह पुरानी दीपावली आज भी जिंदा है, जब माता-पिता के चरण छूना ही सबसे बड़ा शुभ लगन था, जब मिट्टी के दिए में जलती बाती भगवान से संवाद करती थी, और अब घर के आँगन में जलता हर दीप आशा, प्रेम और अपनत्व की कहानी कहता था इस दीपावली पर आइए, एक बार फिर वही पुरानी खुशबू लौटाएं। अपने बुजुर्गों से आशीर्वाद लें, बच्चों को बताएं कि दीप जलाना सिर्फ एक परंपरा नहीं, बल्कि अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है क्योंकि दीपावली का अर्थ सिर्फ रोशनी नहीं, संवेदनाओं की लौ है ....



मेजर ध्यानचंद

जया शर्मा
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

यह 1936 की बात है, जब भारत और जर्मनी के बीच हॉकी मैच खेला जा रहा था। यह महान हॉकी खिलाड़ी ध्यानचंद जी के बारे में है। उस मैच में कुल 14 गोल हुए, जिनमें से अकेले ध्यानचंद जी ने भारत के लिए 13 गोल किये।

उस स्टेडियम में हिटलर भी मौजूद था, जहां करीब डेढ़ लाख लोग बड़ी संख्या में मौजूद थे और जर्मनी का सबसे बड़ा तानाशाह हिटलर भी मौजूद था। जब उसने देखा कि भारत का केवल एक ही खिलाड़ी इतना अच्छा खेल रहा है तो ध्यानचंद जी को देखकर स्टेडियम में उतरा और बोला, 'अपनी हॉकी स्टिक तोड़ दो।'

जरूर यह हॉकी स्टिक में चुम्बक चिपकाकर खेल रहा हैं, ध्यानचंद जी की हॉकी स्टिक वही तोड़ी गई, कुछ नहीं निकला । रात में हिटलर ने ध्यानचंद जी को अपने केबिन में बुलाया और उनसे पूछा हॉकी खेलने के अलावा और क्या करते हो ? ध्यानचंद जी ने बताया कि वह फौज में सूबेदार हैं।

यह सुनकर हिटलर ने कहा ''इतना अच्छा खेलते हो, तुम्हे तुम्हारे देश ने क्या दिया ? जर्मनी की तरफ से खेलो मैं तुम्हे फील्ड मार्शल बना दूंगा ।''

अब बात देश की आ गई थी हिटलर की बात सुनकर ध्यानचंद जी ने कहा 'हिटलर साहब, ये मेरे देश की जिम्मेदारी नहीं हैं कि वह मुझे आगे बढ़ाए, ये तो मेरी जिम्मेदारी हैं कि मैं अपने देश को आगे बढ़ाऊँ ' ।

हे माधव...



शिवम् डी.एन. मिश्रा
बी.ए. पूर्व छात्र

सृष्टि खत्म हो रही माधव, अब तो अपने नेत्र खोलो।
क्यों करा स्थापित धर्म तुमने क्यों रचा महाभारत का रण
क्यों तृप्त करी भूमि तुमने क्यों संहार किया असुरों का वन
जब खड़ा आज कलियुग में मैं अधर्म यहाँ की बोली है
इंसानों की शक्लों में असुरों की टोली है
शस्त्र अस्त्र और ध्वजा से आज अधर्म फैलाया जाता है
प्रगति की त्वचा से वस्त्र बनाया जाता है
सच बताने वाले अक्सर मौन कर दिए जाते हैं
और झूठ का महिमामंडन करने वाले घर-घर पाए जाते हैं
तो मैं पूछता हूँ ग्वालों के राजा, क्या धर्म पशुओं का संहार है?
यह कैसी तेरी करुणा, यह कैसा पालनहार है?
क्यों बचाया था द्रौपदी को जब स्त्री का स्वप्न अब भी दुश्वार है?
क्यों बनाया था औषधि को जब गरीब अब भी बीमार है?
क्यों युवा चेतना खो चुका है मदिरालय के प्यालों पर?
क्यों सही-गलत सब फँस चुके हैं अज्ञानता के जालों में?
सृष्टि खत्म हो रही माधव, अब तो अपने नेत्र खोलो
पीड़ित, गरीब, भूखे भक्तों की खातिर भी तो कुछ बोलो
कह दो, वरना झूठ था सब, झूठ थी वह सारी बातें
व्यर्थ है हम सबका शीश झुकाना, मिट्टी की मूरत कुछ न कह पाते
और गलत अगर मैंने कहा तो चलाओ सुदर्शन आज तुम
पर मेरे सर की कुर्बानी के बदले देखो दर्पण आज तुम
बदलो यह संसार सारा, यहाँ सूखे पन्नों की बू है
सींचो इस धरती को फिर से, इसमें मेरे रक्त की खुशबू है
इस रक्त की हर एक बूँद से फिर एक नई धरती जनमेगी
बनेंगी नई संस्कृतियाँ, फिर नए जीवन पनपेंगे
फिर तुम ईश्वर बन जाना, मैं फिर भक्त कहलाऊँगा
मीरा, सूरदास, सुदामा, रसखान के नामों से जाना जाऊँगा।

भारत की बेटी



मो. नजमूल अंसारी
एम.एस.सी. रसायन शास्त्र

लुटती हुई संस्कृति को लूटा समझदार अपनो ने
रेप हुआ मासूमों का और साथ छोड़ा सपनों ने
होना माडर्न बड़ी अच्छी बात है। सोच सुधारो न लड़को अपनी
कह देना भी सच्ची बात है पर हर लड़का बुरा नही होता
चरित्र में वो अधूरा नही होता ।

खैर यहाँ बात किसी जेंडर की नही, नारी के सम्मान की है
भोग विलास की वस्तु नही वो, चरचा उसकी आबरू और अभिमान की है
सोचता है दिल इस अश्लीलता को रोकना जरूरी है
मानसिकता जो है बुरी उसे ठोकना जरूरी है
कला, अभिव्यक्ति और अधिकार का ढोल पीटकर क्यों बस तुम तुष्टिकरण करते हो।

खुश करने के और कई तरीके है, महिला का फिर क्यों वस्तुकरण करते हो
सबकुछ बस पैसा तो नही होता, हाड़ी रानी और माता मीरा के बच्चों का आदर्श
ऐसा नही होता आज एक बिटिया ने पाखण्ड की आधुनिकता को ललकारा है
यौवन कोई अंग प्रदर्शन का साधन नहीं, यह अमिट स्वाभिमान हमारा है।

सुप्त वासनाओं को तुम उकसाते हो अप्रत्यक्ष रूप में फिर
अपराध बढ़ाते हो, ज्ञान दोगे फिर महिला सशक्तिकरण का
क्यों हमें मूर्ख बनाते हो, भारत की बेटी अब तो जग गयी है
लूटती है आबरू क्यों इसकीं, वो अब समझ गयी है...लिव इन उसका कल्चर नहीं
संस्कारो संग ही उसे जीना है, ठुकराकर माँ-बाप को बदनामी का विष नही पीना है..
आज नही तो क्या कल समझना होगा वरना भारत के बच्चो तुम्हें बिखरना होगा ।

विवेकानंद महाविद्यालय में हुआ आत्मनिर्भर भारत की प्रदर्शनी, मिलेट्स व्यंजनों ने खींचा सबका ध्यान

छ.ग.फ्रंटलाइन

एमसीबी। सेवा पखवाड़ा 2025 के तहत शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में आत्मनिर्भर भारत और वोकल फॉर लोकल प्रचार अभियान का जिला स्तरीय आयोजन धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन संयोजक सरोजबाला श्याम बिश्नोई और कार्यक्रम प्रभारी शरणजीत कुजूर की देखरेख में किया गया।





इस दौरान कोरिया मिलेट्स कैफे बैकुण्ठपुर, छिन्दडांड, लालखुरी एवं मुस्कान ने अपने स्टाल से प्रदर्शनी में भाग लिया। इसके अलावा कोरिया मोदक आनी बैकुण्ठपुर से प्रभा, सैफून, निशा और कोरिया एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड छत्तीसगढ़ से वसीम अकरम, अजीत तथा कुमकुम महिला उत्पादक कृषक समूह नागपुर की ममता राय और लक्ष्मी महिला उत्पादक समूह चनवारीडांड की संगीता, ज्योति, रानी ने अपने स्टालों के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को प्रदर्शित किया। प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन प्रोफेसर श्रावणी चक्रवर्ती ने किया। इस आयोजन में लोकल पर वोकल की अवधारणा को प्रमुखता दी गई, जिसका संदेश स्पष्ट है कि स्थानीय उत्पादों को अपनाना और गर्व से उनके बारे में बोलना। यह पहल आत्मनिर्भर भारत अभियान की मूल भावना को परिभाषित करती है, जिसमें विदेशी वस्तुओं की बजाय स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता देकर किसानों, कारीगरों और छोटे उद्यमियों को सशक्त किया जाता है।

प्रदर्शनी के दौरान जनसंपर्क विभाग की मासिक पत्रिका जनमन का वितरण किया गया और स्थानीय उत्पादों एवं स्वरोजगार आधारित सामग्री को भी प्रदर्शित किया गया। खास आकर्षण का केंद्र बने मिलेट्स से तैयार पारंपरिक और स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन, जिन्हें आगंतुकों ने स्वाद चखा और इनके पोषण महत्व की जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम में जीवनशैली और स्वास्थ्य पर आधारित विशेष व्याख्यान भी आयोजित किए गए, जिसमें विशेषज्ञों ने संतुलित आहार, मिलेट्स के लाभ और सकारात्मक जीवन शैली अपनाने पर जोर दिया। इसी अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) स्थापना दिवस भी उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस भव्य आयोजन में सदस्य भीमसेन भगत, डॉ. रेणु प्रजापति, डॉ. रिंकी तिवारी, अल्पना खलखो, डॉ. नसीमा बेगम अंसारी, रंजीत मनी सतनामी के साथ सभी शिक्षक और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

100 गायों से की जाएगी जो जन गाय का पालन होना चाहिए। किया।

महाविद्यालय के रोजगार मेलें में दो चरणों में चयन

नईदुनिया न्यूज,मनेंद्रगढ़ : नगर के शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय में विगत दिनों में महाविद्यालय एवं प्रिज्म ग्रुप आफ इंस्ट्यूशन, भिलाई के संयुक्त तत्वावधान में रोजगार मेले का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर श्राबनी चक्रवर्ती के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में किया गया। इस रोजगार मेले का आयोजन स्नातक अंतिम वर्ष एवं स्नातकोत्तर के प्रथम एवं द्वितीय दोनों वर्षों के छात्र-छात्राओं के लिए दो चरणों में आयोजित हुआ। प्रथम चरण में पंजीकृत छात्र-छात्राओं की तार्किक परीक्षा पश्चात द्वितीय चरण में उनके व्यक्तित्व परीक्षण एवं साक्षात्कार के



शासकीय महाविद्यालय स्टाफ● नईदुनिया

परिणामों के आधार पर प्रिज्म कालेज, भिलाई द्वारा उड़ान 2025 आपेन प्लेस्मेंट कैम्प द्वारा आठ जुलाई से 12 जुलाई तक आयोजित होने वाले रोजगाार कार्यशाला में बुलाया जाएगा। विदित हों की इस रोजगाार मेले में महाविद्यालय एवं प्रिज्म ग्रुप आफ इंस्ट्यूशन, भिलाई के साथ तीन वर्षीय अनुबंध किया गया है ,जिसका उद्देश्य छात्र-छात्राओं के लिए प्लेसमेंट कैम्प के माध्यम से संभावित रोजगार उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए महाविद्यालय के डा. अरूणिमा दत्ता, भीमसेन भगत, रंजीतमणी सतनामी एवं डा. नसीमा बेगम अंसारी की मुख्य भूमिका रहीं हैं। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक डा.रश्मि तिवारी, डा.सुशील कुमार तिवारी,अनुपा तिग्गा, स्मृति अग्रवाल, सुनील गुप्ता कमेलश पटेल ,सुशील कुमार सहित छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

भूतपूर्व छात्र-छात्राओं ने अनुभव किया साझा

नईदुनिया न्यूज, मनेंद्रगढ़: शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राचार्य डा. श्रावनी चक्रवर्ती के संरक्षण एवं मार्गदर्शन तथा एलुमनी समिति प्रभारी डा. रश्मि तिवारी के संयोजन में भूतपूर्व छात्र-छात्राओं का मिलन उत्सव आयोजित किया गया। इस आयोजन में उपस्थित भूतपूर्व छात्र-छात्राओं का सर्वप्रथम महाविद्यालय समिति द्वारा कुंकुम-रोली से टीका एवं बैज लगाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् प्राचार्य डा. चक्रवर्ती ने अपने उद्बोधन में सभी उपस्थित भूतपूर्व छात्र-छात्राओं का हार्दिक अभिनंदन किया एवं उन्हें महाविद्यालय का गौरव बताया। उन्होंने बताया कि इस मिलन उत्सव का उद्देश्य महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र-छात्राओं से दोबारा संपर्क स्थापित कर संस्थान से उनका भावनात्मक जुड़ाव मजबूत करना एवं उनके करियर अनुभव और जीवन से जुड़ी सीख को वर्तमान छात्रों व शिक्षकों से साझा करना है। साथ ही महाविद्यालय की प्रगति, उपलब्धियों व भावी योजनाओं से आप सभी को अवगत कराना ताकि हमारा एक सक्रिय एलुमनी एसोसिएशन हो। आपकी मदद से न केवल संस्था की गरिमा और गुणवत्ता में वृद्धि होती है, बल्कि यह नैक मूल्यांकन में भी महाविद्यालय को उच्च स्तर पर पहुंचाने में सहायक सिद्ध होता है। कार्यक्रम का संचालन कर रहीं एलुमनी प्रभारी डा. रश्मि तिवारी ने बताया कि इस मिलन समारोह का उद्देश्य केवल पुनर्मिलन नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है- यह एक ऐसा सेतु जो भूतपूर्व छात्रों को महाविद्यालय के वर्तमान और भविष्य से जोड़ता है। आप सभी एलुमनी, अपने अनुभव, संसाधन और सहयोग के माध्यम से इस संस्थान को और अधिक सशक्त बना सकते हैं। एलुमनी सतीश उपाध्याय, ज्योति मजूमदार, ममता राणा, रामचरित द्विवेदी, डा. अमूल्यचंद्र झा, मंजूलता कश्यप, सुमन पाठक, राकेश बेहरा एवं गोपाल गुप्ता जी ने अपने महाविद्यालय से जुड़ी बहुत सारी स्मृतियां साझा की एवं महाविद्यालय के उत्तरोत्तर विकास के लिए कृत संकल्पित होकर हर संभव प्रयास करने की बात कही। एलुमनी समिति के सदस्य डा. सुशील तिवारी एवं आईक्यूएसी प्रभारी डा. अरूणिमा दत्ता ने महाविद्यालय के विकास में एलुमनी के योगदान को विस्तार से बताया। कार्यक्रम के अंत में समिति सदस्य एवं एलुमनी भीमसेन भगत सहायक प्राध्यापक भूविज्ञान के द्वारा आभार जताया। आज के आयोजन को सफल बनाने में कार्यालयीन स्टॉफ रजिस्ट्रार यशवंत शाक्य, मनीष श्रीवास्तव, बी.एल.शुक्ला, सुनीत जानसन बड़ा, मीना त्रिपाठी, साधना बुनकर, हेमंत सिंह, प्रदीप मलिक, पारस, सतीश सोनी एवं ममता का महत्वपूर्ण योगदान रहा।



पूर्व छात्रा का बैज लगाकर स्वागत करती महाविद्यालय की प्राचार्य ● नईदुनिया

हर घर तिरंगा एवं देशभक्ति के उत्साह से विवेकानंद स्नातकोतर महाविद्यालय में बाइक रैली एवं विविध कार्यक्रमों का आयोजन

मनेन्द्रगढ़, ईएमएस। जिला एमसीबी शासकीय विवेकानंद स्नातकोतर छत्तीसगढ़ में एम सी बी. जिले का अग्रणी महाविद्यालय है स्वतंत्रता सफ्ताह (हर घर तिरंगा) 12 अगस्त से अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद नई दिल्ली के तत्वाधान में हर घर तिरंगा अभियान 2025 का आयोजन किया गया यह कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ श्रावणी चक्रवर्ती के निर्देशन एवं संरक्षण और कार्यक्रम संयोजक डॉ रश्मि तिवारी व डॉ सुशील तिवारी और सहसंयोजक डॉ प्रभा राज के संचालन में सम्पन्न हुआ, हर घर तिरंगा अभियान पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित (बोर्ड सज्जा तिरंगा आर्ट, तिरंगा रंगोली, तिरंगा क्विज, साइकिल/बाइक रैली तिरंगा राष्ट्रगान, नशा मुक्ति भारत अभियान) कर सभी संकाय के अधिकारी, स्टॉफ एवं छात्र छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और जन जागरूक किया। प्रतिभागियों ने कहा राष्ट्रध्वज केवल एक प्रतीक नहीं बल्कि देश की एकता, अखंडता और स्वतंत्रता का प्रतीक है



जिसका सम्मान हर नागरिक का कर्तव्य है, हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने के लिए पूरे कार्यक्रम का माहौल देशप्रेम के रंग में रंगा हुआ था जहां हर चेहरे पर गर्व और उत्साह झलक रहा था, हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने में सभी प्रोफेसर एवं अतिथि व्याख्याता ऑफिस स्टॉफ व छात्र छात्राओं की बहुत बड़ी भूमिका रही है आई क्यू ए सी प्रभारी डॉ अरुणिमा दत्ता एवं कार्यक्रम प्रभारी समिति प्रोफेसर भीमसेन भगत, डॉ नसीमा बेगम अंसारी, श्रीमती अनुपा तिग्गा कमलेश पटेल और अतिथि व्याख्याता डॉ रेनू प्रजापति, रामनिवास गुप्ता, डॉ रामजी गर्ग , शुभम गोयल, पुष्पराज सिंह, डॉ रिंकी तिवारी, प्रकाशदास मानिकपुरी, शिव कुमार, सुमित कुमार तिवारी, अल्पना रानी खलको, शिवानंद साकेत, एवं ऑफिस स्टाफ मनीष श्रीवास्तव, सुनीत बरा, पी. एल. पटेल , बी एल शुक्ला , भोला प्रसाद रजक , कमलू मार्को, रामखेलावन गुप्ता, सभी की सहभागिता सफल संचालन में सराहनीय रही।

धूमधाम से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस



मनेंद्रगढ़। शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन गरिमामय और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत वातावरण में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रो. श्राबनी चक्रवर्ती ने ध्वजारोहण कर किया। उन्होंने वीर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके संघर्षों और बलिदानों को स्मरण किया। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा देशभक्ति से परिपूर्ण गीत, कविताएं, भाषण एवं रंगारंग नृत्य प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिन्होंने सभी उपस्थित जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापकगण डॉ. रश्मि तिवारी, डॉ. सुशील कुमार तिवारी, डॉ. अरुणिमा दत्ता, स्मृति अग्रवाल, कमलेश पटेल एवं सुनील गुप्ता साथ ही अतिथि व्याख्याता रामनिवास गुप्ता ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में विगत दिनों महाविद्यालय में आयोजित घर-घर तिरंगाकार्यक्रम के तहत आयोजित रंगोली, क्विज एवं बोर्ड सज्जा के विजेता छात्र-छात्राओं को प्राचार्य ने पुरस्कृत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्राध्यापकगण भीमसेन भगत, सुशील कुमार छात्रे अतिथि व्याख्यातागण डॉ. रामजी गर्ग, शुभम गोयल, पुष्पराज सिंह, डॉ. रिंकी तिवारी, अल्पना खलखो, सुमित तिवारी कार्यालयीन स्टाफ सुनित जानसन बड़ा, बीएल शुक्ला, मीना त्रिपाठी, भोले प्रसाद, हेमंत सिंह, कमलू सिंह मार्को, साधना बुनकर, लड्डू गोपाल, प्रदीप मलिक, सतीश सोनी, पारस तिग्गा एवं ममता का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुशील कुमार तिवारी ने किया।

मनेंद्रगढ़ जिलेमी मतपुर

विवेकानंद महाविद्यालय की विद्यार्थियों ने जीता राज्यस्तरीय पुरस्कार।

Gopal Rajkumar Chitte Dr Editor · January 16, 2025 · 1 minute read

Facebook · Messenger



मनेंद्रगढ़। छत्तीसगढ़ राज्य युवा कल्याण विभाग के द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य युवा महोत्सव 2024 का आयोजन 12 जनवरी से 14 जनवरी तक बलबीर सिंह जुनेजा स्टेडियम, साइज कॉलेज प्रांगण रायपुर में किया गया। जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य के समस्त जिले से विभिन्न विधाओं में हजारों विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की थी। जिला एमसीबी के विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से सैकड़ों विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता की, जिसमें शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय से अदिति अग्रवाल (बीकॉम), जया शर्मा (बीकॉम), मानसी अग्रवाल (बीएससी), इशिका (बीएससी), सतीश पांडेय (बीए) ने कहानी लेखन, लाल्कालिक भाषण एवं कविता पाठ में अपनी सहभागिता की। जिसमें कहानी लेखन में अदिति अग्रवाल (बीकॉम) ने राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा मानसी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ श्राबनी चक्रवर्ती ने विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामना दी।

विवेकानन्द महाविद्यालय मनेंद्रगढ़ में राष्ट्रीय एकता दिवस पर किया गया कार्यक्रम का आयोजन

अमृत संदेश । मनेन्द्रगढ़



शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वें जन्म दिवस के अवसर पर 31 अक्टूबर 2025 को पूर्वाह्न महाविद्यालय में लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर डॉ. विश्नोई ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि आपकी नेतृत्व कार्य एवं निर्णायक भूमिक दृढ़संकल्प, अडिग इच्छाशक्ति से भारत को स्वतंत्रत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आजादी के बाद भारत के एकीकरण में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपने स्वतंत्रता के बाद भारत की 562 से अधिक देशी रियासतों को भारतीय संघ में सफलतापूर्वक विलय कराया, जिससे भारत एक मजबूत राष्ट्र बना। इन्हीं कार्यों के कारण सरदार वल्लभ भाई पटेल को लौह पुरूष के रूप में जाना जाता है। आपके दृढ़ प्रयासों के कारण ही भारत की एकता संभव हो पाई। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती के संरक्षण में प्रभारी प्राचार्य डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई द्वारा शपथ दिलाई गई। उपस्थित सभी अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सुरक्षा को बनाये रखने की शपथ ली। डॉ. रश्मि तिवारी, डॉ. सुशील कुमार तिवारी, डॉ. अरूणिमा दत्ता, श्री रंजीतमणी सतनामी, डॉ. नसीमा बेगम अंसारी, श्रीमती स्मृति अग्रवाल श्री शरणजीत कुजूर, श्री सुनील कुमार गुप्ता, श्री कमलेश पटेल, डॉ. रामजी गर्ग, श्री रामनिवास गुप्ता, डॉ. रिंकी तिवारी, सुश्री अल्पना रानी खलखो, श्री पुष्पराज सिंह, श्री प्रकाशदास मानिकपुरी, श्री सुमित कुमार तिवारी श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव, श्री सुनील जॉनसन बाड़ा, श्री बाबूलाल शुक्ला, श्रीमती मीना त्रिपाठी, सुश्री साधना बुनकर, श्री सतीश सोनी, श्री पारसनाथ तिग्गा एवं विद्यार्थी द्वारा बड़ी संख्या में इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की शपथ ली।

विवेकानंद महाविद्यालय में आयोजन

शहीदों की स्मृति में पौधरोपण एवं संरक्षण करने लिया संकल्प



मनेंद्रगढ़ @ पत्रिका. विवेकानंद महाविद्यालय में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत विभाजन विभीषिका दिवस पर विशेष पौधारोपण हुआ। इस दौरान वीर शहीदों की अमर गाथा को नमन करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। प्राचार्य डॉ श्रावनी चक्रवर्ती के नेतृत्व में विभिन्न प्रजातियों के फलदार एवं छायादार पौधों का रोपण किया गया। साथ ही प्राध्यापक, कर्मचारी तथा छात्र-छात्राओं को वृक्ष लगाने, उनकी देखरेख करने और संरक्षण की शपथ दिलाई गई। प्राचार्य डॉ चक्रवर्ती ने कहा कि पेड़ न केवल हमारे जीवन का आधार हैं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ भविष्य का प्रतीक भी हैं। प्राध्यापक एवं विद्यार्थियों ने साथ मिलकर पौधे लगाए एवं नियमित सिंचाई कर देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेने का संकल्प लिया। पौधारोपण स्थल पर लगाए गए पौधों के पास नाम पट्टिकाएं भी लगाई गईं। जिससे उनकी पहचान बनी रहे और सभी को उनकी सुरक्षा के प्रति जागरूक रहेंगे। यह अभियान न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक कदम है, बल्कि विभाजन विभीषिका दिवस पर शहीदों और पीड़ितों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का भी एक सार्थक प्रयास है। महाविद्यालय ने यह संदेश दिया कि हर व्यक्ति यदि एक पौधा लगाकर उसका संरक्षण करे तो धरती को हराभरा और जीवन को संतुलित बनाए रखा जा सकता है।

सेवानिवृत्त प्रेमलाल का सम्मान कर विदाई दी

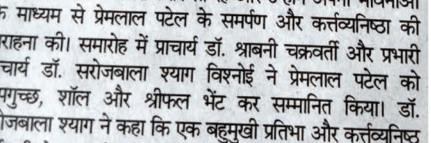

मनेंद्रगढ़ | शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़ में 31 अक्टूबर को प्रेमलाल पटेल के अर्द्धवार्षिकी समारोह का आयोजन किया गया। प्रेमलाल पटेल 1984 से महाविद्यालय में प्रयोगशाला तकनीशियन के रूप में कार्यरत हैं। इस अवसर पर सभी अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे और उन्होंने अपनी भावनाओं के माध्यम से प्रेमलाल पटेल के समर्पण और कर्त्तव्यनिष्ठा की सराहना की। समारोह में प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती और प्रभारी प्राचार्य डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई ने प्रेमलाल पटेल को पुष्पगुच्छ, शॉल और श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। डॉ. सरोजबाला श्याम ने कहा कि एक बहुमुखी प्रतिभा और कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मचारी के रूप में प्रेमलाल पटेल का योगदान महाविद्यालय के लिए अमूल्य है। इस अवसर पर डॉ. अरूणिमा दत्ता, डॉ. रश्मि तिवारी, डॉ. सुशील कुमार तिवारी, डॉ. प्रभा राज मौजूद रहे।

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय में रजत जयंती के उपलक्ष्य में हुआ विविध कार्यक्रमों का आयोजन

अमृत संदेश । मनेन्द्रगढ़



राज्य स्तरीय सेमीनार का आयोजन, क्वीज प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता एवं ग्रुप डिस्कशन, रजत जयंती तीन दिवसीय पुस्तक मेला, रोजगार मेला का आयोजन, पोस्टर प्रतियोगिता, रैली तथा जनजागरूकता कार्यक्रम, नुक्कड़-नाटक, नशा उन्मूलन, पोषण एवं आहार पर आयोजन, हिन्दी पखवाड़े का आयोजन तथा भूतपूर्व छात्र मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में सात दिवसीय छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के गौरवमयी 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में एवं वर्ष 2047 तक छत्तीसगढ़ राज्य को विकसित राज्य बनाने के दृष्टि से शासन के निर्देशानुसार कार्यक्रमों का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती के मार्गदर्शन एवं डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई के संयोजन में हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्रा जया शर्मा बी.कॉम. तृतीय वर्ष ने प्रथम स्थान, साक्षी बी.एससी. तृतीय सेमेस्टर ने द्वितीय स्थान एवं राजकुमार बी.ए. तृतीय सेमेस्टर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने छत्तीसगढ़ राज्य की 25 वर्षों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा 2047 तक विकसित छत्तीसगढ़ की कल्पना पर अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही छात्र-छात्राओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और संस्कृति के क्षेत्र में तेजी से प्रगति एवं डिजिटल तकनीकी मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के दूसरे चरण में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराया गया जिसमें राजकुमार यादव बी.एससी. प्रथम सेमेस्टर ने प्रथम स्थान, आयुष कुमार सिंह एम.एससी. रसायनशास्त्र तृतीय सेमेस्टर ने द्वितीय स्थान एवं वारिस अहमद एम.ए. प्रथम सेमेस्टर, वंदना तिवारी एम.एससी. रसायनशास्त्र तृतीय सेमेस्टर, साक्षी गुप्ता एम.एससी. रसायनशास्त्र प्रथम सेमेस्टर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र-छात्राओं में पुस्तकों के प्रति प्रेम भावना बढ़ाने के लिए महाविद्यालय में भव्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। मेले में विभिन्न प्रकाशकों एवं संस्थाओं ने अपनी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। गायत्री परिवार मनेन्द्रगढ़ से श्री डी.के. जायसवाल, शिवकुमार नागर, टंकेश्वर विशाल गायत्री परिवार कल्याणपुर एवं गायत्री परिवार अम्बिकापुर से सेवानिवृत्त शिक्षा विभाग के शिक्षक कृष्ण प्रताप गुप्ता ने अखिल भारतीय विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के द्वारा लिखित साहित्य एवं मथुरा द्वारा प्रकाशित साहित्य, गीता प्रेस गोरखपुर का साहित्य, रामकृष्ण विवेकानंद समिति का साहित्य पुस्तक मेला में उपलब्ध कराया।

स्वास्थ्य शिविर में सात विद्यार्थियों ने किया रक्तदान



नईदुनिया न्यूज, मनेन्द्रगढ़: छत्तीसगढ़ राज्य के रजत जंयती समारोह अंतर्गत सेवा पखवाड़ा में शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय में यूथ रेडक्रास सोसायटी, रेड रिबन क्लब, राष्ट्रीय सेवा योजना, गृहविज्ञान विभाग, आईक्यूएससी के संयुक्त तत्वावधान में स्वास्थ्य एवं रक्तदान शिविर तथा जन-जागरूकता व्याख्यान, रक्त समूह प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । इस दौरान रक्तदान में 63 छात्रों ने पंजीकरण कराया गया जिसमें रक्तदान करने के मापदण्डों को 7 छात्राओं ने पूर्ण किया। इस दौरान कुछ छात्र का वजन कम था शेष छात्र का हिमोग्लोबिन दस प्रतिशत तक ही था। सबीना कुर्रे, तेजवती यादव, सविता चक्रधारी, शालिनी, साक्षी सिंह, नूपुर सोनी, लक्ष्मी यादव, कौशिल्या ने रक्तदान किया। छात्रों ने भी रक्तदान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं का रक्त समूह परीक्षण कराकर संधारण किया गया।

जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत-ऐतिहासिक, सामाजिक व आध्यात्मिक विषय पर हुई कार्यशाला

अमृत संदेश । मनेन्द्रगढ़



छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में एकदिवसीय कार्यशाला ' जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत-ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक' विषय पर सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 11:30 बजे अतिथि आगमन एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री परमेश्वर सिंह अध्यक्ष जनजातीय गौरव समाज सरगुजा उपस्थित रहे। कार्यशाला की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. श्रावनी चक्रवर्ती ने की। कार्यक्रम के संयोजक श्री भीमसेन भगत तथा सह-संयोजक श्री सुशील कुमार छात्रे रहे। दीप प्रज्वलन के पश्चात राजकीय गीत का सामूहिक गायन किया। मंच का संचालन श्री रंजीतमणी सतनामी द्वारा किया गया। प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती ने संस्था के अध्यक्षीय उदबोधन में जनजातीय समाज के सांस्कृतिक गौरव एवं उनके अमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न जनजातीय क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षपूर्ण इतिहास पर विस्तृत व्याख्यान दिया। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. रश्मि तिवारी ने जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत के विभिन्न सामाजिक संरचना उनके जीवन पहलुओं पर विस्तृत व्याख्यान मूल्य, परंपराओं और आधुनिक समाज में उनकी भूमिका पर व्याख्यान दिया। मुख्य अतिथि श्री परमेश्वर सिंह ने जनजातीय समाज की संस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली अतीत से परिचित कराने की आवश्कता पर विस्तृत व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़कर रंगोली, चित्रकला जैसे प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया। छात्र-छात्राओं के लिए जनजातीय महापुरूषों, क्रांतिकारियों, नेताओं का छायाचित्र के माध्यम से दीवारों पर प्रदर्शनी लगाया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई, डॉ. रश्मि तिवारी, श्री रंजीतमणी सतनामी, श्री शरणजीत कुजूर, श्री सुनील कुमार गुप्ता, श्री कमलेश पटेल, डॉ. रामजी गर्ग, प्रतिभागियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का हृदय से आभार तिवारी, सुश्री अल्पना रानी व्यक्त किया।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में वोकल फॉर लोकल के महत्व को मेला के माध्यम से विवेकानन्द महाविद्यालय में प्रतिपादित किया

जनपुनवास





मनेन्द्रगढ़। आत्मनिर्भर भारत वोकल फॉर लोकल जिला स्तरीय मेला प्रदर्शनी, आज एवं योजना का अन्तर्गत विभिन्न स्वयं सहायता समूहों को प्रदर्शनी एवं बीपरामर्शी व्यवसाय सेवा पखवाड़ा 2025 में शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में गृहविज्ञान विभाग, रेडक्रास क्लब, इको क्लब, सांस्कृतिक संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुआ इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती ने दीप प्रज्वलन का शुभारंभ किया। मेला अन्तर्गत आयोजित प्रदर्शनी में विभिन्न स्वयं सहायता कार्यकारी का उद्घाटन किया। मेला अन्तर्गत महाविद्यालय के व्यंजनों में रागी चीला, कोदो की खीर, रागी व्यंजन डोसा, मिलेट्स पोहा चीला, ज्वार के गुलाब जामुन, कोदो की खीर, रागी व्यंजन डोसा, मिलेट्स पोहा चीला, मिलेट्स का सत्तूपिज्जा, कोदो की लपसी, कोदो इडली, रागी, बाजरा की वर्फी की धूप रही सभी विद्यार्थी एवं अतिथियों ने मिलेट्स उत्पाद की सराहना की रागी की खीर एवं वर्फी, गुलाब जामुन की बहुत तिखी हुई। इसी क्रम में कोंदो मोदक, वैकुण्ठपुर से आये प्रभा कनौजिया, दीपुरिया ने मोदक की मेले में प्रदर्शनी लगाई। मोदक की भी सभी ने बहुत सराहना की एवं बड़ी मात्रा में लोगो द्वारा मोदक खरीदा गया। मोदक सुगल रूप से तिल, घी, गुड़, मूंगफली, गुड़ दोनों भी एवं खुशबू के लिए इलायची पाउडर का उपयोग करके मोदक बनाये गये थे। आगे क्रम में कोदिया एग्रो प्रोसूसर कम्पनी लिमिटेड उसीगढ़, वैकुण्ठपुर से श्री. खरिया, अजीत सिंह ने उपस्थित होकर मुंगलाल, पनवादार, सहपालक, कुल्लमो दास, जीतपुर पाकल, ए.टू. पी. शहर आदि अतिरिक्त कृषि उत्पाद लेकर उपस्थित हुए लेगे ने इसको भी बड़ी मात्रा में खरीदा। इस कार्यक्रम में सम्मिलित सभी समूहो को प्रभारी डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती, कार्यक्रम संयोजक डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई, विश्वापालय गृहविज्ञान एवं कार्यक्रम प्रभारी डॉ. हालाकोरी कुजूर द्वारा हस्तांतरित प्रमाण पत्र प्रभारी चक्रवर्ती द्वारा वितरित किया गया इस कार्यक्रम में भौमसेन भगत, डॉ. रेनु प्रजापति, डॉ. रिंकी तिवारी सुश्री अल्पनारानी खलखो ने सहयोग के रूप योगदान दिया इस कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार संयोजक डॉ. विश्नोई द्वारा प्रकट किया गया।

यह कार्यक्रम के द्वितीय चरण में दिव्यांग और विशिष्ट व्यक्ति का सम्मान सेवा पखवाड़ा 2025 के अन्तर्गत किया गया, जिसमें महाविद्यालय में पहले वाले तरुन सिंह, परमेश्वर सिंह, कमलेश सिंह, अदिति द्विवेदी, रविशंकर पटेल, विश्वम्भर सिंह, सुरेन्द्र सिंह, मोहेा कुमार, राहुल कोल को विशेष सम्मान, पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। विशेष व्यक्तियो के रूप में प्रेमलाल पटेल एवं राधकिशनलाल गुप्ता, को सम्मानित किया गया। इसे कार्यक्रम में शिवानन्द सवकेत अतिथि व्यवस्थता ने सहयोग किया।

कार्यक्रम के अगले चरण में खादी वस्त्रओं की खरीद एवं प्रोत्साहन हेतु खादीग्रामोद्योग आयोग सेवा पखवाड़ा 2025 के अन्तर्गत दि किया गया, जिसमें खादी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष कमलेश पटेल द्वारा खादी के एतिहासिक महत्व को प्रतिपादित किया, आगले क्रम में सुख पकाने के रूप में विभागाध्यक्ष दिल्ली डॉ. हालाकोर तिवारी द्वारा खादी के महत्व को और ध्यान आकर्षित करते हुए कहा की खादी एक परव नही, बल्कि खादी हमारे स्वतत्रता, आत्मनिर्भरता और देश भक्ति का प्रतीक बन गई है। उन्होने भी खादी की चादर देते वे गांधी बन जाऊं कविता को आगे बढ़ाते हुए कहा की खादी को और भी सम्मान स्थान आकर्षित करते हुए गांधी जी के खादी पूर्ण जीवन को भी स्मरण किया। डॉ. विश्नोई ने इस अवसर पर कहा की हमें खादी के प्रमोण अवसर पर कहा की हमें खादी के प्रमोण रोजगार को बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति को प्रतिवर्ष दो जोड़ी कपड़े खादी के अवश्य खरीदने चाहिए हमारे देश की जनसंख्या के अनुपात में यह कृषय भारत को आत्मनिर्भर बनाने की ओर एक कदम होगा। इसके प्रचार प्रसार के लिए जन जागरूकता फैलना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम को अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. चक्रवर्ती ने कहा की खादी के पैशनेबल कपड़े भी वर्तमान समय में बाजार में उपलब्ध है जिसमें पुरुष वर्ग आकर्षित हो रहे है। डॉ. तिवारी द्वारा स्मरण की गई की खादी की चादर देते मे गांधी बन जाऊं कविता को आगे बढ़ाते हुए कहा की खादी एवं स्वदेशी को स्वरक्षा कराऊगा। कविता को सुनाते हुए स्वरक्षक सेवा पखवाड़ा को सफल बनाने के लिए सयोजक डॉ. विश्नोई, सहायपोजक रंजीतमणी सतनामी, सहायोजक डॉ. नसीमा बेगम अंसारी, एवं समस्त स्टाफ को धन्यवाद दी, द्वितीय चरण के कार्यक्रम का सचालन डॉ. तौफिक तिवारी विश्वापालय संगीत द्वारा किया गया। इस अवसर पर सरगजीत कुजूर, पुष्पराज, श्री एल सुकलु, साधना बुनकर, हेमन्त सिंह उपस्थित रहे।

विवेकानंद कॉलेज में विद्यार्थियों ने लगाए पौधे

अमृत संदेश । मनेंद्रगढ़

शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में सोमवार को 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नगरपालिका परिषद अध्यक्ष प्रतिमा यादव, उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र पटवा और विधायक प्रतिनिधि सरजू यादव ने पौधारोपण कर किया। इस अभियान के तहत महाविद्यालय परिसर और कन्या छात्रावास में छायादार, फलदार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया। पौधारोपण शिविर का आयोजन ईको क्लब, रेड रिबन क्लब, रेडक्रॉस व राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती के संरक्षण में आयोजित कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई ने किया। उनके साथ डॉ. नसीमा बेगम अंसारी और अनुपा तिग्गा ने सह-संयोजन किया। इस अभियान के तहत विद्यार्थियों के माध्यम से 500 पौधे लगाए गए और उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया गया। साथ ही हाईस्कूल नई लेदरी में भी पौधारोपण किया गया, जहां पौधों की सुरक्षा की जिम्मेदारी विद्यार्थियों को सौंपी गई। इस अवसर पर डॉ. अमूल्यचंद झा, संतोष गुप्ता, नेहा सिंह, डॉ. रश्मि तिवारी, डॉ. प्रभा राज, डॉ. सुशील तिवारी, डॉ. रामकिंकर पांडेय, शरणजीत कुजूर, भीमसेन भगत, सुनील कुमार गुप्ता, कमलेश पटेल, सुशील कुमार छात्रे, डॉ. वर्षा तिवारी, डॉ. रामजी गर्ग, शुभम कुमार गोयल, रामनिवास गुप्ता, डॉ. रिंकी तिवारी, शिवानंद साकेत, शिवकुमार प्रमुख रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती, डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई, डॉ. नसीमा बेगम अंसारी, अनुपा तिग्गा एवं कालीराम श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझाया।



लगाए गए पौधों की सुरक्षा का लिया संकल्प



महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का स्थापना दिवस मनाया गया

जशपुरान्चल

मनेंद्रगढ़। शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़ की प्राचार्य प्रो. श्रावणी चक्रवर्ती के मार्ग दर्शन एवं संरक्षण में तथा राष्ट्रीय सेवा योजना महिला/पुरुष इकाई के कार्यक्रम अधिकारी रंजीतमणी सतनामी एवं डॉ. नसीमा बेगम अंसारी के संयोजन में महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (ह्स्स) का स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य, प्राध्यापकगण, कार्यक्रम अधिकारी तथा स्वयंसेवक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इसके पश्चात स्वयंसेवको ने राष्ट्रीय सेवा योजना की महत्ता एवं इसकी स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। प्राध्यापकों ने कहा कि ह्स्स युवाओं में सेवा, अनुशासन, सामाजिक दायित्व एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करने का सशक्त माध्यम है।

इस अवसर पर स्वयंसेवकों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक एवं रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिनमें गीत, भाषण एवं जागरूकता संबंधित गतिविधियाँ प्रमुख रहीं। साथ ही आगामी सत्र के लिए सामाजिक सरोकारों से जुड़े विशेष कार्यक्रमों की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई।

समापन अवसर पर प्राचार्य ने स्वयंसेवकों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण की दिशा में युवाओं का सशक्त अभियान है।

उन्होंने सभी को सेवा, सहयोग और सद्भाव के मूल्यों को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सरोज बाला श्याम बिश्नोई, डॉ. रश्मि तिवारी, एवं प्राध्यापक डॉ. सुशील कुमार तिवारी, शरणजीत कुजूर, भीमसेन भगत, कमलेश पटेल कार्यालयीन स्टाफ प्रेम लाल पटेल, राम खिलावन गुप्ता एवं अतिथि व्याख्याता पुष्पराज सिंह, डॉ. रिंकी तिवारी, कु. अल्पना रानी खलखो, शिवानंद साकेत, शिव कुमार आदि उपस्थित रहे अंत में डॉ. नसीमा बेगम अंसारी के द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अतिथियों एवं छात्र छात्रों का आभार व्यक्त किया गया।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में वोकल फॉर लोकल के महत्व को मेला के माध्यम से विवेकानन्द महाविद्यालय में प्रतिपादित किया

जशपुरान्चल

मनेंद्रगढ़। आत्मनिर्भर भारत वोकल फॉर लोकल जिला प्रशासन मेला प्रशासन, आदर्श ग्राम पोषण माह के अन्तर्गत जिलेभर की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं लाभार्थियों के व्यापक सेवा पखवाड़ा 2025 में शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में गृहविज्ञान विभाग, रेडरिबन क्लब, ईको क्लब, रासेयोके संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुए इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती ने दीप प्रज्वलन कर मेला एवं सेवा पखवाड़ा अन्तर्गत आयोजित होने वाले अन्य कार्यक्रमों का उद्घाटन किया। मेला अन्तर्गत माहो महिला उत्पादक समूह लोहंडी से अम्बा हर्बोरियम, बम्हनी एवं उर्वरिका सही जिलेभरी जैविक पूरक पावडर, दाल एवं अन्य कृषि उत्पाद मेला में विक्रय किया वहीं कुसमुण्डा महिला कृषि उत्पादक समूह नागपुर द्वारा विभिन्न प्रकार की दाले एवं आचार पापड़ विक्रय के लिए लाये, लक्ष्मी महिला उत्पादक समूह पिपरा पापड़ कई वाली अम्बख मुण्डवा मोरी के साथ जशीतली, मंगेरा लेकर उपस्थित हुई। इसी क्रम में बालिका मोटल, बैकुण्ठपुर से आये प्रभा कर्केटा, दीपुरिया ने मोटल की मेला में प्रदर्शनी लगाई। मोटल की भी सभी ने सराहना की एवं बड़ी मात्रा में लोगो द्वारा मोटल खरीदा गया। मोटल मुख्य रूप से तिला, जौ, बाजरा, मुनगाकली, पुट रोटी की एवं खुशबू के लिए इलायची पाउडर का उपयोग करके मोटल बनाये गये थे। अगले क्रम में बालिका एग्रो प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड उलरिडीह, बैकुण्ठपुर से मो. वसीम, अजीत सिंह ने उपस्थित होकर मुंगगटा, चनाघाट, मसुराघाट, कुल्थी दाल, जौसप्तुल चावल, ए.टू. पी. सहत आदि औषधिक कृषि उत्पाद लेकर उपस्थित हुए लोगो ने इसको भी बड़ी मात्रा में खरीदा। इस कार्यक्रम में पश्चिमित सभी समूहो को प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती, कार्यक्रम संयोजक डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई विभागाध्यक्ष गृहविज्ञान एवं कार्यक्रम प्रभारी डॉ. शरणजीत कुजूर द्वारा हस्तासहित प्रशंसा पत्र प्रमाणपत्र पावती दिया गया इस कार्यक्रम में भौमसेन भगत, डॉ. रेनु प्रजापति, डॉ. रिंकी तिवारी सुश्री अल्पनारानी खलखो ने सदस्य के रूप योगदान दिया इस कार्यक्रम का संचालन एवं आभार संयोजक डॉ. विश्नोई द्वारा प्रस्तुत किया गया।





यह कार्यक्रम के द्वितीय चरण में दिव्यांग और विशेष व्यक्ति का सम्मान सेवा पखवाड़ा 2025 के अन्तर्गत किया गया, जिसमें महाविद्यालय में पढ़ने वाले तरुण सिंह, पायमेश्वर सिंह, कमलेश सिंह, आदित्य द्विवेदी, रविशंकर पटेल, सुरेन्द्र सिंह, महेश कुमार, राहुल कोल को तिलक लगाकर, पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। विशेष व्यक्तियों के रूप में प्रेमलाल पटेल एवं राधिकारानन गुप्ता, को सम्मानित किया गया। इसी कार्यक्रम में शिक्षकगण सलाह अतिथि व्याख्याता ने सहयोग किया।

कार्यक्रम के अगले चरण में खादी वस्तुओं की खरीद एवं प्रोत्साहन हेतु व्यापक रूप से प्रोत्साहन किया गया। जिसमें खादी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए प्रतिभा विष्णु के विभागाध्यक्ष कमलेश पटेल द्वारा खादी के प्रतिवैज्ञानिक महत्व को प्रतिपादित किया, अगले क्रम में मुख्य वक्ता के रूप में विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ. सुशील तिवारी द्वारा खादी के महत्व को और ध्यान आकर्षित करते हुए कहा की खादी एक जन नही, व्यक्ति खादी हमारे स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और देश भक्ति का प्रतीक बन गई है। उन्होने भी खादी को चादर टेरें मे गांधी बन जाऊं कविता को आगे पूर्ण करते हुए कहा की भी खादी की चादर टेरें मे गांधी बन जाऊं सब मिलें के बीच बैठकर स्वच्छ भारत अभियान चलाकर श्रमदान के देश के सपने को साकार कर जाऊंगा, गांधी मोहताने एवं स्वयं को समर्पक बनाऊंगा। कविता को सुनाते हुए समापक सेवा पखवाड़ा को समाप्त बनाने के लिए संयोजक डॉ. विश्नोई, सहसंयोजक रंजीतमणी सतनामी, सहसंयोजक डॉ. नसीमा बेगम अंसारी, एवं समस्त स्टॉफ को धन्यवाद दी, द्वितीय चरण के कार्यक्रम का संचालन संयोजन डॉ. रश्मि तिवारी विभागाध्यक्ष संपेक्ष द्वारा किया गया। इस अवसर पर जशपानगीत कुजूर, पुष्पराज, श्री एल सुक्ला, साधना कुजूर, हेमन्त सिंह उपस्थित रहे।



महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का स्थापना दिवस मनाया गया

जशपुरान्चल

मनेंद्रगढ़। शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़ की प्राचार्य प्रो. श्रावणी चक्रवर्ती के मार्ग दर्शन एवं संरक्षण में तथा राष्ट्रीय सेवा योजना महिला/पुरुष इकाई के कार्यक्रम अधिकारी रंजीतमणी सतनामी एवं डॉ. नसीमा बेगम अंसारी के संयोजन में महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (ह्स्स) का स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य, प्राध्यापकगण, कार्यक्रम अधिकारी तथा स्वयंसेवक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इसके पश्चात स्वयंसेवको ने राष्ट्रीय सेवा योजना की महत्ता एवं इसकी स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। प्राध्यापकों ने कहा कि ह्स्स युवाओं में सेवा, अनुशासन, सामाजिक दायित्व एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करने का सशक्त माध्यम है।

इस अवसर पर स्वयंसेवकों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक एवं रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिनमें गीत, भाषण एवं जागरूकता संबंधित गतिविधियाँ प्रमुख रहीं। साथ ही आगामी सत्र के लिए सामाजिक सरोकारों से जुड़े विशेष कार्यक्रमों की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई।

समापन अवसर पर प्राचार्य ने स्वयंसेवकों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण की दिशा में युवाओं का सशक्त अभियान है।

उन्होंने सभी को सेवा, सहयोग और सद्भाव के मूल्यों को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सरोज बाला श्याम बिश्नोई, डॉ. रश्मि तिवारी, एवं प्राध्यापक डॉ. सुशील कुमार तिवारी, शरणजीत कुजूर, भीमसेन भगत, कमलेश पटेल कार्यालयीन स्टाफ प्रेम लाल पटेल, राम खिलावन गुप्ता एवं अतिथि व्याख्याता पुष्पराज सिंह, डॉ. रिंकी तिवारी, कु. अल्पना रानी खलखो, शिवानंद साकेत, शिव कुमार आदि उपस्थित रहे अंत में डॉ. नसीमा बेगम अंसारी के द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अतिथियों एवं छात्र छात्रों का आभार व्यक्त किया गया।

जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत-ऐतिहासिक, सामाजिक व आध्यात्मिक विषय पर हुई कार्यशाला

अमृत संदेश । मनेंद्रगढ़

छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में एकदिवसीय कार्यशाला ' जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत-ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक' विषय पर सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रात: 11:30 बजे अतिथि आगमन एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री परमेश्वर सिंह अध्यक्ष जनजातीय गौरव समाज सरगुजा उपस्थित रहे। कार्यशाला की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. श्रावनी चक्रवर्ती ने की। कार्यक्रम के संयोजक श्री भीमसेन भगत तथा सह-संयोजक श्री सुशील कुमार छात्रे रहे। दीप प्रज्वलन के पश्चात राजकीय गीत का सामूहिक गायन किया। मंच का संचालन श्री रंजीतमणी सतनामी द्वारा किया गया। प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती ने संस्था के अध्यक्षीय उदबोधन में जनजातीय समाज के सांस्कृतिक गौरव एवं उनके अमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न जनजातीय क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षपूर्ण इतिहास पर विस्तृत व्याख्यान दिया। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. रश्मि तिवारी ने जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत व्याख्यान दिया। तत्पश्चात कार्यक्रम के सह-संयोजक श्री सुशील कुमार छात्रे ने विभिन्न जनजातियों के सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली अतीत से परिचित कराने की आवश्कता पर विस्तृत व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़कर रंगोली, चित्रकला जैसे प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया। छात्र-छात्राओं के लिए जनजातीय महापुरूषों, क्रांतिकारियों, नेताओं का छायाचित्र के माध्यम से दीवारों पर प्रदर्शनी लगाया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई, डॉ. रश्मि तिवारी, श्री रंजीतमणी सतनामी, श्री शरणजीत कुजूर, श्री सुनील कुमार गुप्ता, श्री कमलेश पटेल, डॉ. रामजी गर्ग, श्री रामनिवास गुप्ता, डॉ. रिंकी तिवारी, सुश्री अल्पना रानी खलखो, श्री पुष्पराज सिंह, श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव, श्री सुनीत जॉनसन बाड़ा, श्री बाबूलाल शुक्ला, श्रीमती मीना त्रिपाठी, श्री भोले प्रसाद रजक, सुश्री पारूल पटेल, श्री रामखेलावन गुप्ता, श्री हेमन्त सिंह, सुश्री साधना बुनकर, श्री सतीश सोनी, श्री पारसनाथ तिग्गा, श्रीमती ममता एवं विद्यार्थी द्वारा बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। महाविद्यालय परिवार द्वारा मुख्य अतिथि को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम के अंत में संयोजक श्री भीमसेन भगत ने सभी अतिथियों, व्याख्यानकर्ताओं, प्रतिभागियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का हृदय से आभार व्यक्त किया।



विवेकानन्द महाविद्यालय में बाल विवाह मुक्त भारत' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन

अमृत संदेश । मनेंद्रगढ़

भारत सरकार, मंत्रालय नई दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण समिति, संचालनालय महिला एवं बाल विकास विभाग रायपुर एवं कार्यालय जिला बाल संरक्षण समिति के तत्वाधान में दिनांक 27.11.2025 से 31.12.2025 तक शैक्षणिक संस्थानों स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालय के माध्यम से जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजन के क्रम में आज शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में प्रभारी प्राचार्य डॉ. रश्मि तिवारी के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में 'बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ एवं बाल विवाह मुक्त भारत' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित ताज मोहम्मद (आउटरिच वर्कर) ने अपने व्याख्यान में बताया कि बाल विवाह मुक्त भारत का संकल्प केवल एक सामाजिक अभियान नही, बल्कि मानवाधिकार, शिक्षा और समान अवसरों की रक्षा का आधार है। बाल विवाह बच्चों के शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक विकास को बाधित करता है और विशेषकर बालिकाओं के भविष्य को सीमित कर देता है। अगले क्रम में बिन्दिया खलखो (संरक्षण अधिकारी) के द्वारा बताया गया कि बाल विवाह के उन्मूलन हेतु कानूनी प्रावधानों के साथ-साथ जनजागरण, शिक्षा का प्रसार, आर्थिक सशक्तिकरण और समुदाय स्तर पर साकारात्मक सामाजिक परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है। कार्यक्रम के अंत में प्रभारी प्राचार्य डॉ. तिवारी द्वारा उपस्थित छात्र-छात्राओं को 'बाल विवाह मुक्त भारत' का शपथ दिलाया। इस दौरान उन्होंने बताया कि बाल विवाह एक सामाजिक बुराई और कानून का उल्लंघन है, जो बालिकाओं की शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और विकास में बाधा है तथा उनके सपनों को साकार होने से रोकता है। उन्होंने यह भी बताया कि जब समाज बाल विवाह को परंपरा नही बल्कि अपराध और अन्याय के रूप में देखेगा तभी हम सचमुच एक सुरक्षित, शिक्षित और जागरूक बाल विवाह मुक्त भारत का निर्माण कर पायेंगे। इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ता रामयज्ञ साहू, पंकज कुमार पैकरा तथा महाविद्यालय के प्राध्यापकगण कमलेश पटेल, श्रीमती अनुपा तिग्गा, सुशील कुमार छात्रे, अतिथि व्याख्यातागण पुष्पराज सिंह, रामनिवास गुप्ता, डॉ. रेनु प्रजापति, डॉ. रामजी गर्ग एवं कार्यालयीन स्टॉफ मनीष कुमार श्रीवास्तव, सुनीत जॉनसन बाड़ा, बी.एल. शुक्ला, श्रीमती मीना त्रिपाठी, मलिक, सतीश सोनी एवं भारी संख्या में छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे।

विवेकानन्द महाविद्यालय में एड्स जागरूकता जिला स्तरीय कार्यशाला सम्पन्न

छ.ग.फ्रंटलाइन

मनेंद्रगढ़ (एमसीबी)। रेड रिबन क्लब शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़, माई भारत कोरिया, जिला युवा अधिकारी, छ.ग. एड्स कंट्रोल सोसाईटी के संयुक्त तत्वावधान में एमसीबी. जिला अग्रणी महाविद्यालय में प्रभारी प्राचार्य डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई, रेड रिबन क्लब प्रभारी के संयोजन में एवं आई.क्यू.ए.सी कोऑडिनेटर डॉ. अरूणिमा दत्ता के सहसंयोजन में तथा डॉ. रिंकी तिवारी, सुश्री अल्पनारानी खलखों, प्रकाशदास मानिकपुरी, के द्वारा टीम सदस्य के रूप में कार्यशाला को सम्पन्न कराने में योगदान दिया। एड्स जागरूकता कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप मे श्री सौरभ निषाद माई भारत कोरिया, जिला युवा अधिकारी एवं श्रीमती निशा सिंह जिला एमसीबी. परामर्शदाता एड्स जागरूकता एवं मनोवैज्ञानिक, काउंसलर के द्वारा एड्स जागरूकता के संबंध में जानकारी देते हुए बताया की एचआईव्ही संक्रमण एवं एड्स



महामारी के संबंध में जानकारी फैलाना, रोकथाम करना, परीक्षण एवं उपचार सेवा तक पहुचना है। लोगो को सुरक्षित रहना तथा नियमित जाँच एवं अधिकारों का सम्मान करने के संबंध में विस्तृत रूप से चर्चा की गई।

एचआईव्ही/एड्स क्या है मानव इम्युनोडेफिशिएंसी वायरस कैसे चिपक जाता है, कैसे नही चिपकता है, इसकी सही जानकारी दी, एचआईव्ही सक्रमित लोगो के साथ सम्मान से पेश आना, उन्हे समाज में समानाधिकार सहित स्वीकार करना, उनके साथ किसी प्रकार का भेद–भाव नही करना, सुरक्षित व्यवहार करना, सुई साझा न करना जोखिम वाले व्यवहार से बचना, प्रारंभिक पहचान के लिए नियमित जांच कराना महत्वपूर्ण है क्योकि इस समय (एआरटी) से व्यक्ति का स्वास्थ्य और स्वस्थ्य जीवन जीया जा सकता है। वारयस संबंधी जानकारी प्रभावी ढ़ग से लोगो तक पहुचाया जा सकता है। इस दिशा में विवेकानन्द महाविद्यालय की रेड रिबन एवं रेड क्रास इकाई सतत् जागरूकता अभियान के माध्यम से लोगो को जागरूक कर रही है। इस कार्यशाला का संचालन डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई के द्वारा किया गया एवं अभार प्रदर्शन डॉ. अरूणिमा दत्ता द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. रश्मि तिवारी, श्रीमती मीना त्रिपाठी, साधना बुनकर सहित 45 युवा छात्र–छात्राएं सम्मिलित हुए। व्यवस्था संबंधित कार्यों में प्रदीप मलिक, सतीश सोनी, ममता का सहयोग सराहनीय रहा है।

सेवा पखवाड़ा के तहत लगा रक्तदान, स्वास्थ्य व जन जागरूकता शिविर

अमृत संदेश । मनेंद्रगढ़

राज्य रजत जंयती समारोह अन्तर्गत सेवा पखवाड़ा में शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में यूथ रेडक्रॉस सोसयटी, रेड रिबन क्लब, राष्ट्रीय सेवा योजना, गृहविज्ञान विभाग, आई्क्यूएससी के संयुक्त तत्वावधान में जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अवनिश खरे के सौजन्य से महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई के संरक्षण में डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई के संयोजन में तथा रंजीतमनी सतनामी एवं डॉ. नसीमा बेगम अंसारी के सह–संयोजन में स्वास्थ्य शिविर एवं रक्तदान शिविर तथा जन–जागरूकता व्याख्यान, रक्त समूह परिक्षण का आयोजन किया गया रक्तदान करने के लिए 63 विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया परन्तु रक्तदान करने के मापदण्डों को 07 छात्राओं ने पूर्ण किया कुछ विद्यार्थी का वजन कम था शेष विद्यार्थी का हिमोग्लोबिन दस प्रतिशत तक ही था। सबीना कूर्रे, तेजवती यादव, सविता चक्रधारी, शालिनी, साक्षी सिंह, तुपुर सोनी, लक्ष्मी यादव, कौशिल्या ने सभी



मापदण्डो को पूरा किया चढ़कर हिस्सा लिया। फलस्वरूप उन्होने रक्तदान किया। महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं का छात्रों ने भी रक्तदान में बढ़– रक्त समूह परीक्षण कराकर संभारण किया गया जिससे आवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थी जरूरतमंद को रक्तदान कर सके। रक्त हिमोग्लोबिन परीक्षण करने पर जिनका हिमोग्लोबिन दस प्रतिशत कम था उन सभी छात्राओं को हिमोग्लोबिन बढ़ाने के लिए फॉलिक एसिड एवं आयरन की गोली चिकित्सा अधिकारियों द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य शिविर अंतर्गत वितरित की गई। स्वास्थ्य परीक्षण एवं रक्तदान शिविर के लिए महाविद्यालय में डॉ. स्नेहा वर्मा, डॉ. अनीसा उपाध्याय, डॉ. मधु चौहान, निकेश गुप्ता, कमाशंकर सिंह, मोहम्मद आफताब, श्री हेमचन्द केवट, सुरेश ने ,जिला–चिकित्सा अधिकारी के आदेश से महाविद्यालय में उपस्थित होकर स्वास्थ्य शिविर एवं रक्तदान शिविर को सफल बनाया। श्री सौमेन्द्र मंडल जिला–एमसीबी. रेडक्रॉस नोडल कार्यक्रम को सफल बनाने में सराहनीय योगदान रहा। महाविद्यालय में आयोजन समिति में पुष्पराज सिंह, डॉ. रिंकी तिवारी, शिवकुमार, शिवानन्द एवं रक्तदान शिविर के लिए कश्यप, अभिषेक कुमार सिंह, मनीष कुमार श्रीवास्तव, सुनित जासन बाड़ा, मीना त्रिपाठी, साधना बुनकर का भी योगदान रहा।

सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का समापन

कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने चलाया जागरूकता अभियान



विवेकानन्द महाविद्यालय में बाल विवाह मुक्त भारत' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन

अमृत संदेश । मनेंद्रगढ़



भारत सरकार, मंत्रालय नई दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण समिति, संचालनालय महिला एवं बाल विकास विभाग रायपुर एवं कार्यालय जिला बाल संरक्षण समिति के तत्वाधान में दिनांक 27.11.2025 से 31.12.2025 तक शैक्षणिक संस्थानों स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालय के माध्यम से जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजन के क्रम में आज शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में प्रभारी प्राचार्य डॉ. रश्मि तिवारी के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में 'बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ एवं बाल विवाह मुक्त भारत' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता (आउटरिच वर्कर) ने अपने व्याख्यान में बताया कि बाल विवाह मुक्त भारत का संकल्प केवल एक सामाजिक अभियान नही, बल्कि मानवाधिकार, शिक्षा और समान अवसरों की रक्षा का आधार है। बाल विवाह बच्चों के शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक विकास को बाधित करता है और विशेषकर बालिकाओं के भविष्य को सीमित कर देता है। आगले क्रम में बिन्दिया खलखो (संरक्षण अधिकारी) के द्वारा बताया गया कि बाल विवाह एक सामाजिक बुराई और कानून का उल्लंघन है, जो बालिकाओं की शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और विकास में बाधा है तथा उनके सपनों को साकार होने से रोकता है। उन्होंने यह भी बताया कि जब समाज बाल विवाह को परंपरा नही बल्कि अपराध और अन्याय के रूप में देखेगा तभी हम सचमुच एक सुरक्षित, शिक्षित और जागरूक बाल विवाह मुक्त भारत का निर्माण कर पायेंगे। इस दौरान जनजागरण, शिक्षा का प्रसार, आर्थिक सशक्तिकरण और समुदाय स्तर पर साकारात्मक सामाजिक परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है। कार्यक्रम के अंत में प्रभारी प्राचार्य डॉ. तिवारी द्वारा उपस्थित छात्र–छात्राओं को 'बाल विवाह मुक्त भारत' का शपथ दिलाया। इस दौरान उन्होंने बताया कि बाल विवाह एक सामाजिक बुराई है, जो बालिकाओं की शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और विकास में बाधा है। खलखो (संरक्षण अधिकारी) के द्वारा बताया गया कि बाल विवाह के दुष्परिणाम के बारे में उपस्थित छात्र–छात्राओं को जानकारी दी गई। कार्यक्रम के अंत में प्रभारी प्राचार्य डॉ. तिवारी द्वारा उपस्थित छात्र–छात्राओं को शपथ दिलाया। इस दौरान उन्होंने बताया कि बाल विवाह बच्चों के शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक विकास को बाधित करता है और विशेषकर बालिकाओं के भविष्य को सीमित कर देता है। आगले क्रम में बिन्दिया खलखो (संरक्षण अधिकारी) के द्वारा बताया गया कि बाल विवाह के दुष्परिणाम के बारे में बताया गया। साथ ही आँगनबाड़ी योजनाओं को विस्तार से बताया। एड्स जागरूकता के बारे में सम्बोधन देते हुए कहा की एड्स एक घातक रोग है जो मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को नष्ट कर देता है। एड्स का कारण एच. आई. वी वायरस है अतः सादैव सुरक्षित एवं स्वस्थ्य जीवन शैली अपनाएं, बचाव ही आहार पोषण के बारे में अपने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा है कि तिरंगा आहार नियमित रूप से से जिसमे समस्त प्रकार की हरे रंग की सब्जियां, सफेद रंग के खाद्य पदार्थ जिसमे चावल, दूध, दही आदि का सेवन करें ओरेंज रंग की फल एवं सब्जियां दालों का उपयोग करें तो आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। विभागाध्यक्ष प्रागीशरत्न डॉ. अरूणिमा दत्ता विस्तार पूर्वक एड्स के संक्रमण बचाव के बारे में बताया गया। आहार एवं पोषणके बारे में अपने विचार विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किए इस अवसर पर विभागाध्यक्ष गृहविज्ञान डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई द्वारा विषयानर्गत बालिकाओं सम्बोधित करते हुए कहा की सभी व्यक्तियों का जीवन आहार पर आधारित है जैसा खायें अन्न वैसा बने मन यहा क्यापत हमारे जीवन की सच्चाई को दर्शाती है सही एवं संतुलित आहार जीवन के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास की नींव है। अतः हमें फास्ट फूड एवं जंक फूड की और आकर्षित नही होना चाहिए घर का बना ताजा एवं पौष्टिक भोजन ही करना चाहिए हरी सब्जी एवं मौसमी फलों का सेवन अवश्य करना चाहिए। अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती द्वारा विद्यार्थियों से अनुशासित जीवन शैली अपनाते हुए प्रातः जल्दी उठने एवं रात्रि जल्दी सोने की दिनचर्या अपनाने के लिए आग्रह किया।



पत्रिका 14
कोरिया, बुधवार, 25 दिसम्बर 2024

ब्रीफ न्यूज

कॉलेज में राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया

पीपीटी प्रेजेंटेशन में छात्रों और प्राध्यापकों ने लिया हिस्सा

मनेंद्रगढ़ @पत्रिका. शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय में भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती को राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया गया। प्राचार्य डॉ आवणी चक्रवर्ती के मार्गदर्शन में दो दिवसीय आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ आराधना शर्मा बिलासा गर्ल्स स्वशासी महाविद्यालय बिलासपुर ने गणित का इतिहास विषय पर वर्चुअल व्याख्यान दिया। साथ ही स्पीच और पीपीटी प्रेजेंटेशन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शिक्षा की छात्राओं ने भी भाग लिया। द्वितीय दिवस मुख्य वक्ता डॉ प्रवीण साहू शासकीय श्याम प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर सरगुजा ने व्याख्यान दिया। वे अपने विषय मैथेमेटिक्स फ्रॉम वेदास फॉर एवरीडे ऑफलाइफ से पोस्टर, मॉडल और मेंटल मैथ, क्विज प्रतियोगिताओं में छात्रों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। निर्णायक उज्ज्वल विशाल शासकीय नवीन महाविद्यालय नागपुर, अर्चना द्विवेदी रामानुज प्रताप सिंह देव पीजी महाविद्यालय बैकुंठपुर, कमलेश सिंह नवीन शासकीय कन्या महाविद्यालय एमसीबी, दिलेश्वर प्रसाद बड़ा व्याख्याता गणित, कमलेश पटेल शामिल रहे। मैथ विषय पर संगोष्ठी भी हुई। वहीं चर्चा के दौरान भारत में मैथ के जनक रहे रामानुजन के योगदान को भी याद किया गया। कार्यक्रम में विजेताओं को प्रमाण पत्र, मोमेंटो दिया गया। इस दौरान गणित विभागाध्यक्ष रंजीतमणि, डॉ रश्मि तिवारी, प्रभा राज, डॉ अरुणिमा दत्ता, भीमसेन भगत, डॉ नसीमा बेगम अंसारी, सुनील गुप्ता, अल्पना खलखो, शिवानंद साकेत, धानेन्द्र कश्यप, अभिषेक सिंह सहित अन्य मौजूद थे।

एक पेड़ मां के नाम अभियान

विवेकानन्द कॉलेज में पौधरोपण, सुरक्षित रखने लिया गया संकल्प



मनेंद्रगढ़ @ पत्रिका. एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत विवेकानन्द महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ एवं कन्या छात्रावास में पौधारोपण किया गया।

ईको क्लब, रेडरीबन क्लब, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रेडक्रॉस के संयुक्त तत्वाधान में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ श्रावणी चक्रवर्ती की अगुवाई में कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि नपाध्यक्ष प्रतिमा यादव ने पौधारोपण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकृति को संतुलित बनाए रखने के लिए केवल पेड़ लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि देखभाल और संरक्षण करना भी हम सब का नैतिक दायित्व है। उन्होंने सभी वर्गों के लोगों से पर्यावरण संरक्षण में सहभागीदारी की बात कही। विशिष्ट अतिथि उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र पटवा, विधायक प्रतिनिधि सरजू यादव ने कहा कि यह अभियान केवल एक दिन का नहीं, बल्कि सतत प्रक्रिया है। जिसे सभी को अपनाना चाहिए। हरियाली को जीवन का हिस्सा बनाने का संदेश भी दिया। पौधों की सुरक्षा और देखभाल की जिम्मेदारी स्वयं लेने का भी संकल्प दोहराया। इस अवसर पर छायादार, फलदार तथा औषधि महत्व के पौधों का रोपण किया गया। अभियान के तहत 500 पौधे लगवाने एवं जीवित रखने का संकल्प लिया गया। मुख्य आतिथ्य ने हाईस्कूल नई लेदरी में पौधारोपण करायत्वा और पौधों की सुरक्षा का दायित्व प्राचार्य कालीराम ओझास्तव के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को सौंपा गया। इस अवसर पर डॉ सरोजबाला श्याम विश्नोई, डॉ नसीमा बेगम अंसारी, अनुप तिग्गा, डॉ अमूल्यचंद झा, संतोष गुप्ता, नेहा सिंह, डॉ रश्मि तिवारी, डॉ सुशील तिवारी, डॉ प्रभा राज, डॉ रामकिंकर पाण्डेय, शरणजीत कुजूर, भीमसेन भगत, सुनील गुप्ता, कमलेश पटेल, सुशील छत्रे, डॉ वर्षा तिवारी, डॉ रामजी गर्ग सहित अन्य मौजूद थे।

एड्स जागरूकता एवं पोषण जागरूकता आयोजन

रेडरिबन क्लब एवं गृहविज्ञान विभाग एवं आई.क्यू.ए.सी के द्वारा आयोजित

सम्यक क्रांति न्यूज

एमसीबी/ राज्य रजत जंयती समारोह अन्तर्गत सेवा पखवाड़ा में राष्ट्रीय पोषण माह अन्तर्गत शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में गृहविज्ञान विभाग यूथ रेडक्रॉस सोसयटी, रेड रिबन क्लब, राष्ट्रीय सेवा योजना, आई.क्यू.ए.सी. के संयुक्त तत्वाधान में बेटी बचाओ बेटी पढाओ विषयानर्गत, एड्स की रोकथाम एवं एड्स जागरूकता व्याख्यान राष्ट्रीय पोषण माह के अनर्गत जीवन शैली शिक्षण एवं आहार एवं पोषण विषय पर विस्तृत व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ स्वागी विवेकानन्द की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर, राज्य गीत के साथ किया गया। अतिथियों का स्वागत पौधा देकर एवं बैच लगाकर किया गया। व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी राजकुमार खाती द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के,



बालिकाओं के लिए संचालित योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया, साथ ही आँगनबाड़ी योजनाओं को विस्तार से बताया। एड्स जागरूकता के बारे में सम्बोधन देते हुए कहा की एड्स एक घातक रोग है जो मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को नष्ट कर देता है। एड्स का कारण एच. आई. वी वायरस है अतः सादैव सुरक्षित एवं स्वस्थ्य जीवन शैली अपनाएं, बचाव ही आहार पोषण के बारे में अपने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा है कि तिरंगा आहार नियमित रूप से से जिसमे समस्त प्रकार की हरे रंग की सब्जियां, सफेद रंग के खाद्य पदार्थ जिसमे चावल, दूध, दही आदि का सेवन करें ओरेंज रंग की फल एवं सब्जियां दालों का उपयोग करें तो आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। विभागाध्यक्ष प्रागीशरत्न डॉ. अरूणिमा दत्ता विस्तार पूर्वक एड्स के संक्रमण बचाव के बारे में बताया गया। आहार एवं पोषणके बारे में अपने विचार विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किए इस अवसर पर विभागाध्यक्ष गृहविज्ञान डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई द्वारा विषयानर्गत बालिकाओं सम्बोधित करते हुए कहा की सभी व्यक्तियों का जीवन आहार पर आधारित है जैसा खायें अन्न वैसा बने मन यहा क्यापत हमारे जीवन की सच्चाई को दर्शाती है सही एवं संतुलित आहार जीवन के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास की नींव है। अतः हमें फास्ट फूड एवं जंक फूड की और आकर्षित नही होना चाहिए घर का बना ताजा एवं पौष्टिक भोजन ही करना चाहिए हरी सब्जी एवं मौसमी फलों का सेवन अवश्य करना चाहिए। अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रावनी चक्रवर्ती द्वारा विद्यार्थियों से अनुशासित जीवन शैली अपनाते हुए प्रातः जल्दी उठने एवं रात्रि जल्दी सोने की दिनचर्या अपनाने के लिए आग्रह किया।

विवेकानंद महाविद्यालय में हिन्दी दिवस पर व्याख्यानमाला का आयोजन





सम्यक् क्रांति न्यूज

एमसीबी/ शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ में हिन्दी दिवस के अवसर पर 'हिन्दी भाषा: संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का सेतु विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. श्रावनी चक्रवर्ती के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में हिन्दी विभाग द्वारा सम्पन्न हुआ। इस व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता डॉ. रामकिंकर पाण्डेय, प्राचार्य नवीन शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जिला एमसीबी रहे। उन्होंने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि हिन्दी केवल राष्ट्रभाषा ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का मजबूत आधार है। हिन्दी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह स्वाभाविक रूप से फैलती है, इसे किसी कृत्रिम प्रचार की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि हिन्दी फिल्मों के कलाकार हिन्दी फिल्मों से अपार धन और ख्याति अर्जित करते हैं, लेकिन कैमरे के बाहर वे हिन्दी बोलते शायद ही दिखते हैं। ऐसे में यह कहना कि फिल्मों ने हिन्दी को लोकप्रिय बनाया है, उचित नहीं होगा। वास्तव में हिन्दी भाषा ने ही फिल्मों को विस्तारित कर उन्हें वैश्विक लोकप्रियता दिलाई है। प्राचार्य प्रो. श्रावनी चक्रवर्ती ने अपने संबोधन में मातृभाषा के प्रति निष्ठा और प्रेम को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा, हिन्दी की व्यापकता और सर्वशाहकता इसे सर्वसुलभ बनाती है। हिन्दी ने न केवल भारतीय भाषाओं से, बल्कि दुनिया की कई भाषाओं से अपने को समृद्ध किया है। भावों की सहज अभिव्यक्ति हिन्दी में जितनी सरलता से संभव है, उतनी शायद किसी और भाषा में नहीं। उन्होंने यह भी साझा किया कि अंग्रेजी की प्राध्यापिका होने के बावजूद उन्होंने अपनी रचनात्मकता हिन्दी में ही अधिक सहज पाई। डॉ. सरोज बाला श्याम विश्नोई विभागाध्यक्ष गृह विज्ञान ने हिन्दी की शुद्ध वर्तनी पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा की शुद्धता उसके लेखन और उच्चारण में ही परिलक्षित होती है। यदि हम हिन्दी के शब्दों की वर्तनी को सही रूप में नहीं लिखते, तो भाषा की मूल सुंदरता और उसकी गरिमा प्रभावित होती है। नियमित अभ्यास और व्याकरण का ज्ञान ही इसकी सही साधना है। विद्यार्थी यदि प्रतिदिन थोड़ी–सी लिखने–पढ़ने की आदत डाल लें, तो न केवल उनकी अभिव्यक्ति सशक्त होगी बल्कि हिन्दी के प्रति उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। डॉ. रश्मि तिवारी विभागाध्यक्ष संगीत ने हिन्दी को भारतीय ज्ञान–परंपरा एवं संस्कृति की वाहिका बताया।

रायपुर, शुक्रवार 12 सितंबर 2025
www.dailypioneer.com
पायनियर

शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रजत जयंती के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

छत्तीसगढ़ संवाददाता ◀ मनेन्द्रगढ़
www.dailypioneer.com

राज्य स्तरीय संगोष्ठियों का आयोजन, क्रीड़ा प्रतियोगिता, व्याख्यान प्रतियोगिता एवं रक्त विभिन्नता, राजत जयंती तीन दिवसीय पुस्तक मेला, रंगोत्सव मेला का आयोजन, पोस्टर प्रतियोगिता, रैली तथा जनजागरूकता कार्यक्रम, नुक्कड़–नाटक, नशा उन्मूलन, पोषण एवं अक्षत पर आयोजित, हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन तथा भूतपूर्व छात्र विलय समारोह का आयोजन किया गया। शासकीय विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ में सात दिवसीय छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के गौरवमयी 25 वर्ष पूर्ण होने पर राज्य पर्यन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में एवं वर्ष 2047 तक छत्तीसगढ़ राज्य को विकसित राज्य बनाने के दृष्टि से शासन के निर्देशानुसार कार्यक्रमों का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. सरोजबाला श्याम चक्रवर्ती के मार्गदर्शन एवं डॉ. सरोजबाला श्याम विश्नोई के संयोजन में हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्रा जया शर्मा को फर्स्ट, तृतीय वर्ष से प्रथम स्थान, सायली जी एवसरी, तृतीय सेमेस्टर से द्वितीय स्थान एवं पारिस अहमद एम.ए. प्रथम सेमेस्टर, पंढरना तिलारी एम.एससी.



जी ए. तृतीय सेमेस्टर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं ने छत्तीसगढ़ राज्य की 25 वर्षों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा 2047 तक विकसित छत्तीसगढ़ की कल्पना पर अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही छात्र–छात्राओं ने निबंध, स्लोगन, कविता, उद्धरण पुस्तकों का प्रदर्शन किया। महाविद्यालय के प्रति प्रेम भावना बढ़ाने के लिए महाविद्यालय में भव्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। मेले में विभिन्न प्रकाशकों एवं संस्थाओं ने अपनी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। महाविद्यालय के पूर्व छात्रावास विलय समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें 70 से अधिक पूर्व छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छत्तीसगढ़ महाराज्य ज्ञान से संबंधित प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। प्रथम सेमेस्टर ने प्रथम स्थान, अनुपु कुमार सिंह एम.एससी. रसायनशास्त्रशास्त्र तृतीय सेमेस्टर से द्वितीय स्थान एवं पारिस अहमद एम.ए. प्रथम सेमेस्टर, पंढरना तिलारी एम.एससी. रसायनशास्त्रशास्त्र तृतीय सेमेस्टर, सायली गुप्ता एम.एससी. रसायनशास्त्रशास्त्र प्रथम सेमेस्टर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र–छात्राओं में पुस्तकों के प्रति प्रेम भावना बढ़ाने के लिए महाविद्यालय में भव्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। मेले में विभिन्न प्रकाशकों एवं संस्थाओं ने अपनी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। महाविद्यालय के पूर्व छात्रावास विलय समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें 70 से अधिक पूर्व छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छत्तीसगढ़ महाराज्य ज्ञान से संबंधित प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। प्रथम सेमेस्टर ने प्रथम स्थान, अनुपु कुमार सिंह